मूल्य . पौने दो रुपये (१७५ नये पैसे)
प्रथम संस्करण : जुलाई १९५७
आवरण : नरेन्द्र श्रीवास्तव
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

शेक्सपियर विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० मे स्ट्रैटफोर्ड-आन्-ऐवोन नामक स्थान मे हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय मे बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नही किया। १५८२ ई० मे शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बड़ी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नही था। महारानी ऐलिजाबेथ के शासनकाल मे १५८७ ई० मे शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक कम्पनियो मे काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्रायः समकालीन यह कवि यही आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनो कमाये। १६१२ ई० मे उसने लिखना छोड़ दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान मे बिताया। १६१६ ई० मे उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओ को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य मे अपना सानी सहज ही नही पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्रायः हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे है, कविताएँ अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं—जूलियस सीजर, ऑथेलो, मैकबैथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दु खान्त), ग्रीष्म-मध्यरात्रि का स्वप्न, वेनिस का सौदागर, बारहवी रात, तिल का ताड (मच एडू अबाउट नथिंग), शीतकाल की कथा, तूफान (सुखान्त)। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक है तथा प्रहसन भी है। प्राय. उसके सभी नाटक प्रसिद्ध हैं।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओ को बडे ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है। उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते है। जिस भाषा मे शेक्सपियर के नाटको का अनुवाद नही है वह भाषाओ मे कभी नही गिनी जा सकती।

# भूमिका

जूलियस सीजर एक दुखांत नाटक है। शेक्सपियर ने इसे अपने साहित्यिक जीवन के तीसरे काल सन् १६०१ से १६०४ ई० के बीच लिखा था जबकि उसमे निराशा, वेदना और तिक्तता अधिक मिलती है।

कथा का स्रोत सर टॉमस नार्थ द्वारा अनूदित 'प्लूटार्क की सीजर, ब्रूटस तथा ऐन्टोनी की जीवनियाँ' नामक पुस्तक से लिया गया है। प्लूटार्क ईसवी पहली शती का यूनानी लेखक था। उसने अनेक प्रसिद्ध ग्रीस तथा रोम निवासियो के जीवन-चरित्र लिखे थे। सर टॉमस ने प्लूटार्क की ग्रीक भाषा की रचना के एक फ्रेंच अनुवाद से अनुवाद किया था। फ्रेंच अनुवादक का नाम जेक्विस अमयोत् था। वह ऑक्जियर का पादरी था। इसी स्रोत से कथाएं लेकर शेक्सपियर ने अपने तीन नाटक लिखे है—जूलियस सीजर, ऐन्टोनी एण्ड क्लियोपेट्रा तथा कोरियोलेनस। १५७८ ई० मे अनूदित 'गृहयुद्ध' नाटक एपियन के इतिहास से भी जूलियस सीजर में मदद ली गई है। कुछ लोगों का मत है शेक्सपियर से पूर्व स्टर्लिंग ने अंगरेजी मे जूलियस सीजर कथानक पर नाटक लिखा था।

जूलियस मे मध्यकालीन विश्वासों के अनुकूल भूत-प्रेतो मे भी विश्वास प्राप्त होता है। शेक्सपियर मे भूत तो अन्यत्र भी आते है।

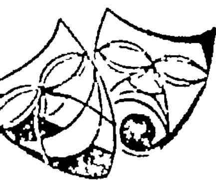
मूलतः यह एक राजनैतिक नाटक है, जिसमे स्त्रीपात्रियो का विशेष महत्त्व नहीं है। किंतु फिर भी यह अपने बहुपात्रो

को लेकर भी एक आकर्षक नाटक है। इसमे राज्य, प्रजा और स्वतन्त्रता के प्रश्न पर गहरा विवेचन किया गया है। राजनीति मे भी व्यक्तिविशेष का महत्त्व दिखाने मे शेक्सपियर ने कमाल किया है।

ब्रूटस का खलनायकत्व ऐसी कुशलता से चित्रित है कि उसे देखकर घृणा नही होती, किंतु वेदना से हमारा हृदय व्याकुल हो उठता है। सीज़र तो बीच मे ही मर जाता है, किंतु लेखक ने अंत तक ऐसा चित्रण किया है कि मरने पर भी वही हमारी आँखो के सामने रहता है और इस प्रकार नायक की अनुपस्थिति मे भी नायक अनुपस्थित-सा नही दिखाई देता। यह इस नाटक की विचित्र सफलता है।

जूलियस सीज़र मनुष्यो के स्वार्थो और आवेशो का ही नही, न्याय और सापेक्षसत्यो का एक अत्यन्त आकर्षक प्रदर्शन है।

—रांगेय राघव



# पात्र-परिचय

| | |
|---|---|
| जूलियस सीज़र | |
| ऑक्टेवियस सीज़र<br>मार्क्स ऐन्टोनियस<br>एम० एमीमलियस लैपीडस | सीज़र की मृत्यु के उपरान्त शक्ति ग्रहण करने वाले त्रिनायक |
| सिसरो<br>पब्लियस<br>पोपीलियस लेना | सिनेट के सदस्य |
| मार्क्स ब्रूटस<br>कैशस<br>कास्का<br>ट्रैबोनियस<br>लिगारियस<br>डेसियस ब्रूटस<br>मैटेलस सिम्बर<br>सिन्ना | जूलियस सीज़र के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने वाले |
| फ्लेवियस<br>मेरुलस | न्यायकर्ता |
| क्नीडस का आर्टिमीडोरस | काव्यशास्त्र का अध्यापक |
| सिन्ना | : दूसरा : एक कवि |

| | |
|---|---|
| लूसिलियस<br>टिटीनियस<br>मेसाला<br>तरुण केटो<br>वोल्मनियस<br>भविष्यवक्ता | ब्रूटस तथा कैशस के मित्र |
| वारो<br>क्लीटस<br>क्लॉडियस<br>स्ट्रेटो<br>लूशियस<br>डार्डेनियस | ब्रूटस के सेवक |
| पिन्डारस | कैशस का सेवक |
| कैल्पूर्निया | सीजर की पत्नी |
| पोर्शिया | ब्रूटस की पत्नी |

[सिनेट के सदस्य, नागरिक, रक्षक, सेवक इत्यादि ।]

# पहला अंक

## दृश्य १

[रोम की एक गली]

[फ्लेवियस, मेरुलस तथा कुछ साधारण* लोगो का प्रवेश]

फ्लेवियस : चले जाओ ! काहिलो ! अपने-अपने घर जाओ । आज क्या कोई आम छुट्टी का दिन है कि तुम त्यौहार का-सा आनद मना रहे हो ? क्या तुम यह नही जानते कि काम के दिन तुम जैसे कारीगरो को अपने पेशे के औजारो के बिना राहो पर नही घूमना चाहिये ? (एक से) ऐ, बोलो ! तुम क्या काम करते हो ?

एक साधारण : श्रीमान् प्रसन्न हो, मैं बढई हूँ ।

मेरुलस : बढई हो ! बताओ तब तुम्हारा चमडे का लबादा और पैमाना कहां है ? आज तुम अपने अच्छे से अच्छे कपडे क्यों पहने हुए हो ? (दूसरे से) ऐ तू बता ! तू क्या करता है ?

दूसरा साधारण : झूठ क्यो बोलूँ श्रीमान्, मैं अच्छे कारीगर के सामने, एक मामूली अदना चमार ही हूँ ।

मेरुलस : अरे करता क्या है वह सीधे-सीधे नही बताता ! इधर-उधर की बातें क्यो मारता है ? जल्दी बोल ।

दूसरा साधारण : श्रीमान् असली बात बताता हूँ । मै तलों की मरम्मत किया करता हूँ । मुझे अपने पेशे में कोई बुराई दिखाई नही देती ।

---

* रोम में दो तरह के लोग होते थे—एक नागरिक दूसरे साधारण प्रजा के लोग ।

**मेरुलस :** क्या कहा वदज़ुबान ! क्या पेशा बताया ? साफ-साफ क्यो नही बताता ?

**दूसरा साधारण** . श्रीमान् मुझ पर गुस्सा न हो । अगर आप नाराज होगे तब भी मैं आपकी मरम्मत करके ठीक कर दूँगा ।

**मेरुलस :** क्या कहा ? इतनी हिम्मत ! आ मुझे ठीक कर ।

**दूसरा साधारण :** आपको नही श्रीमान् ! मेरा तो मतलब आपकी जूतियो से था ।

**फ्लेवियस :** अच्छा । तब तुम मोची हो ?

**दूसरा साधारण :** हाँ श्रीमान् ! मेरी रोज़ी तो सुतारी से ही चलती है । न मैं किसी व्यापारी के मामले मे पडता हूँ, न मुझे किसी औरत से ही काम पडता है, मेरी तो बस सुतारी है । झूँठ क्यो बोलूँ श्रीमान् ! मैं तो जूतो की चीर-फाड़ करता हूँ । उन्ही का इलाजी हूँ । जब वे खतरे मे पड जाते है तब मैं उनका इलाज करता हूँ । जो भले आदमी चमचमाते जूते पहन कर निकलते हैं उनके पाँवो को घेर कर मेरी ही कारीगरी चलती है ।

**फ्लेवियस** फिर तुम अपनी दूकान पर नज़र क्यो नही आते ? तुम सडक पर इन लोगो के नेता बन कर क्यो घूम रहे हो ?

**दूसरा साधारण :** झूँठ क्यो बोलूँ श्रीमान् ! मेरी मशा है कि इनके चल-चलकर जूते फट जाये और मुझे और धधा मिले । पर सचाई यह है कि हम सब सीज़र को देखने के लिये, उनकी जीत पर आनद मनाने के लिये आज त्यौहार मना रहे हैं ।

**मेरुलस :** किसके लिये आनद ? वह कौन-सी विजय प्राप्त करके घर लौट रहा है ? अपने रथ के पहियो मे बाँध कर वह कौन-से बदियो को ला रहा है ? अरे बेवकूफो ! तुम जड़ हो ! तुम

**मेरुलस :** क्या कहा बदज़ुबान ! क्या पेशा बताया ? साफ-साफ क्यो नही बताता ?

**दूसरा साधारण** श्रीमान् मुझ पर गुस्सा न हो । अगर आप नाराज होगे तब भी मैं आपकी मरम्मत करके ठीक कर दूँगा ।

**मेरुलस :** क्या कहा ? इतनी हिम्मत ! आ मुझे ठीक कर ।

**दूसरा साधारण :** आपको नही श्रीमान् ! मेरा तो मतलब आपकी जूतियो से था ।

**फ्लेवियस :** अच्छा । तब तुम मोची हो ?

**दूसरा साधारण :** हाँ श्रीमान् ! मेरी रोजी तो सुतारी से ही चलती है । न मैं किसी व्यापारी के मामले मे पडता हूँ, न मुझे किसी औरत से ही काम पडता है, मेरी तो बस सुतारी है । झूँठ क्यो बोलूँ श्रीमान् ! मैं तो जूतो की चीर-फाड करता हूँ । उन्ही का इलाजी हूँ । जब वे खतरे मे पड जाते है तब मैं उनका इलाज करता हूँ । जो भले आदमी चमचमाते जूते पहन कर निकलते हैं उनके पाँवो को घेर कर मेरी ही कारीगरी चलती है ।

**फ्लेवियस** फिर तुम अपनी दूकान पर नज़र क्यो नही आते ? तुम सडक पर इन लोगो के नेता बन कर क्यो घूम रहे हो ?

**दूसरा साधारण :** झूँठ क्यो बोलूँ श्रीमान् ! मेरी मशा है कि इनके चल-चलकर जूते फट जायें और मुझे और धधा मिले । पर सचाई यह है कि हम सब सीज़र को देखने के लिये, उनकी जीत पर आनद मनाने के लिये आज त्यौहार मना रहे हैं ।

**मेरुलस :** किसके लिये आनद ? वह कौन-सी विजय प्राप्त करके घर लौट रहा है ? अपने रथ के पहियो मे बांध कर वह कौन-से बदियो को ला रहा है ? अरे बेवकूफो ! तुम जड हो ! तुम

पत्थर से भी गये-बीते हो ! महानगर रोम के कठोर हृदय क्रूर निवासियो ! पोम्पी की याद है ? कितनी वार तुम दीवालो, मकानो, मीनारो और चिमनियों पर चढकर अपने बच्चों को गोदियो मे लेकर रोम की सड़को से महान् पोम्पी को निकलते देखने के लिये धैर्य्य और आशा को हृदय में धारण कर खड़े नही रहे हो ? सारे-सारे दिन तुमने उसकी प्रतीक्षा की थी ! और जब तुमने उसका रथ देखा तब क्या तुमने तुमुल जयध्वनि नही की ? तुम्हारे जय-निनाद से टाइबर नदी की लहरे थर्राती थी और प्रतिध्वनि उसके गहरे कगारो मे बजा करती थी। और आज तुम अच्छे कपडे पहन कर निकले हो ? आज तुम छुट्टी मना रहे हो ? और आज तुम उसी के पथ में फूल बिछाने को आतुर हो रहे जो पोम्पी के पुत्रो को पराजित करके आ रहा है ! चले जाओ ! भाग कर घर जाओ और घुटनो पर गिर कर देवताओ से अपने अपराध के लिये क्षमा याचना करो ताकि तुम्हारी कृतघ्नता का अवश्यम्भावी दण्ड कम से कम कुछ समय को टल जाये ।

फ्लेवियस : मेरे अच्छे दोस्तो ! जाओ ! तुम सब जाओ और अपने जैसे सब आदमियो को टाइबर नदी के तीर पर निमन्त्रित करो और वहां इस पाप के प्रायश्चित्त के लिये इतने आंसू बहाओ, इतने आंसू बहाओ कि नदी की धारा उमड़ कर किनारों को डुबा दे ।

[सब लोगो का प्रस्थान]

देखो ! उनकी निम्न प्रवृत्ति कितनी प्रभावित हुई ? सब चुपचाप चले गये ! उन पर अपराध की भावना छा गई ! तुम उस रास्ते से राजधानी को जाओ और मैं इधर से जाता हूँ ।

अगर कही तुम्हे सीज़र की मूर्त्तियो पर सजावट दिखाई दे तो उस सबको हटवाते जाना।

**मेरुलस :** क्या ऐसा करना हमारे लिये उचित होगा ? जानते हो न कि आज वैसे लुपरिकल का उत्सव भी है ?

**फ्लेवियस :** होने भी दो ! सीजर की मूर्त्तियो पर कही भी विजय-चिह्न बाकी नही रहने पावें ! मैं राहो से लोगो को हटाऊँगा और यदि तुम्हे कही भीड मिले तो तुम भी उसे बिखरा देना ! सीजर के पखो मे से यह उगते हुए पर अगर नुचते रहेंगे तभी ठीक रहेगा, वर्ना वह आकाश मे इतना ऊँचा उठ जायगा, इतनी ऊँचाई पर उडेगा कि मनुष्य के दृष्टि-पथ से ओझल हो जायेगा और हमें सदा दासत्व के आतक से ग्रस्त रहना पड़ेगा।

[प्रस्थान]

## दृश्य २

[एक सार्वजनिक स्थान]

[तूर्यनाद। सीजर और ऐन्टोनी (ऐन्टोनियस) का प्रवेश। दौड़ होने वाली है। कैल्पूर्निया, पोर्शिया, डेसियस, ब्रूटस, कैशस और कास्का तथा एक भीड का प्रवेश। भीड में एक भविष्यवक्ता भी है।]

**सीज़र :** कैल्पूर्निया !

**कास्का :** शान्ति ! शान्ति ! सीज़र बोलते हैं।

[सगीत रुकता है।]

**सीज़र** कैल्पूर्निया !

**कैल्पूर्निया :** आज्ञा स्वामी !

**सीज़र :** जब ऐन्टोनियस दौड़ने को हो तो तुम उसके रास्ते मे खडी हो जाना ! ऐन्टोनियस !

**भविष्यवक्ता** : १५ मार्च को सावधान रहना।

**सीज़र** : वह तो एक स्वप्नदर्शी है जिसे जाने क्या धुन लगी है। चलो ! उस पर ध्यान देना व्यर्थ है।

[तूर्य्यनाद। ब्रूटस और कैशस के अतिरिक्त सबका प्रस्थान]

**कैशस** : क्या आप भी लुपरिकल की दौड देखने जा रहे हो ?

**ब्रूटस** : नही, मैं नही जा रहा।

**कैशस** : चलिये न ? मैं विनती करता हूँ।

**ब्रूटस** : मुझे खेलो मे रुचि नही है। ऐन्टोनियस की स्फूर्ति और चपलता का मुझमे अभाव है। मैं तुम्हारे रास्ते मे बाधा नही डालूंगा कैशस ! तुम जाओ, मैं चला जाऊँगा।

**कैशस** : ब्रूटस ! मैं बहुत दिनो से देख रहा हूँ कि अब तुम्हारी आँखो मे मेरे लिये वह प्रेम, वह स्नेह नही है, जैसा कि पहले था। तुम अपने उस मित्र से भी ऐसी रुक्षता से मिलते हो, ऐसे अजनबी-से मिलते हो, जोकि तुमसे इतना प्रेम करता आया है ?

**ब्रूटस** : मुझे गलत न समझो कैशस ! यदि मेरा व्यवहार कुछ बदल गया है तो अपनी ही चिंताओ के कारण जोकि केवल मुझ तक ही सीमित हैं। कुछ समय से भावो का सघर्ष मेरे हृदय को मथ रहा है जो मैं किसी को बताना नही चाहता। हो सकता है उसी के कारण मेरे व्यवहार मे परिवर्तन आ गया हो ! लेकिन इसलिये मेरे मित्रो को तो मुझसे उदासीन नही रहना चाहिये। और कैशस ! मेरे मित्रो मे तुम सबसे पहले हो जो मेरे इतने निकट हो ! यदि मैं इस समय मित्रो के प्रति उदासीन-सा दिखता हूँ, तब भी उन्हे सोचना चाहिये कि ब्रूटस अपने ही भावो के द्वंद्व मे उलझ कर मित्रो से अपने स्नेह को व्यक्त करना तक भूल गया है।

कैशस : तब तो मैंने तुम्हारे भावों को समझने में भूल की है और इसी कारण से मैंने अपने वे विचार भी तुम्हारे सामने प्रगट नहीं किये जो वास्तव में बड़े ही महत्त्वपूर्ण, गभीर और लाभदायक हैं। बताओ ब्रूटस ! क्या तुम अपने आपको देख सकते हो ?

ब्रूटस : नहीं कैशस ! आँख अपने आपको तब तक नहीं देख पाती जब तक वह अन्यत्र कोई प्रतिबिंब न देखे !

कैशस : यही बात है। तुम्हारे लिये यह सबसे बडी वेदना है कि तुम्हारी आँख को ऐसा दर्पण नहीं मिला जिसमें तुम अपना बिंब देख सकते, जिसमें तुम अपनी आँखों में छिपी योग्यता को पहचान पाते। उसके बिना तुम्हें अपने महत्त्व का अनुमान ही कैसे हो सकता है ? देवताओं के समान महान सीजर के अतिरिक्त मैंने रोम के सभी पुरुषों को यह कहते सुना है कि इस कठोर और यातनामय युग में यदि ब्रूटस अपनी योग्यता को स्वयं देख पाता तो कितना अच्छा होता ?

ब्रूटस : कैशस ! तुम मुझे किन खतरों में ले जाना चाहते हो, क्योंकि तुम मुझमें वे बातें भी मुझसे ढूँढ लेने को कहते हो जो कि वास्तव में मुझमें हैं ही नहीं ?

कैशस : भद्र ब्रूटस ! तो सुनने के लिये तत्पर हो जाओ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम अपने बिंब को स्वयं ठीक से नहीं देख पाते, मैं ही तुम्हारे लिये दर्पण बनता हूँ ताकि तुम्हारे उन गुणों को प्रगट कर सकूँ जिन्हें स्वयं तुम भी नहीं जानते। किन्तु मेरे प्रिय सज्जन ब्रूटस ! मुझसे तुम ईर्ष्या मत कर उठना। यदि मैं साधारण लोगों के साथ हँस-बोल लेता होऊँ, थोड़ी जान-पहचान पर ही कसम खाकर प्रेम दिखाने लगता होऊँ, यदि मैं सामने

**भविष्यवक्ता :** १५ मार्च को सावधान रहना ।

**सीज़र :** वह तो एक स्वप्नदर्शी है जिसे जाने क्या धुन लगी है । चलो ! उस पर ध्यान देना व्यर्थ है ।

[तूर्य्यनाद । ब्रूटस और कैशस के अतिरिक्त सबका प्रस्थान]

**कैशस** क्या आप भी लुपरिकल की दौड देखने जा रहे हो ?

**ब्रूटस** नही, मै नही जा रहा ।

**कैशस :** चलिये न ? मैं विनती करता हूँ ।

**ब्रूटस :** मुझे खेलो में रुचि नही है । ऐन्टोनियस की स्फूर्ति और चपलता का मुझमे अभाव है । मैं तुम्हारे रास्ते मे बाधा नही डालूंगा कैशस ! तुम जाओ, मैं चला जाऊँगा ।

**कैशस** ब्रूटस ! मै बहुत दिनो से देख रहा हूँ कि अब तुम्हारी आँखो मे मेरे लिये वह प्रेम, वह स्नेह नही है, जैसा कि पहले था। तुम अपने उस मित्र से भी ऐसी रुक्षता से मिलते हो, ऐसे अजनबी-से मिलते हो, जोकि तुमसे इतना प्रेम करता आया है ?

**ब्रूटस :** मुझे गलत न समझो कैशस ! यदि मेरा व्यवहार कुछ बदल गया है तो अपनी ही चिताओ के कारण जोकि केवल मुझ तक ही सीमित है । कुछ समय से भावो का सघर्ष मेरे हृदय को मथ रहा है जो मैं किसी को बताना नही चाहता । हो सकता है उसी के कारण मेरे व्यवहार मे परिवर्त्तन आ गया हो ! लेकिन इसलिये मेरे मित्रो को तो मुझसे उदासीन नही रहना चाहिये । और कैशस ! मेरे मित्रो मे तुम सबसे पहले हो जो मेरे इतने निकट हो ! यदि मैं इस समय मित्रो के प्रति उदासीन-सा दिखता हूँ, तब भी उन्हे सोचना चाहिये कि ब्रूटस अपने ही भावो के द्वद्व मे उलझ कर मित्रो से अपने स्नेह को व्यक्त करना तक भूल गया है ।

कैशस : तब तो मैने तुम्हारे भावो को समझने मे भूल की है अ
इसी कारण से मैने अपने वे विचार भी तुम्हारे सामने प्र
नही किये जो वास्तव मे बडे ही महत्त्वपूर्ण, गभीर अ
लाभदायक हैं। बताओ ब्रूटस ! क्या तुम अपने आपको दे
सकते हो ?

ब्रूटस : नही कैशस ! आँख अपने आपको तब तक नही देख पा
जब तक वह अन्यत्र कोई प्रतिबिंब न देखे !

कैशस : यही बात है। तुम्हारे लिये यह सबसे बड़ी वेदना है
तुम्हारी आँख को ऐसा दर्पण नही मिला जिसमे तुम अप
बिंब देख सकते, जिसमे तुम अपनी आँखो मे छिपी योग्यता
पहचान पाते। उसके बिना तुम्हे अपने महत्त्व का अनुमान
कैसे हो सकता है ? देवताओं के समान महान सीज़र
अतिरिक्त मैंने रोम के सभी पुरुषो को यह कहते सुना है
इस कठोर और यातनामय युग मे यदि ब्रूटस अपनी योग्य
को स्वय देख पाता तो कितना अच्छा होता ?

ब्रूटस : कैशस ! तुम मुझे किन खतरो मे ले जाना चाहते हो, क्यो
तुम मुझमे वे बातें भी मुझसे ढूँढ लेने को कहते हो जो
वास्तव मे मुझमे हैं ही नही ?

कैशस : भद्र ब्रूटस ! तो सुनने के लिये तत्पर हो जाओ। क्यो
मैं जानता हूँ कि तुम अपने बिंब को स्वय ठीक से नही देख प
मैं ही तुम्हारे लिये दर्पण बनता हूँ ताकि तुम्हारे उन गुणो
प्रगट कर सकूँ जिन्हें स्वय तुम भी नही जानते। किंतु मेरे
सज्जन ब्रूटस ! मुझसे तुम ईर्ष्या मत कर उठना। यदि
साधारण लोगो के साथ हँस-बोल लेता होऊँ, थोड़ी जान-पहच
पर ही कसम खाकर प्रेम दिखाने लगता होऊँ, यदि मैं सब

ख़ुशामद करता होऊँ और पीठ-पीछे बुराई करता होऊँ, यदि मैं साधारण व्यक्ति के साथ भी मद्यपो की-सी क्षणिक मित्रता करता होऊँ, और तुम मुझे ऐसा समझते हो, तब तो तुम्हे निश्चय ही मुझको भयानक व्यक्ति समझना चाहिये !

[कोलाहल। तूर्य्यनाद]

ब्रूटस : यह कैसा शोर है ? मुझे तो सदेह है कि लोग सीज़र को सम्राट बना रहे हैं।

कैशस : क्या तुम भी भयभीत हो ? क्या ऐसा नही होना चाहिये ?

ब्रूटस : मैं यह नही चाहता कैशस ! फिर भी मैं सीज़र से प्रेम करता हूँ। लेकिन तुम मुझे क्यो इतनी देर से रोके हुए हो ? क्या कहना चाहते हो तुम मुझसे ? यदि लोक-कल्याण के लिये मेरे लिये एक ओर सम्मान और दूसरी ओर मृत्यु हो तो दोनो ही मेरे लिये समान रूप से उपेक्षणीय होगे। यदि मृत्यु के भय से आदर की भावना मेरे लिये बडी न हो, तो देवता भी मुझे दी हुई सारी सुविधाओ को मुझसे छीन लें।

कैशस : मैं जानता हूँ तुममे वह गुण है और इसी लिये मैं तुम्हारी वाह्य रुचियो से भी परिचित हूँ। सम्मान ही मेरी कथा का विषय है। मैं नही जानता कि तुम और बाकी लोग इस जीवन के विषय मे क्या सोचते है ? किंतु अपने लिये कहूँ, किसी के आतक मे जीवित रहने से मर जाना श्रेयस्कर है। मैं भी सीज़र की भाँति स्वतत्र जन्मा हूँ और तुम भी स्वतत्र ही जन्मे हो ! हम भी उसी की भाँति समृद्ध हैं, उसी की भाँति हममे भी शीत सहन करने की सामर्थ्य है। एक दिन हिल्लोलित-आलोडित टाइवर की स्फीत तरगो में सीज़र ने मुझे चुनौती देकर पुकारा था कि कैशस ! क्या तुझमे मेरे साथ वहाँ तक तैरने का इस

क्रुद्ध धार में भी साहस है ? मै तुरत नदी मे कूद पड़ा था और मैने कहा : 'तुम मुझे पकड़ सकोगे ?' वह मेरे पीछे तैरने लगा। नदी मे विपुल गर्जना हो रही थी और पानी को भीम प्रयत्न से चीरते हुए हम बढे जा रहे थे किंतु निर्दिष्ट गतव्य पर पहुँचने के पूर्व ही वह चिल्ला उठा · 'कैशस ! मुझे बचाओ, अन्यथा मैं डूब जाऊँगा ।' उस समय मैने सीज़र को, टाइबर की प्रचड धारा मे थके हुए क्लात सीज़र को, वैसे ही बचाया था जैसे एक दिन हमारे महान् पूर्वज ईनीस ने ट्रॉय की धू-धू करके जलती हुई लपटो मे से निकाल कर अपने कधो पर उठा कर वृद्ध एन्साइजीज की रक्षा की थी। और आज वही आदमी देवता बन गया है। और कैशस एक साधारण दीन मनुष्य है जो उसके सामने झुके और सीज़र उस अभिवादन को स्वीकार करने को अपना सिर तनिक हिला भर दे ? एकबार जब वह स्पेन मे था, तब ज्वर चढ़ आया था। तब मैने उसे काँपते हुए देखा था, आज जो देवता है, उस दिन वह काँप रहा था, उसके होठों की गुलाबी उड गई थी और आज जिन आँखो को देखकर सारा ससार काँपता है उस दिन उनकी ज्योति नष्ट-सी हो गई थी। मैंने उसे कराहते सुना था। वह जिह्वा जिससे निकले शब्दो का रोम के पुरुष इतना आदर करते हैं, जिसके भाषणो को पुस्तको में लिखा जाता है, उस दिन वही जिह्वा एक ज्वर-ग्रस्त बालिका की भाँति करुणा-भरे स्वर से पुकारती थी : 'टिटीनियस ! मुझे कुछ पीने को दो !' इतना दुर्बल मनुष्य ! अरे देवताओ ! मैं आश्चर्य्य से ग्रस्त हूँ ! कैसे वह अकेला ही विजयी होकर इस भव्य संसार का समस्त आदर और पुरस्कार प्राप्त कर रहा है ?

[कोलाहल सुनाई देता है। तूर्य्यनाद]

**ब्रूटस :** फिर वही कोलाहल ! सभवत सीज़र को फिर कोई सम्मान प्रदान किया जा रहा है, यह उसी का कोलाहल है।

**कैशस :** एक विशाल पाषाण मूर्त्ति की भाँति वह सब पर छा गया है। सारे ससार को उसने छोटा बना दिया है और हम क्षुद्र लोग उसके विशाल चरणो के नीचे से निकलकर अपने अपमान की कब्रें इधर-उधर ढूंढते फिर रहे हैं। कभी-कभी मनुष्य अपने भाग्य का स्वय निर्माण करता है। प्रिय ब्रूटस ! दोष हमारी ग्रह-दशा मे नही, हममे है। हम ही आधीन प्रवृत्ति के हैं। ब्रूटस और सीज़र। सीज़र नाम मे ही ऐसी क्या महानता है ? वही नाम क्यो तुम्हारे नाम से अधिक प्रतिध्वनित हो ? दोनो को साथ लिखो, तुम्हारा कही अच्छा है। दोनो का साथ उच्चारण करो। तुम्हारा ही महाप्राण-ध्वनि है। तोल कर देखो। तुम्हारा ही नाम भारी निकलता है। सीज़र के नाम की भाँति ही ब्रूटस नाम भी स्फुरण भरने मे समर्थ है। किसलिये सारे देवताओ के नाम पर सीजर ही भोजन करता है ? क्या वह इतना महान हो गया है ? धिक्कार है रे युग तुझे ! रोम ! तुझमे वीरो का लहू बाकी नही रहा ! महान् प्रलय के उपरात कभी भी ऐसा युग नही हुआ जब रोम मे एक से अधिक महान् पुरुष प्रसिद्ध नही रहे हो। जो रोम के बारे मे बातें करते है वे यह कभी नही कहते कि उसके भीतर केवल एक ही महापुरुष बाकी है। और आज ! आज रोम मे केवल एक ही महापुरुष बच रहा है ? बोलो ! मैंने, तुमने, किसने अपने पिताओ को यह कहते हुए नही सुना कि रोम मे अपना गौरव जीवित रखने के लिये एक ब्रूटस ही ऐसा रह गया था जिसने असख्य कष्टो को सहन किया था। वही था जिसने एकराट् सत्ता की जगह महान पाप को

भी स्वीकार कर लिया होता !

ब्रूटस : तुम मुझे चाहते हो, यह मैं जानता हूं इसमे मुझे कोई संदेह नही । मै कुछ-कुछ समझ रहा हूँ कि तुम मुझसे किस उद्देश्य की पूर्त्ति चाहते हो ! इस युग के विपय मे मेरी क्या धारणा है यह तो मै बाद मे बताऊँगा और इस समय न तो स्वयं इस विषय मे मै कुछ कहना चाहता हूँ, और बल्कि यही प्रार्थना करता हूँ कि तुम भी विचलित मत हो । जो तुमने कहा है उस पर मै विचार करूँगा, जो तुम कहोगे उसे धैर्य्य से सुनूँगा और फिर हम इस विषय पर समय निकालकर विवेचन करेगे । तब तक मेरे मित्र ! तुम भी इस पर अच्छी तरह मनन कर लो। ऐसी मँडराती हुई कठोर परिस्थिति मे ब्रूटस भी रोम का पुत्र कहलाने की अपेक्षा एक गँवार कहलाना ही अधिक पसंद करेगा ।

कैशस : मुझे हर्ष है कि मेरे निर्बल शब्दो ने थोड़ा-सा प्रभाव डालकर ब्रूटस को अग्नि की एक लपट का आभास दिया है ।

ब्रूटस : खेल समाप्त हो गये और सीज़र लौट रहा है ।

कैशस : जैसे ही वे इधर होकर जायें, कास्का का हाथ पकड़ कर इगित करना, वह अपने स्वभाव के अनुसार स्वय बता देगा कि आज क्या-क्या हुआ ।

[सीजर और उसके साथियों का फिर प्रवेश]

ब्रूटस : अच्छी बात है, मै यही करूँगा । लेकिन जरा देखो तो सही । सीज़र की भौ पर गुस्सा नजर आ रहा है । और बाकी के लोग कैसे सहमे हुए दिखाई देते है जैसे अभी डाँट खा चुके हैं । कैल्पूर्निया का चेहरा पीला पड गया है और सिसरो की आंखे कैसी लाल-सी चमकती दीख रही है। वैसा ही लग रहा है जैसा राजधानी मे सिनेट अपने विरोधी सदस्यो द्वारा प्रश्न पूछे जाने

पर हो जाता है ।

**कैशस** कास्का सारी बातें बता देगा कि क्या हुआ है !

**सीज़र :** ऐन्टोनियस !

**ऐन्टोनियस :** सीज़र !

**सीज़र** मेरे पास रात को सोने को ऐसे आदमी देना जो मोटे हो और खूब सोते हो । सुदर, कढे हुए बालो वाले, पुष्ट देह हो । वह देखो कैशस है न ? असतुष्ट लगता है, पीला-सा चेहरा, थका हुआ । बहुत सोचता है, बहुत गूढ चिंता मे डूबा रहता है। ऐसे आदमी खतरनाक साबित होते है ।

**ऐन्टोनियस :** आपको इससे डरने की ज़रूरत नही है सीज़र ! कैशस खतरनाक नही है । वह एक अभिजात कुलीन रोम निवासी है और आपके प्रति बहुत वफादार भी है ।

**सीज़र** क्या ही अच्छा होता यदि वह और मोटा होता । उससे मैं डरता नही हूँ । लेकिन यदि तुझे भी भय लगता हो तो उस दुबले-पतले कैशस के सिवाय कौन और व्यक्ति है जिससे मैं बचता रहता ? वह बहुत पढता है । वह एक महान् दार्शनिक भी है और वह लोगो के काम देख कर ही उनके उद्देश्यो को पहँचान लेता है। वह न तो तुम्हारी तरह खेलो को पसद करता है न सगीत को ही । वह बहुत कम मुस्कराता है और यदि मुस्कराता भी है तो ऐसा लगता है जैसे वह अपना ही उपहास कर रहा हो कि क्यो वह मुस्करा रहा है ! ऐसे लोग अपने से महान व्यक्तियो को देख कर मन ही मन बेचैन रहते हैं और इसी लिये वे भयानक होते हैं । मै तो तुम्हे बता रहा हूँ कि किससे डरना चाहिये । मैं स्वय नही डरता क्योकि मैं सदैव सीजर हूँ । तुम मेरे दाहिने हाथ की तरफ आ जाओ, क्योकि मैं इस कान

से ज़रा ऊँचा सुनता हूँ। मुझे सच बताओ तुम उसके बारे मे क्या सोचते हो ?

[तूर्य्यनाद। सीज़र तथा सब जाते है, केवल कास्का रह जाता है।]

कास्का : तुमने मुझे चोगा खीच कर रोका है। क्या तुम मुझसे कुछ कहना चाहते हो ?

ब्रूटस : बताओ कास्का ! आज ऐसी क्या बात हो गई कि सीज़र इतने उदास दिखाई देते थे ?

कास्का : क्यो, तुम तो उसके साथ ही थे न ?

ब्रूटस : होता तो तुमसे पूछने की ज़रूरत ही क्या थी ?

कास्का : हुआ यह कि सीजर को एक ताज भेट किया गया किंतु उसने उसे हाथ से हटा दिया और लोगों ने इसी पर हर्षध्वनि की।

ब्रूटस : दूसरी वार शोर किसलियें हुआ था ?

कास्का : इसी कारण से।

कैशस : वे तो तीन वार चिल्लाये थे। तव तीसरी वार चिल्लाने का क्या कारण था ?

कास्का : यही कारण था। और क्या ?

कैशस : क्या उसे तीन वार ताज दिया गया था ?

कास्का : माता मेरी[1] की सौगध, यही कारण था। तीन वार उसने मना कर दिया। हर नयी वार वह पहले से भी अधिक नम्र लगता था और तव भी वे चिल्ला उठते थे।

कैशस : उसे ताज किसने दिया था ?

कास्का : ऐन्टोनियस ने ही तो।

---

१. सीजर के समय में न ईसा हुआ था, न मेरी हुई थी, परंतु शेक्सपियर ने अपने युग में भूल कर यह लिख डाला है।

ब्रूटस भद्र कास्का, वताग्रो न ? किस तरह दिया गया था वह ताज ?

कास्का : विस्तार से तो मैं नही वता सकता । चाहे इसके लिये मुझे फाँसी क्यो न लगा दी जाये इसमे वहुत कुछ मूर्खता थी जो मै पसद नही करता । मैने उसे ठीक से देखा भी नही । मार्क ऐन्टोनी ने उसे ताज दिया था, न वह ताज ही था, हाँ कुछ थी चमकती हुई-सी चीज़ । सीज़र ने ताज हटा तो दिया था पर मुझे लग रहा था कि वह ताज चाहता था । उसे दुवारा ताज दिया गया लेकिन उसने फिर भी हटा दिया और फिर भी मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि उसे अपनी उगलियो से छू लेना चाहता था । तीसरी वार उसे फिर से ताज दिया गया और उसने फिर उसे लेने से इकार कर दिया । इस वार तो भीड ने जोर-ज़ोर से अपने कर्कश हाथो से तालियाँ वजाकर चिल्लाना शुरू कर दिया । भीड के लोगो ने अपनी-अपनी पसीने से भीगी टोपियाँ उछाल दी और अपनी लबी-लबी साँसो से ऐसी गदी हवा वहाँ फैला दी कि सीजर का तो गला घुटने लगा । वह वेहोश हो कर गिर पडा और अपने वारे मे मैं तुम्हे वता दूँ कि मैं तनिक भी नही हँसा क्योकि जरा मुँह खोलता तो भीड की वह वदवूदार हवा मेरे फेफडो तक भर जाती ।

कैशस : सुनो ! मै प्रार्थना करता हूँ भद्र कास्का ज़रा धीरे वोलो न ? क्या सीज़र मूर्च्छित हो गया ?

कास्का : वह तो ठीक वाज़ार मे गिर पडा और उसके मुँह से झाग निकलने लगे । उसकी तो आवाज़ भी नही निकल पाती थी ।

ब्रूटस : हो सकता है उसे इस तरह गिर पडने की कोई वीमारी हो !

कैसश . नही ! सीज़र मे यह वीमारी नही है । वह तो मुझमे, तुममे

और सरल हृदय कास्का मे है कि निरतर हम नीचे गिरते जा रहे है।

कास्का . मैं नही समझा कि ऐसा कहने से तुम्हारा मतलब क्या है, किंतु इतना मुझे विश्वास है कि सीजर गिर अवश्य पडा था। जिस तरह नाट्य भवनो मे अभिनेताओ के कार्य्यों को देख कर लोग प्रसन्न और अप्रसन्न होते हैं, उसी प्रकार यदि वहाँ वह लोगों को प्रसन्न करता था तो वे भी कुछ नही कहते थे, किंतु यदि वह अपने कार्य्यों से भीड को क्रुद्ध कर देता था, असंतुष्ट करता था तो वे लोग दाँत पीसने लगते थे। क्या तुम मुझे झूँठा समझते हो ?

ब्रूटस : जब उसे चेतना लौटी तब उसने क्या कहा ?

कास्का : मूर्च्छित होने के पहले उसने देखा था कि उसके ताज को लौटाने से लोग खुश हो रहे थे। उसने अपना वक्ष खोल दिया और उनसे कहा कि यदि कोई चाहे तो उसका गला काट दे। सच, यदि मै कार्य्यकुशल होता तो तुरत ही उसका गला काट देता, लेकिन इतने ही मे वह गिर पडा। जब उसे होश लौटा तो उसने लोगो से कहा कि यदि मैने कोई अनकहनी बात कह दी है या कर दी है तो लोग यही समझे कि बीमारी की वजह से उसने ऐसा किया है। मेरे पास तीन-चार औरतें खडी थी। बोल उठी : 'हाय-हाय कैसी अच्छी आत्मा है', मानो उन्होने उसकी कहनी-सुननी को माफ कर दिया। लेकिन यह कोई ध्यान देने योग्य बात नही है। सीजर यदि उनकी माताओ को छुरे से गोद देता तब भी वह उसे माफ कर देती।

ब्रूटस : और इसके बाद ही वह इस प्रकार दुखी होकर आया था ?

कास्का : हाँ।

**कैशस** : क्या सिसरो ने भी कुछ कहा था ?

**कास्का** : हाँ उसने कुछ ग्रीक (भाषा) मे कहा था।

**कैशस** : क्या मतलब था उसका ?

**कास्का** : मै तो समझ नही सका था। अब जो तुमसे झूठ बोलकर बता भी दूँ तो फिर तुम्हे मुँह कैसे दिखला सकूँगा ? लेकिन जिन्होने समझ लिया था वे एक दूसरे को देखकर मुस्कराये थे और सिर हिला रहे थे। जहाँ तक मेरा सवाल है वह सब मेरे लिये ग्रीक भाषा थी।[1] मैं तुम्हें और बहुत-सी बाते बता सकता हूँ। मेरुलस और फ्लेवियस ने चूँकि सीजर की मूर्तियो से सजावट को हटावाया था, उन्हे जनता मे भाषण देने के अधिकार से वचित कर दिया गया है। अच्छी बात है। अब विदा दो। और भी कुछ बेवकूफियाँ हुई हैं, परतु अब मुझे याद नही हैं।

**कैशस** कास्का ! क्या आज तुम रात को मेरे साथ भोजन कर सकोगे ?

**कास्का** : नही। मैं पहले से अन्यत्र तय कर आया हूँ।

**कैशस** तो कल सही ?

**कास्का** : हाँ-हाँ, यदि मै कल भी जीवित रहा, और तुम्हारा यही बना रहा और तुम्हारा भोजन भी खाने योग्य रहा।

**कैशस** : अच्छी बात है, मैं कल तुम्हारी आशा करूँगा।

**कास्का** : अच्छा। अब विदा।

[प्रस्थान]

**ब्रूटस** कैसा मूर्ख हो गया है यह ? जब पाठशाला मे पढता था, तब तो बडा चतुर था।

---

१ अगरेजी का मुहाविरा है, जिसका अर्थ हिंदी में प्रचलित है—वह तो फ़ारसी बोल रहा था अर्थात् मेरे लिये अज्ञात था।

कैशस : कोई वीरतापूर्ण और महान कार्य हो तो उसे पूर्ण करने मे वह अब भी वैसा ही है। हाँ देखने मे लगता मूर्ख-सा है, लेकिन क्योकि बात वह बुद्धिमानी की करता है। इस कठोरता से उसे लाभ ही पहुँचता है क्योकि लोग उसके शब्दो को और भी सरलता से सह लेते हैं।

ब्रूटस : यह तो सच है। मै अब तुमसे विदा लेता हूँ। यदि तुम मुझसे अधिक बातें करना चाहते हो तो मैं तुम्हारे घर कल आ जाऊँगा या तुम अगर मेरे घर आ सको तो मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।

कैशस : यही ठीक है, मैं ऐसा ही करूँगा। तब तक तुम इन बातो पर विचार कर लेना।

[ब्रूटस का प्रस्थान]

कैशस : अच्छा ब्रूटस! तुम सचमुच ही महान हो! किंतु मै तो देखता हूँ कि तुम्हारी अच्छाई भी बदलती जा सकती है। अतः महान व्यक्तियो के लिये यही अच्छा है कि वे महान लोगो से ही सबध रखें, क्योकि कैसी भी दृढता क्यों न हो उसे भी गिराया जा सकता है। सीज़र मुझसे कुढ़ता है किंतु ब्रूटस से वह प्रेम करता है। यदि मैं ब्रूटस होता और वह कैशस होता तो वह मुझे इतना प्रभावित नही कर पाता जितना मैने उसे किया है। आज रात मै उसकी खिड़की से तरह-तरह के हाथो की लिखावट मे लिखे पत्र फेंकूँगा ताकि वह समझेगा कि नागरिको ने भेजे हैं। उनमे लिखा होगा कि रोम में ब्रूटस के नाम की कितनी प्रशसा हो रही है और उनमे सीजर की महत्त्वाकाक्षा का भी वर्णन होगा। इसके बाद देखे सीजर ही कैसे जम बैठता है। या तो हम ही उसे उखाड़ देंगे, या फिर हमें ही आपत्तियों का सामना करना पड़ेगा।

## दृश्य ३

[कडक और बिजली की चमक। एक ओर से नगी तलवार लिये कास्का और दूसरी ओर से सिसरो का प्रवेश]

सिसरो नमस्ते कास्का। क्या सीज़र को पहुँचा आये ? तुम हाँफ क्यो रहे हो ? इस तरह घूर-घूर कर क्यो देख रहे हो ?

कास्का : क्या पृथ्वी को निराधार-सी झोके खाते देखकर तुम आतकित नही हो रहे हो ? सिसरो ! मैंने ऐसे भयानक तूफान भी देखे हैं जब विकराल प्रभजन ने पृथ्वी मे दूर तक गडे हुए विशालकाय ओक के विस्तृत वृक्षो को भी उखाड कर फेंक दिया है। और मैंने ऐसे सर्वभक्षी दुर्दांत लोलुप सिधु भी देखे है जिनकी प्रचण्ड उत्ताल तरगें मेघो से टकराने की स्पर्धा से उन्मत्त हो-हो उठती हैं। किंतु आज तक, आज रात तक मैंने अगारो की वर्षा करने वाला ऐसा चिल्लाता हुआ तूफान नही देखा था। या तो स्वर्ग मे गृहयुद्ध छिड गया है या मनुष्यो से क्रुद्ध होकर देवजन सृष्टि का सहार करने पर तुल गये हैं।

सिसरो क्यो क्या तुमने कोई और भी आश्चर्यजनक बात देखी है ?

कास्का · एक साधारण दास, जिसे तुमने भी देखा है, बाँया हाथ उठाये खडा था जो ऐसा धू-धू कर जल रहा था जैसे बीस मशाले एक साथ जल रही हो, फिर भी न तो उसके हाथ को कुछ अनुभव हो रहा था, न वह जल ही रहा था। इसके अतिरिक्त मैंने एक सिह को भी अपनी ओर घूरते देखा। वह विना मुझसे अटके चला गया लेकिन मैंने तभी से अपनी तलवार नही रखी है। और मैंने सैंकडो स्त्रियो को देखा जो भय से मुमूर्षु हो रही थी। उन्होने मुझसे सौगन्ध खा-खा कर कहा कि उन्होने पथो पर कुछ ऐसे आदमियो को जाते हुए देखा, जिनके चारो ओर

आग की लपटें हरहरा रही थी। कल दोपहर तक ठीक बाज़ार मे बैठा उल्लू बोल रहा था। जब इतने अपशकुन एक साथ ही हो तब क्या मनुष्य को कहना चाहिये कि यह तो प्राकृतिक ध्वनियाँ है, इनसे डरने की कोई बात नही है? मेरा तो यही विश्वास है कि जहाँ ऐसे अपशकुन होते है वहाँ अवश्य ही दुर्घटनाएँ होती हैं।

सिसरो : सचमुच यह विचित्र समय है। किंतु मनुष्य अपनी ही इच्छा के अनुकूल वस्तुओ को परिवर्त्तित कर लेता है। यहाँ तक कि वह वस्तुओ के मूल तात्पर्य्य तक को विस्मृत कर देता है। क्या कल सीज़र राजधानी जायेगा?

कास्का : वह अवश्य जायेगा। क्योकि उसने ऐन्टोनियस से तुम्हे सूचना भिजवाई है कि वह कल वहाँ जायेगा।

सिसरो : तब विदा कास्का! ऐसे तूफान मे बाहर रहना ठीक नही।

कास्का : विदा सिसरो।

[सिसरो का प्रस्थान। कैशस का प्रवेश]

कैशस : कौन है वहाँ?

कास्का : एक रोम का निवासी।

कैशस : आवाज़ से तो तुम कास्का लगते हो?

कास्का : तुम्हारे कान तेज हैं कैशस! आज कैसी रात है?

कैशस : ईमानदार लोगो के लिये तो यह बड़ी सुहावनी रात है।

कास्का : कौन जानता था कि आकाश इतना भयानक हो उठेगा!

कैशस : जो जानते हैं कि यह संसार पापो और अपराधो से भरा हुआ है वे यह भी जानते हैं कि उसका दण्ड भी मिलेगा। अपनी बात कहूँ? मैं तो भयानक और डरावनी रातो मे गलियों मे घूमा हूँ और वज्रों को सहने के लिये अपने वक्ष को खोले रखा

है। जब लपलपाती खड्गो-सी टकराती चपल बिजली आकाश का वक्ष विदीर्ण कर देती है तब मै उसके असह्य प्रकाश मे सीना खोल कर खडा हो जाता हूँ।

**कास्का** किंतु तुमने देवताओ को इतना उत्तेजित क्यो किया ? जब सर्वशक्तिमान देवता क्रुद्ध हो जायें और इस प्रकार भयानक इगित करके हमे आतकित करने लगें तब मनुष्यो का कर्त्तव्य है कि वे भयभीत हो कर कांपने लगे।

**कैशस** तुम बडे मूढ हो कास्का। एक रोम के निवासी मे जीवन की जिस चिगारी की आवश्यकता है, वह या तो तुममे है ही नही, या फिर तुम उसका प्रयोग करना नही जानते। आकाश का यह विचित्र उत्पात देख कर तुम पीले पड गये हो, और आश्चर्यचकित-से विभ्रात हो गये हो ! क्यो जल रही हैं यह अग्नियाँ, क्यो विचरण कर रहे हैं यह प्रेत, क्यो पक्षी और पशु अपना आचरण अस्वाभाविक कर उठे हैं, क्यो वृद्ध नादान हो गये हैं और बालको मे कैसे आ गई है यह गभीरता, क्यो प्रकृति के सहज नियमो मे ऐसा परिवर्त्तन आ गया है ? तनिक इसे ध्यान से सोच कर देखो और तब ही तुम्हे विदित होगा यह सब दैवी स्फुरण से हो रहा है, यह सब इस बात के द्योतक हैं कि कोई भयानक बात होनेवाली है। बताओ कास्का ! क्या मैं उस व्यक्ति का नाम ले दूँ जो इस भयानक रात्रि की भाँति ही है, जो गर्जन करता है, चमकता है, कौंधता है, कब्रें जिसके कारण जमुहाई लेने लगती है, और जो राजधानी मे केहरी की भाँति दहाडता है। वह आदमी व्यक्तिगत रूप से शक्ति मे, न तो तुमसे ही अधिक बलिष्ठ है, न मुझसे ही, किंतु वह भयानक रूप से बढ उठा है और प्रकृति की इन भयकरताओ के समान ही

भयंकर हो उठा है।

कास्का : तुम्हारा मतलब सीजर से ही है न ? है न यही बात ?

कैशस : कोई भी हो, सीजर हो या कोई भी हो। आज भी रोम के निवासियो में अपने पूर्वजो का-सा शारीरिक बल है। किंतु हममें अपने पूर्वजो की-सी मेधा नही रही है। हममे अपनी माताओं की-सी भावना घुस आई है और हमारी यातना और दुःखभार हमे स्त्री की भाँति निर्बल प्रमाणित कर रहे हैं।

कास्का : लोग कहते हैं कि कल सिनेट के सदस्य सीज़र को सम्राट् बना देंगे और वह इटली को छोडकर आसमुद्र पृथ्वी पर अपना मुकुट धारण करके एकछत्र शासन करेगा।

कैशस : उस समय मैं जानता हूँ कि यह मेरी कटार कहाँ रहेगी। कैशस ही कैशस की दासता से मुक्ति दिलायेगा। देवताओ ! तुमने आत्मघात की शक्ति देकर निर्बलों को भी शक्तिवान बना दिया है। हे देवताओ ! इसे देख अतिचारी भी पराजित हो जाते हैं। न तो पाषाण के स्तभ और मीनार, न ठोस धातु की दीवारें ही, न वायुहीन कालकोठरियाँ, न लोहे की कठोर शृंखलाएँ ही, कुछ भी मनुष्य की आत्मा की दुर्दमनीय शक्ति को नही कुचल सकती। किंतु जब मनुष्य सांसारिक बंधनो से ऊब जाता है तब उसे अपने जीवन का अंत करने मे हिचकिचाहट नही होती। क्योंकि यह सत्य मैं जानता हूँ, सारा ससार जान ले कि जिस अत्याचार से मै दबा हुआ हूँ, जिसे सहन कर रहा हूँ, उसे आसानी से अपने ऊपर से उखाड़ कर फेंक सकता हूँ।

[आकाश में बिजली की कड़क]

कास्का : कैशस ! यह तो मैं भी कर सकता हूँ। इस प्रकार तो सारे दास अपने बंधनों का नाश करने की शक्ति अपने हाथ मे ही रखते हैं।

है। जब लपलपाती खड्गो-सी टकराती चपल बिजली आकाश का वक्ष विदीर्ण कर देती है तब मैं उसके असह्य प्रकाश मे सीना खोल कर खडा हो जाता हूँ।

**कास्का** किंतु तुमने देवताओ को इतना उत्तेजित क्यो किया ? जब सर्वशक्तिमान देवता क्रुद्ध हो जायें और इस प्रकार भयानक इगित करके हमें आतकित करने लगें तब मनुष्यो का कर्त्तव्य है कि वे भयभीत हो कर कांपने लगें।

**कैशस** तुम बडे मूढ हो कास्का। एक रोम के निवासी मे जीवन की जिस चिंगारी की आवश्यकता है. वह या तो तुममे है ही नही, या फिर तुम उसका प्रयोग करना नही जानते। आकाश का यह विचित्र उत्पात देख कर तुम पीले पड गये हो, और आश्चर्यचकित-से विभ्रात हो गये हो ! क्यो जल रही हैं यह अग्नियाँ, क्यो विचरण कर रहे हैं यह प्रेत, क्यो पक्षी और पशु अपना आचरण अस्वाभाविक कर उठे हैं, क्यो वृद्ध नादान हो गये हैं और बालको मे कैसे आ गई है यह गभीरता, क्यो प्रकृति के सहज नियमो मे ऐसा परिवर्त्तन आ गया है ? तनिक इसे ध्यान से सोच कर देखो और तब ही तुम्हे विदित होगा यह सब दैवी स्फुरण से हो रहा है, यह सब इस बात के द्योतक हे कि कोई भयानक वात होनेवाली है। बताओ कास्का ! क्या में उस व्यक्ति का नाम ले दूँ जो इस भयानक रात्रि की भाँति ही है, जो गर्जन करता है, चमकता है, कौंधता है, कब्रें जिसके कारण जमुहाई लेने लगती हे, और जो राजधानी मे केहरी की भाँति दहाडता है। वह आदमी व्यक्तिगत रूप से शक्ति मे, न तो तुमसे ही अधिक वलिष्ठ है, न मुझसे ही, किंतु वह भयानक रूप से वढ उठा है और प्रकृति की इन भयकरताओ के समान ही

भयकर हो उठा है ।

कास्का : तुम्हारा मतलब सीजर से ही है न ? है न यही बात ?

कैशस : कोई भी हो, सीजर हो या कोई भी हो । आज भी रोम के निवासियों मे अपने पूर्वजो का-सा शारीरिक बल है। किंतु हममें अपने पूर्वजो की-सी मेधा नही रही है । हममे अपनी माताओं की-सी भावना घुस आई है और हमारी यातना और दुःखभार हमे स्त्री की भाँति निर्बल प्रमाणित कर रहे है ।

कास्का : लोग कहते है कि कल सिनेट के सदस्य सीज़र को सम्राट् बना देंगे और वह इटली को छोड़कर आसमुद्र पृथ्वी पर अपना मुकुट धारण करके एकछत्र शासन करेगा ।

कैशस : उस समय मै जानता हूँ कि यह मेरी कटार कहाँ रहेगी । कैंशस ही कैंशस की दासता से मुक्ति दिलायेगा । देवताओ ! तुमने आत्मघात की शक्ति देकर निर्बलो को भी शक्तिवान बना दिया है । हे देवताओ ! इसे देख अतिचारी भी पराजित हो जाते हैं । न तो पाषाण के स्तंभ और मीनार, न ठोस धातु की दीवारे ही, न वायुहीन कालकोठरियाँ, न लोहे की कठोर शृंखलाएँ ही, कुछ भी मनुष्य की आत्मा की दुर्दमनीय शक्ति को नही कुचल सकती । किंतु जब मनुष्य सासारिक बधनो से ऊब जाता है तब उसे अपने जीवन का अंत करने मे हिचकिचाहट नही होती । क्योकि यह सत्य मैं जानता हूँ, सारा संसार जान ले कि जिस अत्याचार से मै दबा हुआ हूँ, जिसे सहन कर रहा हूँ, उसे आसानी से अपने ऊपर से उखाड़ कर फेंक सकता हूँ ।

[आकाश में बिजली की कड़क]

कास्का : कैंशस ! यह तो मैं भी कर सकता हूँ । इस प्रकार तो सारे दास अपने बंधनो का नाश करने की शक्ति अपने हाथ मे ही रखते हैं ।

कैशस : किंतु सीजर अत्याचारी क्यो है ? भोले कास्का ! सीज़र अतिचारी है क्योकि वह जानता है कि रोम-निवासी भेडें हैं । यदि रोम-निवासी इतने भीरु न होते, वह ऐसा सिंह कैसे बन जाता ? विशाल अग्नि को चेताने की इच्छा करनेवाले सदैव व्यर्थ के घास-फूंस-तिनको को इकट्ठा करके सुलगाते हैं । रोम-निवासियो की निर्बलता देख कर ही सीजर जैसा कुटिल व्यक्ति अपने यश और गौरव की ज्वाला को प्रज्वलित करना चाहता है । किंतु हाय रे मेरी वेदना ! तूने मुझे कहाँ लाकर खडा कर दिया ? शायद मैं ऐसे व्यक्ति से बातें कर रहा हूँ जो स्वेच्छा से ही दास बना हुआ है । तब तो सभवतः मुझे दण्ड का भी भागी होना पडे । किंतु मैं सशस्त्र हूँ । मेर लिये कोई भय नही, कोई खतरा नही ।

कास्का तुम कास्का से बातें कर रहे हो जो इधर की बात उधर नही कहता । लो मेरा हाथ थामो । इन दुःखो का विनाश करने के लिये कर्मठ बनो और देखो कि मेरा पाँव आगे बढने मे किसी से भी पीछे नही रहेगा ।

कैशस तब तुम प्रतिश्रुत हुए कास्का । समझ गये न ? मैंने कुलीन और अभिजात तथा मेघावी रोम-निवासियो को तैयार भी कर लिया है कि वे मेरे साथ एक ऐसे सम्मानित कार्य्य मे सहायक हो जिसका परिणाम भयानक भी हो सकता है । मैं जानता हूँ, कि इस समय पोम्पो की विशाल मेहराब के नीचे खडे वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे होगे क्योकि इस भयानक रात में पथो पर कोई भी चलता-फिरता दिखाई नही दे रहा। देखो जैसा कार्य्य हमने हाथो में उठाया है आकाश भी उसी के अनुरूप खूनी, भयानक और अग्नियो से भरा हुआ-सा विकराल हो उठा है ।

कास्का : थोड़ी देर के लिये इधर हो रहो, कोई बड़ी तेज़ी से आ रहा है।

कैशस : यह तो सिन्ना है, मेरा मित्र है। इसे तो मै इसकी चाल ही से पहचान लेता हूँ।

[सिन्ना का प्रवेश।]

कैशस : सिन्ना ! इतनी तेज़ी से कहाँ जा रहे हो ?

सिन्ना : तुम्हे ही ढूंढ रहा था। क्या तुम्हारे साथ मैटेलस सिम्बर है ?

कास्का : नही, यह कास्का है। वह अब हमारी योजना में साथी हैं। क्या वे मेरी प्रतीक्षा नही कर रहे है सिन्ना ?

सिन्ना : यह अच्छा हुआ। कैसी भयानक रात है। हममे दो या तीन ऐसे है जिन्होने बड़े विचित्र दृश्य देखे है।

कैशस : बताओ सिन्ना ? क्या मेरी प्रतीक्षा की जा रही है ?

सिन्ना : हाँ तुम्हारी राह देखी जा रही है। कैशस ! क्या तुम वीर ब्रूटस को अपनी ओर नही कर सकते ?

कैशस : तुम इसकी चिंता मत करो। मेरे अच्छे सिन्ना, यह कागज़ लो और इसे न्यायाधीश की कुर्सी पर रख देना, जहाँ ब्रूटस को यह मिल जायेगा और इसे उसकी खिड़की मे फेंक देना, इसे वृद्ध लूशियस जूनियस ब्रूटस की पुरानी मूर्त्ति पर मोम से चिपका देना। यह सब करके पोम्पी की मेहराब मे आ जाना, हम तुम्हे वही मिलेगे। क्या डेसियस ब्रूटस और ट्रैबोनियस वहाँ पहुँच चुके है ?

सिन्ना : मैटेलस सिम्बर के सिवाय वहाँ सब पहुँच चुके है। और वह तुम्हे ढूंढने तुम्हारे घर गया है। अच्छा मुझे जल्दी चलने दो ताकि जैसा तुमने कहा है इन कागज़ों को पहुँचा सकूँ।

कैशस : उसके बाद पोम्पी के थियेटर मे आ जाना !

[सिन्ना का प्रस्थान]

**कैशस** चलो कास्का। सूर्योदय से पहले ही हम-तुम ब्रूटस से उसके घर पर ही मिल आयें। सौ मे पिचहत्तर तो वह हमारी ओर है ही। एक बार और मिलने पर मैं उसे पूरा ही राज़ी कर लूंगा। वह हमारी बात मान जायेगा।

**कास्का** ब्रूटस का तो प्रजा के हृदय मे बहुत ही सम्मान है। एक कार्य्य जो हमारे द्वारा पूर्ण होने पर अपराध-सा दिखाई देगा, उसकी उपस्थिति में या सहायता से होने पर वही ऐसे पवित्र हो जायेगा जैसे रसायनशास्त्री निम्न धातुओ को सुवर्ण बना देता है।

**कैशस** : उसको, उसकी योग्यता को और हमे उसकी आवश्यकता को तुमने ठीक ही समझा है। अब चलो। आधी रात बीत गई है और सुबह होने से पहले ही उसे जगा कर हम उसके विषय मे निश्चित हो जायेंगे।

[प्रस्थान]

# दूसरा अंक

## दृश्य १

[रोम। ब्रूटस का बाग]

[ब्रूटस का प्रवेश]

ब्रूटस : अरे लूशियस ! तारो की चाल देखकर मैं नही कह सकता कि सुबह होने मे कितनी देर और है। लूशियस, सुना नही ? काश, मुझमे भी ऐसी ही देर तक गहरी नीद सोने की कमजोरी होती ! अरे क्या समय हुआ, लूशियस ! क्या समय हुआ ? कब जागेगा ? मै कहता हूँ जाग लूशियस ! जाग उठ !

[लूशियस का प्रवेश]

लूशियस · स्वामी ने मुझे बुलाया ?

ब्रूटस एक बत्ती मेरे अध्ययन के कमरे में जलाकर रख लूशियस। और मुझे आकर बता।

लूशियस : जो आज्ञा स्वामी।

[प्रस्थान]

ब्रूटस : उसकी मृत्यु से ही रोम का उद्धार हो सकता है। वैसे मुझे तो और कोई व्यक्तिगत कारण नही दिखाई देता कि मै उससे घृणा करूँ। किंतु लोकहित के लिये ही मै उसका निधन ठीक समझता हूँ। उसे राजमुकुट पहनाया जायेगा। क्या इससे उसका स्वभाव ही बदल जायेगा ? यही तो प्रश्न है ! खूब धूप निकलने पर ही तो सांप बांबी से निकलता है और तब हमे सावधानी से चलने की आवश्यकता पड़ती है। राजमुकुट पहनाया जायेगा ? इस प्रकार मै सोचता हूँ उसमे हमारे द्वारा डंक पैदा किये जा रहे है, ताकि

था, तब से मैं सोया ही नही हूँ। किसी भयानक कार्य के आरभ से उसके अत होने तक का समय कितना घृणित दु स्वप्न-सा होता है। तब तर्क और नैतिकता मे वाद-विवाद खडा होकर सघर्ष छिड जाता है और उस समय मनुष्य वैसा ही हो जाता है जैसे किसी राज्य मे भयानक विप्लव खडा हो गया हो।

[लूशियस का पुन प्रवेश]

**लूशियस :** श्रीमान् ! द्वार पर आपके बहनोई कैशस हैं जो आपसे मिलना चाहते हैं।

**ब्रूटस :** क्या वह अकेले हैं ?

**लूशियस :** नही श्रीमान् ! उनके साथ एक कोई और है।

**ब्रूटस** तू उन्हे जानता है ?

**लूशियस** नही श्रीमान् ! उनके टोप तो कानो तक झुके हुए हैं और आधे चेहरे चोगो में ढँके हुए हैं। ऐसा कोई चिह्न नही है कि मैं उन्हे पहचान सकूँ।

**ब्रूटस :** उन्हे आने दे।

[लूशियस का प्रस्थान]

**ब्रूटस** वे षड्यत्रकारी हैं। ओ षड्यत्र ! सारी बुराइयाँ जब स्वतत्र विचरण करती हैं, क्या तुम उस रात में भी अपनी भयानक भृकुटियाँ दिखाने मे लज्जित होते हो ? यदि यही सत्य है तो बताओ कि दिन में अपनी विकराल मुखाकृति छिपाने के लिये तुम्हे इतना सघन और व्यापक अधकार कहाँ मिलेगा ? अरे षड्यत्र ! मत ढूंढ कोई शरण ! तू अपने को विनम्रता और मुस्कराहट के चोगो में ही छिपाये रख ! क्योकि यदि अपनी-अपनी प्राकृतिक गतियो को छोड दिया गया तो याद रख कि नरक का घना अधकार भी तुझे छिपाते समय धुधला पड जायेगा

और तू उस पर भी चमक उठेगा !

[कैशस, कास्का, डेसियस, सिन्ना, मैटैलस सिम्बर और ट्रैबोनियस का प्रवेश ।]

कैशस . नमस्कार ब्रूटस ! मेरा ख़याल है, हमने आपकी नीद मे खलल डाला है। क्या हमने आपको कष्ट दिया है ?

ब्रूटस : नही। दरअसल मुझे रात भर नीद ही नही आई और मुझे जागे घटे भर से ज्यादा हुआ। क्या मै जान सकता हूँ कि तुम्हारे साथ आने वाले ये कौन लोग है ?

कैशस : हाँ, हर एक से मुलाकात कराऊँगा। इनमे से प्रत्येक तुम्हारा सम्मान करता है। और प्रत्येक चाहता है कि जो धारणा तुम्हारे बारे मे प्रत्येक रोम-निवासी मे है, वही तुममे भी अपने विषय मे जागृत हो। देखो । यह ट्रैबोनियस है।

ब्रूटस : स्वागत है।

कैशस : यह डेसियसब्रूटस है।

ब्रूटस . स्वागत !

कैशस : यह कास्का है, यह सिन्ना है और यह मैटैलस सिम्बर है।

ब्रूटस : मैं आपका स्वागत करता हूँ। ऐसी कौन-सी बड़ी चिंता है जिसने आपकी नीद को आपकी आँखो से छीन लिया है ?

कैशस . क्या मै आपसे एक बात कह सकता हूँ ?

[ब्रूटस और कैशस कानाफूसी करते है।]

डेसियस : यह पूर्व है। क्या इधर ही से सूर्य्य नही निकलता ?

कास्का : नही।

सिन्ना : क्षमा करे। इधर ही से निकलता है। बादलो मे जो सफेद-सी रेखाए दिखलाई पड़ती हैं यह इसी की सूचना है कि दिन निकलने वाला है।

कास्का : तुम यह मानोगें कि तुम दोनो ही गलती कर रहे हो ! सूर्य्य उधर ही से निकलता है जिधर मैं अपनी तलवार से इशारे कर रहा हूँ । आजकल वह दक्षिणाभिमुख होता है। आज से दो मास उपरात वह आकाश मे उत्तर को ओर चढ कर निकलेगा जिधर कि यहाँ से राजधानी है ।

ब्रूटस : (लौटकर) आओ, एक-एक कर तुम सब मुझसे हाथ मिलाओ।

कैशस : आओ ! हममे से प्रत्येक को अपने निश्चय के लिये शपथ खानी चाहिये ।

ब्रूटस . नही शपथ नही । यदि मनुष्यो के वेदनाग्रस्त मुख, हमारी आत्माओ की व्यथाए, युग की विकृतियाँ, स्वय हमे ही शपथ ग्रहण करने को प्रेरित नही करें तो हमे इस योजना को नष्ट करके ही रहना चाहिये, ताकि हममे से प्रत्येक घर जाकर सो रहे और अत्याचारो को इतना बढ जाने दे कि एक दिन अत मे एक-एक करके सभी उसके शिकार बन जायें। किंतु जैसा कि मुझे विश्वास है कि इनमे से प्रत्येक मे उतनी ही दृढता है कि जो निर्वीर्य्यों को भी स्फुरित कर दे, जो कोमला-कमनीया नारियो को भी वीरता का लौह कवच पहना दे, तो मेरे देशवधुओ ! हमारे उद्देश्य से बढकर हमें प्रेरणा देने की शक्ति और क्या हो सकती है ? वही हमे उद्धार की ओर आगे बढायेगी। एकात मे सम्मिलित रोम के निवासियो के लिये और किस बधन की आवश्यकता है ? उनका तो वचन ही बहुत है । ईमानदारी से बढ कर और कौन-सी ईमानदार सौगध हो सकती है ? या तो हम सब साथ खडे होगे, या साथ ही नष्ट हो जायेंगे—यही काफी है । शपथ तो पुरोहित, कायर और कुटिल, जघन्य, नीच, वृद्ध या अत्याचारो का स्वागत करने वाले निर्वल मनुष्य ग्रहण

करते हैं। जिनके विषय मे लोग शंका करते है वे ही अपनी कुटिलताओ को छिपाने के लिये सौगंध खाते है! किंतु हम अपने महान कार्य्य पर और अपनी स्वतत्र आत्मा पर शपथ के वधन वांधकर क्यो उन्हे लाछित करे? हमारे कार्य्य को, उद्देश्य को शपथ की कोई आवश्यकता नही है। की हुई प्रतिज्ञा मे से यदि कोई वीर रोम का निवासी तनिक भी विचलित होता है तो प्रत्येक रोम-निवासी के शरीर की प्रत्येक लहू की बूंद पाप का भाग धारण करती है।

कैशस : किंतु सिसरो के विषय मे क्या रहा? क्या उसको हम अपनी ओर मिलाने के लिये उसका मन टटोले? मेरा विचार है कि उसका हमसे मिलना हमारे लिये वहुत वड़ी शक्ति होगी।

कास्का : हमे उसे किसी प्रकार नही छोड़ना चाहिये।

सिन्ना : किसी भी हालत मे नही छोड़ना चाहिये।

मेंटैलस : उसे साथ लेना चाहिये। उसके श्वेत केश हमारे प्रति प्रजा मे सम्मान उत्पन्न कर देंगे। लोग हमारे कार्य्य की प्रशसा करेंगे। लोग कहेगे कि उस वयोवृद्ध की आज्ञा ने ही हमारे हाथो का सचालन किया। उसकी गभीरता मे हमारे यौवन का आवेश विल्कुल छिप जायेगा।

ब्रूटस : अरे उसका नाम मत लो। हमे उसे अपनी गुप्त वात नही वतानी चाहिये, क्योकि वह कभी दूसरो के द्वारा प्रारभ किये हुए किसी काम को नही करेगा।

कैशस : तो फिर उसे छोडो।

कास्का : सचमुच! वह साथ लिये जाने के योग्य ही नही।

डेसियस : क्या सीज़र के अतिरिक्त और किसी पर प्रहार नही होगा?

कैशस : डेसियस ने वहुत माकूल सवाल उठाया है। मेरे विचार से

सीज़र की मृत्यु के बाद मार्क ऐन्टोनी को जीवित छोड देना उचित नही होगा। वह सीज़र का अत्यत प्रिय पात्र है। वह फिर हमे बडे षड्यत्र रचता हुआ दिखाई देगा। उसके तो साधन भी आप जानते ही हैं कि यदि वह उनका प्रयोग करे तो वह उन्हे इतना फैला सकता है कि हम सबकी नाक मे दम आ जाये। इसी लिये यह सब रोकने के लिये सीज़र और ऐन्टोनी दोनो की हत्या साथ ही होनी चाहिये।

**ब्रूटस :** तब तो हमारा कार्य्य बहुत ही खूनी दिखाई पडेगा कैशस। सिर काट कर अगो के टुकडे-टुकडे करता हुआ जैसे कोई क्रुद्ध हत्यारा हो, ऐसे ही तो लगेंगे हमलोग, क्योकि ऐन्टोनी तो सीज़र का एक अग है। हमे एक पवित्र कार्य्य के लिये बलि देनी है, न कि हमे बधिक बनना है कैशस! हम सभी सीज़र की भावनाओ के विरुद्ध खड़े हुए हैं, हम लोगो की आत्मा मे हत्या की भावना नही है। कितना अच्छा होता यदि हम सीज़र की भावना पर विजय प्राप्त करते और हत्या करने की हमे आवश्यकता ही नही पडती? किंतु दुर्भाग्य से हमें सीज़र की हत्या ही करनी पडेगी। मेरे अच्छे दोस्तो! आओ हम वीरता से उसे मारें, न कि क्रोध के दास होकर। हम उसे देवताओ के लिये बलिदान बनायें न कि उसके मास को शिकारी कुत्तो के लिये आयोजित करें! आओ! हम अपने हृदय मे भावो को स्वामियो की भाँति कार्य्य पूर्ण हो जाने तक बुलाकर रहने दे और फिर उन्हे शात कर दें। इस प्रकार हम आवश्यकता की भावना से प्रेरित होगे, और साधारण व्यक्तियो को हम विद्वेप से परिचालित नही दिखाई देंगे। हम उद्धारक समझे जायेंगे, हत्यारे नही। और मार्क ऐन्टोनी! उसकी चिंता मत करो। जब सीज़र का ही

सिर नही रहेगा तो वह उसको भुजा ही तो है, कर भी क्या सकेगा ?

कैशस : फिर भी मैं उससे डरता हूँ क्योकि उसके हृदय में जो सीज़र के प्रति प्रेम है……

ब्रूटस : मेरे अच्छे कैशस ! उसकी चिंता छोड़ दो ! यदि वह सीज़र से प्रेम करता है तो वह इतना भर कर सकता है कि उसकी मृत्यु के उपरात स्वय भी मर जाये । किंतु वह यह सब नही कर सकेगा क्योकि वह खेलो का बहुत शौकीन है और सगति बहुत चाहता है, आवेशप्रिय है ।

ट्रैबोनियस . उससे कोई डर नही है। उसके मरने की कोई आवश्यकता नही है । क्योकि वह जीवित रहेगा और बाद मे इस पर हँसा करेगा ।

[गजर बजता है ।]

ब्रूटस : शात रह कर आवाज़ गिनो ।

कैशस : घडी ने तीन बजाये हैं ।

ट्रैबोनियस अब हमारे विदा होने का समय है ।

कैशस . किंतु अभी यह सदेहास्पद है कि सीज़र वहाँ आज जायेगा या नही क्योकि इधर कुछ दिनो से वह अधविश्वासी हो गया है और अब तक जो वह स्वप्न, कल्पनाओ तथा उत्सवों के विषय मे राय बनाये हुए था वे सब बदल गई है । यह हो सकता है कि वह इन प्रगट अपशकुनो मे, रात्रि की अस्वाभाविक भयकरता से या अपने ज्योतिषियो के आग्रह से रोका जा कर आज राजधानी ही नही आये !

डेसियस : इस बात का भय छोड़ दो । यदि ऐसा उसका निश्चय भी होगा तो मैं उसे बदल दूंगा । यूनीकार्न नामक जन्तु को वृक्षों

से धोखा दिया जा सकता है, रीछ को दर्पण से छला जा सकता है, हाथियो को गड्ढो मे धोखा दे कर पकडा जा सकता है, सिंहो को जाल मे फँसा कर धोखा दिया जा सकता है, मनुष्यो को चापलूसी से धोखा देना सभव है—ऐसी बातें सुनने का सीजर बहुत शौकीन है क्योकि वह दुनिया मे सबको नीचा समझ कर अपने को श्रेष्ठ समझता है। मैंने कहा कि आदमियो को चापलूसी से धोखा दिया जा सकता है किंतु सीज़र को नही क्योकि वह चापलूसी से घृणा करता है तो वह बोला 'हाँ मैं घृणा करता हूँ।' परतु सचाई यह है कि वह सबसे अधिक चापलूसी कराता है। अब यह काम मुझे करने दो, क्योकि उसकी निर्बलता का लाभ उठाना मेरा ही काम है। मैं उसे राजधानी ले आऊँगा।

**कैशस** नही, उसे लाने के लिये हम सभी वहाँ चलेंगे।

**ब्रूटस** आठ बजे ठीक रहेगा न ? या और देर मे ?

**सिन्ना :** हाँ, यही समय ठीक रहेगा। हम सबको इस समय तक वहाँ पहुँच जाना चाहिये।

**मैटैलस** कैस लिगारियस सीजर से बहुत घृणा करता है क्योकि उसने जब पोम्पी की प्रशसा की थी तो उसने बहुत कुछ बुरा-भला कहा था। मुझे ताज्जुब होता है कि आपमे से किसी ने भी उसके बारे में नही सोचा।

**ब्रूटस :** भद्र मैटैलस ! तुम अब उसके पास जाओ। वह विशेष कारणो से मेरा प्रेमी है। उसे मेरे पास भेज देना और उसे मैं अपनी ओर कर लूँगा।

**कैशस :** अब भोर हो रही है ब्रूटस ! हमलोग तुम्हे छोड कर जाते हैं। मित्रो ! अब तितर-बितर हो जाओ। किंतु जो तुमने कहा है उसे याद रखो और अपने को सच्चा रोम-निवासी प्रमाणित करना।

ब्रूटस . अच्छा मित्रो ! तेजस्वी और प्रसन्न दिखलाई दो। हमारी आँखो मे हमारा उद्देश्य न छलक आये ! कठोर आत्मसयम, गभीरता और शाति से सब कुछ धारण करो जैसे हमारे रोम के अभिनेता सब कुछ करते हैं। अच्छा नमस्कार।

[सबका प्रस्थान। ब्रूटस रह जाता है।]

ब्रूटस : अरे छोकरे ! लूशियस ! फिर सो गया ? गहरी नीद मे खो गया ? कोई बात नही, नीद की मधुरिमा का आनद ले ले। न तुझे कल्पना का भय है, न किसी व्याघात का। वे तो मनुष्यों के मस्तिष्क मे चिंता के कारण जन्म लेते हैं। सो ! तभी तो तू गहरी नीद की गोद मे सब कुछ भूल जाता है।

[ पोर्शिया का प्रवेश ]

पोर्शिया : मेरे स्वामी ब्रूटस !

ब्रूटस : कौन ? पोर्शिया ! तुम हो ! तुम अभी से क्यों जाग गईं ? तुम्हारे दुर्बल स्वास्थ्य के लिये यह हितकर नही होगा कि तुम सुबह की व्यापती ठंड मे इस तरह घूमो।

पोर्शिया : किंतु यह हवा तो तुम्हारे लिये भी उतनी ही हानिकारक है। तुम बड़ी निठुरता से चुपचाप मेरी शैय्या से उठ कर चले आये ब्रूटस ! और कल रात भी तुम अचानक उठ कर खाना छोड़ कर सीने पर हाथ बाँध कर टहलने लगे। क्या चिंता थी ! कैसी आहे भरते थे ! और जब मैंने पूछा कि क्या बात थी, तुमने अत्यत कठोरता से मेरी ओर देर तक घूरा था। जब मैंने अधिक पूछा तो तुम सिर खुजलाने लगे थे। और बड़े जोर से तुमने धरती पर पाँव पटका था। फिर भी मैंने पूछा तो तुमने उत्तर नहीं दिया और हाथ से क्रुद्ध हो कर इशारा किया कि मैं तुमको छोड़ कर चली जाऊँ। कही तुम्हारा क्रोध बढ न जाये इस भय

से उस समय मैं चली आई थी क्योकि मै समझ रही थी कि यह भी मनुष्यो का-सा क्षणिक क्रोध ही होगा। न यह तुम्हे खाने देता है, न बात करने देता है, न सोने ही देता है। जो तुम्हारे मुख और स्वभाव पर अपनी छाया डाल सकता है मेरे प्रिय स्वामी ब्रूटस! क्या मै तुम्हारे उस दुख का कारण नही जान सकती ?

**ब्रूटस** मेरी तबियत ठीक नही है, बस यही कारण है।

**पोर्शिया :** ब्रूटस बुद्धिमान व्यक्ति हैं। यदि उनका स्वास्थ्य ठीक नही होता तो वे अवश्य उसे ठीक करने के उपाय करते।

**ब्रूटस :** यही तो मैं कहता हूं पोर्शिया! तुम सोने जाओ न ?

**पोर्शिया :** यदि ब्रूटस अस्वस्थ होता तो क्या वह बिना कपडे पहने भोर की ओस की नमी और ठंड मे यो घूमता रहता ? यदि वह बीमार होता तो क्या रात मे चारपाई छोड कर रात की अशुद्ध वायु का सेवन करके बीमारी को बढाने के लिये बाहर आ जाना चाहिये था ? नही मेरे ब्रूटस! तुम्हे कोई मानसिक रोग हो गया है जिसे तुम्हारी अर्द्धांगिनी होने के नाते मुझे जानने का अधिकार है। मैं अपने जानु नत करके प्रार्थना करती हूँ, अपने उस अतीत के यौवन की, उस सौंदर्य की, उस प्रेम की और विवाह के समय को पवित्र प्रतिज्ञा की सौगध दे कर कहती हूँ कि तुम अपने दुखी होने का कारण अपनी पत्नी पोर्शिया को बता दो। और वे कौन लोग थे जो आज रात तुमसे मिलने आये थे ? वे छः या सात के लगभग थे और अंधेरे मे भी अपने चेहरो को छिपाये हुए थे।

**ब्रूटस** प्रिये पोर्शिया, उठो! घुटनो के बल मत बैठो।

**पोर्शिया** यदि तुम नम्र होते तो मुझे इसकी कोई आवश्यकता नही

होती ब्रूटस ! सच कहो ब्रूटस ! क्या विवाह सबध के नियमो के अनुसार मुझे यह अधिकार नही है कि मै तुम्हारे रहस्यो को जान सकूँ ? क्या मेरा और तुम्हारा साथ भोजनो मे, आराम मे और सोने के समय और कभी-कभी बात करने तक मे सीमित है ? क्या मुझे तुम्हारे हृदय पर अधिकार नही है—क्या मै उसके बाहर-बाहर ही बनी रहूँ ? यदि मै तुम्हारे रहस्यो को नही जान पाती तो क्या मैं तुम्हारी पत्नी हूँ ब्रूटस ! नही, तब तो मैं केवल रखैल हूँ।

ब्रूटस : तुम मेरी सच्ची और आदरणीया पत्नी हो। तुम मुझे उतनी ही प्रिय हो जितनी कि वे रक्त की लाल बूँदे जो मेरे विषण्ण हृदय तक पहुँचती हैं।

पोर्शिया · यदि यह सत्य है तो मुझे यह रहस्य जानना ही चाहिये। मै मानती हूँ कि मै स्त्री हूँ, किंतु हूँ तो ऐसी स्त्री जो श्रीमान् ब्रूटस की पत्नी है। मै स्त्री हूँ यह तो स्वीकार करती हूँ किंतु हूँ तो यशस्वी केटो की पुत्री ! ऐसे पति की पत्नी और ऐसे पिता की पुत्री हो कर भी क्या तुम समझते हो कि फिर भी मै अपनी स्त्री-जाति से अधिक सबल नही हूँ ? मुझे अपने रहस्य बताओ। मैं उन्हे प्रगट नही करूँगी। मैंने अपनी दृढता का परिचय स्वय अपनी जाँघ मे घाव करके दिया था। क्या मैं उसे शातिपूर्वक सह सकती थी और अपने ही पति के भेदों को गुप्त नही रख सकूँगी ?

ब्रूटस . ओ देवताओ ! मुझे अपनी कुलीन पत्नी के योग्य बनाओ !

[द्वार खटखटाने की ध्वनि]

सुनो ! सुनो ! कौन द्वार खटखटाता है। पोर्शिया, तनिक भीतर चली जाओ ! धीरे-धीरे तुम मेरे हृदय के सारे भेद जान

जाओगी। मै अपनी समस्त योजनाओ तथा मेरे मुख को उदासीन रखने के कारणो को बता दूँगा। इस समय शीघ्र भीतर चली जाओ।

[पोर्शिया का प्रस्थान]

लूशियस! दरवाजा कौन खटखटा रहा है?

[लूशियस और लिगारियस का प्रवेश]

**लूशियस :** यह एक बीमार आदमी हैं, ये आपसे बाते करना चाहते हैं।

**ब्रूटस** कैस लिगारियस! जिसके विषय मे मैटैलस ने कहा था। लूशियस, तुम जाओ। कैस लिगारियस! क्या बात है? इतने बीमार कैसे नजर आते हो?

**लिगारियस :** एक अस्वस्थ मनुष्य का प्रणाम स्वीकार करने की कृपा करिये।

**ब्रूटस** · उफ! वीर लिगारियस! तुमने भी बीमार पडने के लिये कौन-सा समय चुना है। काश तुम तन्दुरुस्त होते!

**लिगारियस** यदि ब्रूटस के पास कोई सम्माननीय महान कार्य्य मेरे योग्य है तो मैं बीमार नही हूँ।

**ब्रूटस** है। मेरे पास ऐसा ही काम है। बशर्त्ते तुममे उसके योग्य स्वास्थ्य और क्षमता हो।

**लिगारियस** रोम के निवासियो के समस्त पूज्य देवताओ की शपथ, मैं अपनी अस्वस्थता का परित्याग करता हूँ। वीर पुत्र! रोम के प्राण! पवित्र जननी के पुत्र! एक जादूगर की भाँति तुमने मेरी मृत चेतना को पुनरुज्जीवित कर दिया है। आज्ञा दो! मैं असभव को सभव कर दिखाऊँगा, बाधाओ को पराजित कर दूँगा। कहो क्या करूँ?

ब्रूटस : ऐसा काम है जो रुग्णों को स्वस्थ बना दे ।

लिगारियस : किंतु क्या कुछ आज के स्वस्थ प्राणी इसके परिणाम-स्वरूप रुग्ण नही हो जायेंगे ?

ब्रूटस : हां वह भी हमारे कार्य्य का एक भाग है । जो हो, राह चलने मे उसके घर की ओर जाते हुए मैं तुम्हें सब बताऊँगा, जिसका इससे सारा सबंध है ।

लिगारियस : चलो । नवीन रूप से जागृत हृदय लेकर मैं उस कार्य को करने तुम्हारे पीछे चलता हूँ जिसे मैं नही जानता । मेरे लिये यही काफी है कि ब्रूटस मेरा नेतृत्व कर रहा है ।

ब्रूटस : तो फिर मेरे साथ आओ ।

[प्रस्थान]

## दृश्य २

[रोम । सीज़र के प्रासाद का कमरा]

[बिजली और कड़क । सीज़र रात्रि-वस्त्र पहने प्रवेश करता है ।]

सीज़र : आज रात आकाश और पृथ्वी दोनो ही अधीर हो उठे हैं । तीन बार नींद मे कैल्पूर्निया चिल्लाई है : 'बचाओ । बचाओ ! वे सीजर की हत्या कर रहे हैं ! भीतर कौन है ?'

[एक सेवक का प्रवेश]

सेवक : प्रभु !

सीज़र : जा कर पुजारियो से कहो कि वे देवताओं को एक बलि प्रस्तुत करे । और कहाँ तक उन्हे सफलता मिलती है उसका समाचार लाओ ।

सेवक : जो आज्ञा स्वामी ।

[प्रस्थान]

[ कैल्पूर्निया का प्रवेश ]

**कैल्पूर्निया** सीज़र ! क्या आज तुम जाओगे ? नही आज तुम घर से हिलोगे भी नही ।

**सीज़र :** सीज़र अवश्य जायेगा । जो बाते मुझे भयभीत करना चाहती हैं वे मेरे सामने आ ही नही सकती। जब वे सीज़र का मुख देखेगी तो सब लुप्त हो जायेंगी ।

**कैल्पूर्निया** सीज़र ! मैंने कभी अपशकुनो मे विश्वास नही किया, किंतु आज मैं डर रही हूँ। जो कुछ हमने देखा-सुना है, उससे भी भयानक और विकराल बातें जानने वाला एक व्यक्ति इस समय घर के भीतर है जो एक ऐसे चौकीदार से सुन कर आया है, जिसने स्वय अपनी आँखो से देखा कि सडको पर एक सिंहनी बच्चो को जनकर गर्जना कर रही है, कब्रें खुल गई हैं और मुर्दे उनसे बाहर निकल पड़े हैं । भीषण अग्नि जैसे योद्धा मेघो मे लड रहे हैं और उनकी सेनाओ के तुमुल निनाद की प्रतिध्वनि उठ रही है । राजधानी पर उनका रुधिर बरस रहा है । अतराल में भयानक युद्ध का निनाद हुमक रहा है । घोडे हिनहिना रहे है, और मरते हुए घायल व्यक्ति कराह रहे हैं । राहो पर भूत-प्रेत चीखते-चिल्लाते घूम रहे हैं । ओ सीज़र ! यह सब नितात अस्वाभाविक है । इसीसे मुझे डर लग रहा है ।

**सीज़र** जिसका आयोजन महाबली देवताओ ने किया, उसे क्या रोका जा सकता है ? लेकिन सीज़र जायेगा ! यह अपशकुन तो ससार के लिये भी उतने ही बुरे हैं जितने कि सीज़र के लिये ?

**कैल्पूर्निया :** धूमकेतु भिखारियो की मृत्यु के लिये नही दिखाई देते । केवल राजकुमारो के लिये ही स्वय आकाश भी दाह से सुलग उठता है ।

सीजर : अपनी मौत से पहले कायर ही अनेक बार मरते हैं, किंतु वीर लोग केवल एक ही बार मृत्यु का आस्वादन करते हैं। आज तक जो आश्चर्यजनक बातें मैंने सुनी है, इन सबमें मुझे सबसे अधिक विस्मय इस बात पर होता है कि मनुष्य उस मृत्यु से भयभीत हो जो कि अवश्यम्भावी रूप से आयेगी और अपने निश्चित समय पर आ उपस्थित होगी।

[सेवक का पुनः प्रवेश]

सीज़र : जोतिषियो ने क्या विचार किया ?

सेवक : वे चाहते है कि आज आप घर से न निकलें क्योकि बलिपशु का शरीर खोलने पर उन्हे उसके भीतर हृदय ही नही मिला।

सीजर देवता इस प्रकार मनुष्य की भीरुता को धिक्कारते हैं। यदि भयभीत होकर सीज़र घर मे ही रह गया तो वह भी एक हृदय-हीन पशु की भाँति ही होगा। नही सीज़र नही रुकेगा। आज व्याघात जान ले कि सीजर स्वयं उससे भी अधिक भयानक है। आज भय जान ले कि हम दोनों का सिंहों की भाति एक ही दिन जन्म हुआ था और मै ही ज्येष्ठ हूँ, अधिक भयानक हूँ। और सीज़र अवश्य जायेगा।

कैल्पूर्निया : मेरे स्वामी! हाय! आपके विश्वास ने आपकी बुद्धि का हरण कर लिया है। आज मत जाइये। इसे मेरा ही भय मानिये, अपना नही, जो आपको घर ही मे रोके रखना चाहता है। हम सिनेट-गृह मे मार्क एन्टोनी को भेज देंगे। और वह कह देगा कि आज आपका स्वास्थ्य ठीक नही है। मैं जानुनत आपसे विनती करती हूँ कि मेरी प्रार्थना स्वीकार करिये।

सीजर : मार्क ऐन्टोनी कहेगा मे बीमार हूँ। तुम्हारी खुशी के लिये मै घर ही मे रह जाऊँगा।

[ कैल्पूर्निया का प्रवेश ]

**कैल्पूर्निया** सीज़र ! क्या आज तुम जाओगे ? नही आज तुम घर से हिलोगे भी नही ।

**सीज़र :** सीज़र अवश्य जायेगा । जो बातें मुझे भयभीत करना चाहती हैं वे मेरे सामने आ ही नही सकती । जब वे सीज़र का मुख देखेंगी तो सब लुप्त हो जायेंगी ।

**कैल्पूर्निया** सीज़र ! मैंने कभी अपशकुनो मे विश्वास नही किया, किंतु आज मैं डर रही हूँ । जो कुछ हमने देखा-सुना है, उससे भी भयानक और विकराल बातें जानने वाला एक व्यक्ति इस समय घर के भीतर है जो एक ऐसे चौकीदार से सुन कर आया है, जिसने स्वय अपनी आँखो से देखा कि सडको पर एक सिंहनी बच्चो को जनकर गर्जना कर रही है, कब्रें खुल गई हैं और मुर्दे उनसे बाहर निकल पड़े हैं । भीषण अग्नि जैसे योद्धा मेघो में लड रहे हैं और उनकी सेनाओ के तुमुल निनाद की प्रतिध्वनि उठ रही है । राजधानी पर उनका रुधिर बरस रहा है । अतराल मे भयानक युद्ध का निनाद हुमक रहा है । घोडे हिनहिना रहे हैं, और मरते हुए घायल व्यक्ति कराह रहे हैं । राहो पर भूत-प्रेत चीखते-चिल्लाते घूम रहे हैं । ओ सीज़र ! यह सब नितात अस्वाभाविक है । इसीसे मुझे डर लग रहा है ।

**सीज़र** जिसका आयोजन महाबली देवताओ ने किया, उसे क्या रोका जा सकता है ? लेकिन सीजर जायेगा ! यह अपशकुन तो ससार के लिये भी उतने ही बुरे हैं जितने कि सीज़र के लिये ?

**कैल्पूर्निया :** धूमकेतु भिखारियो की मृत्यु के लिये नही दिखाई देते । केवल राजकुमारो के लिये ही स्वय आकाश भी दाह से सुलग उठता है ।

सीज़र : अपनी मौत से पहले कायर ही अनेक वार मरते हैं, किंतु वीर लोग केवल एक ही वार मृत्यु का आस्वादन करते हैं। आज तक जो आश्चर्यजनक बातें मैने सुनी है, इन सवमे मुझे सबसे अधिक विस्मय इस बात पर होता है कि मनुष्य उस मृत्यु से भयभीत हो जो कि अवश्यम्भावी रूप से आयेगी और अपने निश्चित समय पर आ उपस्थित होगी।

[सेवक का पुन. प्रवेश]

सीज़र : जोतिषियो ने क्या विचार किया ?

सेवक : वे चाहते है कि आज आप घर से न निकले क्योकि बलिपशु का शरीर खोलने पर उन्हे उसके भीतर हृदय ही नही मिला।

सीज़र . देवता इस प्रकार मनुष्य की भीरुता को धिक्कारते हैं। यदि भयभीत होकर सीज़र घर मे ही रह गया तो वह भी एक हृदय-हीन पशु की भाँति ही होगा। नही सीजर नही रुकेगा। आज व्याघात जान ले कि सीज़र स्वयं उससे भी अधिक भयानक है। आज भय जान ले कि हम दोनो का सिंहो की भांति एक ही दिन जन्म हुआ था और मैं ही ज्येष्ठ हूँ, अधिक भयानक हूँ। और सीज़र अवश्य जायेगा।

कैल्पूर्निया : मेरे स्वामी! हाय! आपके विश्वास ने आपकी बुद्धि का हरण कर लिया है। आज मत जाइये। इसे मेरा ही भय मानिये, अपना नही, जो आपको घर ही मे रोके रखना चाहता है। हम सिनेट-गृह मे मार्क एन्टोनी को भेज देगे। और वह कह देगा कि आज आपका स्वास्थ्य ठीक नही है। मैं जानुनत आपसे विनती करती हूँ कि मेरी प्रार्थना स्वीकार करिये।

सीज़र : मार्क ऐन्टोनी कहेगा मं वीमार हूँ। तुम्हारी खुशी के लिये मैं घर ही मे रह जाऊँगा।

[डेसियस का प्रवेश]

यह डेसियस ब्रूटस आ गया ! यही वहाँ जाकर सब कुछ कह देगा ।

**डेसियस :** सीजर की जय ! मैं अभिवादन करता हूँ समर्थ सीजर ! मै तुम्हें सिनेट-गृह ले चलने आया हूँ ।

**सीज़र** : तुम बडे अच्छे मौके से आये । सिनेट के सदस्यो को मेरी शुभ कामनाए ले जाओ और उनसे कह देना कि आज मैं नही आऊँगा । मैं नही आ सकता, यह तो झूठ है, और यह भी झूठ है कि मुझमे जाने का साहस नही है । डेसियस, आज मैं नही आऊँगा, बस इतना ही कह देना ।

**कैल्पूर्निया :** कह देना वे बीमार है ।

**सीज़र** क्या सीज़र झूठी खबर भेजेगा ? क्या मैने विजय पर विजय पा कर इसलिये अपनी भुजाए इतनी विस्तृत-विशाल बनाई है कि वृद्धो से सत्य कहते हुए भयभीत होऊँ ? डेसियस ! जाओ कह दो, आज सीज़र नही आयेगा ।

**डेसियस :** परम समर्थ सीजर ! मुझे भी तो कोई कारण बताये, ताकि जब मै उन लोगो से जा कर कहूँ, वे मुझ पर हंस न पडें ।

**सीजर** कारण ! कारण मेरी इच्छा है । मैं नही आऊँगा । सिनेट को सतुष्ट करने को यही काफी है । किन्तु तुम्हारे व्यक्तिगत सतोष के लिये, क्योकि मैं तुम्हे चाहता हूँ, मैं तुम्हे बता दूंगा । यह मेरी पत्नी कैल्पूर्निया आज मुझे घर ही रोक रखना चाहती है । उसने रात मे स्वप्न मे मेरी मूर्त्ति को देखा है, जिसमे सैकड़ो छेद हो गये हैं और उनमे से लाल-लाल लहू सोतो की तरह वह रहा है और बहुत-से सतृष्ण रोम-निवासी युवक वहाँ हँसते हुए आकर उस रुधिर मे अपने हाथ धोते हैं । वह इससे यह

अभिप्राय निकाल रही है कि मेरे जीवन पर कोई आपत्ति आने वाली है, क्योंकि यह अपशकुन है। उसने जानुनत होकर मुझसे न जाने की प्रार्थना की है।

**डेसियस :** इस स्वप्न का तो गलत मतलब लगाया गया है। यह तो सौभाग्यसूचक स्वप्न है। तुम्हारी मूर्त्ति मे से कई धारो मे रुधिर वह रहा था जिसमे कितने ही मुस्कराते हुए रोम-निवासी हाथ धो रहे थे—यह सब तो इस बात का द्योतक है कि महान रोम देश तुमसे सदैव स्फूर्ति प्राप्त करेगा और असख्य मनुष्य तुम्हारे निकट एकत्र हो कर तुमसे चिन्हस्वरूप कुछ प्राप्त करके सम्मानित होगे। कैल्पूर्निया का स्वप्न यही सूचित करता है।

**सीज़र :** तुमने इस प्रकार इसका अच्छा अर्थ लगाया है।

**डेसियस :** जब आपने सुना है कि मैंने यह अर्थ निकाला है तो क्या कहूँ, केवल यही कि मैंने यही समझा है। सिनेट ने निश्चय किया है कि आज वह महान सीजर को राजमुकुट भेंट करेगी और यदि आज यह समाचार भेजा जायेगा कि मैं नही आऊँगा तो शायद उसके विचार बदल जायें। अतिरिक्त इसके कोई यदि यह कह कर उपहास करे कि 'सिनेट को तब तक स्थगित कर दो जब तक सीज़र को पत्नी को अच्छे सुपने न दिखाई दे!' तो!! यदि सीजर इस प्रकार अपने को छिपायेगा तो वे आपस मे कानाफूसी करेंगे 'लो सीज़र डर गया।' क्षमा करना सीज़र! आपके प्रति जो मेरे हृदय मे प्रेम है वही यह सब कहला रहा है। यदि यह प्रेम न होता तो मै क्यो कहता?

**सीज़र :** तुम्हारे भय कितने मूर्खतापूर्ण लग रहे है कैल्पूर्निया! मुझे इस बात की लज्जा है कि मैंने उन्हे मान लिया था। लाओ मेरे वस्त्र दो। मै जाऊँगा।

[पब्लियस, ब्रूटस, लिगारियस, मैटैलस, कास्का, ट्रैबोनियस और सिन्ना का प्रवेश]

और देखो। पब्लियस भी मुझे लेने आ गया है।

**पब्लियस :** नमस्कार सीज़र !

**सीज़र :** स्वागत पब्लियस ! अरे ब्रूटस ! आज तुम भी इतनी जल्दी उठ गये ? नमस्कार कास्का, कैशस, लिगारियस ! सीज़र कभी तुम्हारा इतना बडा शत्रु तो न था जितना यह ज्वर है जिसने तुम्हे निचोड कर रख दिया है। अब क्या समय है ?

**ब्रूटस :** आठ बजे हैं सीजर !

**सीज़र** आप लोगो ने जो कष्ट उठाया है, स्नेह दिखाया है, उसके लिये धन्यवाद देता हूँ।

[ऐन्टोनी का प्रवेश]

देखो एन्टोनी ! रात्रि मे देर तक आनद मनाने वाला भी इतना शीघ्र जाग गया ? नमस्कार ऐन्टोनी !

**ऐन्टोनी :** समर्थ सीजर को प्रणाम करता हूँ।

**सीजर :** अदर सबसे कह दो कि तैयार हो जाये। मैं इस बात का दोषी हूँ कि मैंने आप सव लोगो से इतनी प्रतीक्षा कराई। और सिन्ना, मैटैलस, ट्रैवोनियस ! मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं, जिसमे लगभग एक घटा लग जायेगा। याद रखो आज तुम मुझसे मिलना और मेरे पास ही रहना, ताकि मुझे याद रह सके।

**ट्रैबोनियस** मै ऐसा ही करूँगा। (स्वगत) मै तुम्हारे इतने निकट रहूँगा कि तुम्हारे प्रिय मित्र मुझे तुमसे जरा दूर रखना ही पसद करेंगे।

**सीज़र :** आओ, मित्रो ! भीतर चल कर मेरे साथ थोडी मदिरा पियो। फिर हम मित्रो की भाँति सीधे चले चलेंगे।

**ब्रूटस** : (स्वगत) अरे सीज़र ! हर वस्तु सदैव एक ही-सी नही बनी रहती, यह सोच कर ब्रूटस के हृदय को दुख हो रहा है ।

[प्रस्थान]

## दृश्य ३

[राजधानी के निकट एक गली । आर्टिमीडोरस का एक पत्र पढ़ते हुए प्रवेश]

**आर्टिमीडोरस** : 'सीजर ! ब्रूटस से सावधान रहना । कैशस से अपनी रक्षा करना । कास्का से दूर रहना । सिम्वर पर कड़ी दृष्टि रखना । ट्रैवोनियस का विश्वास न करना । मैटैलस सिम्वर पर तो विशेष दृष्टि रखना । डेसियस ब्रूटस को अपना मित्र न समझना । यह याद रखना कि तुमने कैस लिगारियस को क्रुद्ध किया है और वह हृदय में तुमसे विद्वेष रखता है । यह सब व्यक्ति एक ही मत के हैं और एक ही उद्देश्य से स्फुरित हैं, अर्थात् वे तुम्हारे विरुद्ध है । यदि तुम देवताओ की भाति अमर नही हो, तो अपनी देखभाल करना । आवश्यकता से अधिक आत्मविश्वास षड्यत्र का मार्ग प्रशस्त करता है । सर्वशक्तिमान देवगण तुम्हारी रक्षा करे । तुम्हारा हित चितक—आर्टिमीडोरस ।' जब तक सीजर यहाँ हो कर नहीं चला जायेगा मै यही खडा रहूँगा और उसके सहायक के रूप मे वह पत्र दे कर ही हटूंगा मानो मैने उसे केवल कोई अर्जी दी है । मुझे इसका दुख है कि अच्छाई ससार मे द्वेष के जबडो मे पड़े विना नही रह पाती । सीजर ! यदि तुम इसे पढ सकोगे तो शायद जीवित रह सकोगे । यदि यह पत्र तुम तक नही पहुंचता तो समझ लो

भाग्य भी षड्यन्त्रकारियो से जा कर मिल गया है।

[प्रस्थान]

## दृश्य ४

[रोम। ब्रूटस के घर के सामने उसी सड़क का एक और स्थान।
पोर्शिया और लूशियस का प्रवेश]

**पोर्शिया :** मैं तुझसे विनती करती हूँ रे बालक! दौड कर सिनेट-गृह जा। अब मुझे उत्तर देने को रुक मत! चला ही जा न? रुकता क्यो है तू?

**लूशियस :** देवी! मुझे तो बता दें। क्या सवाद दूँ?

**पोर्शिया :** कितना अच्छा होता जो तू मेरे काम के बतलाने के पहले ही जा के लौट भी आता? (स्वगत) ओ दृढता! मेरे साथ अडिग बनी रह! मेरे हृदय और मेरी जिह्वा के बीच एक भीम पर्वत आ जाये! मुझमे पुरुष की बुद्धि है, किंतु शक्ति तो स्त्री की ही है! स्त्री के लिये कोई भेद छिपाये रहना कितना कठिन है? (प्रगट) अरे अभी तू यही है?

**लूशियस** देवी! मुझे करना क्या है? क्या मैं राजधानी तक दौड कर जाऊँ और लौट आऊँ? बस यही काम है? और कुछ नही?

**पोर्शिया** हाँ, मुझे सवाद ला दे बालक कि तेरे स्वामी तो सकुशल हैं? जानता है न? वे गये थे तब अस्वस्थ थे? मुझे ठीक समाचार दे कि सीजर क्या कर रहे हैं? कौन लोग उनसे मिलने को तत्पर हैं? अरे बालक! यह कोलाहल क्यो हो रहा है?

**लूशियस :** नही देवी! मुझे कुछ सुनाई नही दे रहा!

**पोर्शिया** ध्यान से सुन न? मुझे कुछ झगडे की-सी आवाज तैरती सुनाई दे रही है जो राजधानी मे हो रहा लगता है।

**लूशियस :** नही देवी ! मैं कुछ भी सुन नही पा रहा हूँ।

[भविष्यवक्ता का प्रवेश]

**पोर्शिया :** इधर आ भाई ! तू किधर से आ रहा है ?

**भविष्यवक्ता .** देवी ! मैं अपने घर से ही आ रहा हूँ ।

**पोर्शिया :** अब क्या समय है ?

**भविष्यवक्ता :** अब नौ बजे के करीब हैं ।

**पोर्शिया .** क्या सीजर अब तक राजधानी पहुँच गये हैं ?

**भविष्यवक्ता .** नही देवी । अभी नही । मैं उन्ही को जाते हुए देखने 'को जा रहा हूँ ।

**पोर्शिया :** क्या तुझे उनसे कुछ प्रार्थना करनी है ?

**भविष्यवक्ता :** हा देवी ! ऐसा ही है । यदि वे कृपालुचित्त हो कर मुझे समय दे कर सुनेगे तो मै कहूँगा कि वे अपनी देखभाल ठीक से करे । अपनी उपेक्षा न करे ।

**पोर्शिया :** क्यो ? क्या तुम समझते हो कि कोई उन्हे हानि पहुँचाने का प्रयत्न कर रहा है ?

**भविष्यवक्ता :** मै नही जानता कौन उन्हे हानि पहुँचायेगा। फिर भी मुझे आशका है। आपको प्रणाम ! यहाँ सडक बहुत सँकरी है । सीज़र के साथ जो सिनेट के सदस्यो, न्यायाधीशो, पदाधिकारियो तथा साधारण व्यक्तियो की भीड़ जायेगी वह इस तग राह मे मुझ जैसे दुर्वल व्यक्ति को तो भीच के ही कुचल देगी । मै अब कुछ खुले हुए स्थान मे जाता हूँ । जब महान सीजर वहाँ पहुँचेगा तब मैं उससे कहूँगा ।

[प्रस्थान]

**पोर्शिया** मुझे भीतर जाना चाहिये । हाय री मैं, स्त्री का हृदय भी कितना दुर्वल होता है । आह ब्रूटस ! देवता तुम्हारे कार्य्य को

शीघ्र ही पूर्ण करें। शायद लड़के ने मेरी बात सुन ली है। ब्रूटस एक प्रार्थना करेगा जिसे सीजर स्वीकार नहीं करेगा। हाय ! मुझे चक्कर-सा आ रहा है।

लूशियस ! दौड़ कर मेरे स्वामी से मेरी शुभ कामनाएँ कह और यह भी कहना कि मैं ठीक हूँ। जो वे तुझसे कहे उसे मुझे शीघ्र ही आ कर बता।

[प्रस्थान]

# तीसरा अंक

## दृश्य १

[रोम । राजधानी । ऊपर सिनेट बैठी है । राजधानी की ओर जाने वाले पथ पर लोगों की भीड है । उस भीड में आर्टिमीडोरस और भविष्यवक्ता उपस्थित है । तूर्य्यनाद ।]

[सीजर, ब्रूटस, कैशस, कास्का, डेसियस, मैटैलस, ट्रैबोनियस, सिन्ना, ऐन्टोनी, लैपीडस, पौपीलियस, पब्लियस तथा अन्यों का प्रवेश ]

सीजर : (भविष्यवक्ता से) मार्च की १५ तारीख् आ गई ।

भविष्यवक्ता . हाँ सीजर ! किंतु अभी बीती तो नहीं है ।

आर्टिमीडोरस : सीजर की जय ! यह पत्र पढें ।

डेसियस : (सीजर से) ट्रैबोनियस विनती करता है कि आप उसके दीन प्रार्थनापत्र को अवकाश प्राप्त होते ही सबसे पहले पढ लें ।

आर्टिमीडोरस : ओ सीजर ! पहले मेरी अर्जी पढे, महान सीजर ! इसे पढें क्योंकि इसका सीजर से सम्बन्ध है ।

सीजर : जिसका मुझसे सम्बन्ध है उसे तो मैं सबके अत में ही पढ़ूँगा ।

आर्टिमीडोरस : देर न करे सीजर । इसे तुरन्त पढ ले ।

सीजर · क्या यह आदमी पागल है ?

पब्लियस : हटो-हटो । सीजर को रास्ता दो ।

कैशस : क्या तुम रास्ते मे अर्जी देना चाहते हो ? राजधानी मे आना ।

[सीजर राजधानी में सिनेट-भवन की ओर जाता है । सब पीछे जाते हैं । सब सिनेट के सदस्य खडे होते हैं ।]

पौपीलियस : मेरी कामना है, आज तुम्हारा कठिन कार्य्य पूर्ण हो ।

कैशस : कैसा कार्य्य पौपीलियस ?

शीघ्र ही पूर्ण करें। शायद लडके ने मेरी बात सुन ली है। ब्रूटस एक प्रार्थना करेगा जिसे सीजर स्वीकार नही करेगा। हाय ! मुझे चक्कर-सा आ रहा है।

लूशियस ! दौड कर मेरे स्वामी से मेरी शुभ कामनाएँ कह और यह भी कहना कि मैं ठीक हूँ। जो वे तुझसे कहे उसे मुझे शीघ्र ही आ कर बता।

[प्रस्थान]

# तीसरा अंक

## दृश्य १

[रोम। राजधानी। ऊपर सिनेट बैठी है। राजधानी की ओर जाने वाले पथ पर लोगों की भीड़ है। उस भीड़ में आर्टिमीडोरस और भविष्यवक्ता उपस्थित हैं। तूर्य्यनाद।]

[सीजर, ब्रूटस, कैशस, कास्का, डेसियस, मेटेलस, ट्रैबोनियस, सिन्ना, ऐन्टोनी, लैपीडस, पौपीलियस, पब्लियस तथा अन्यों का प्रवेश]

सीज़र : (भविष्यवक्ता से) मार्च की १५ तारीख आ गई।

भविष्यवक्ता . हाँ सीज़र ! किंतु अभी बीती तो नही है।

आर्टिमीडोरस : सीज़र की जय ! यह पत्र पढ़ें।

डेसियस : (सीजर से) ट्रैबोनियस विनती करता है कि आप उसः दीन प्रार्थनापत्र को अवकाश प्राप्त होते ही सबसे पहले पढ लें

आर्टिमीडोरस : ओ सीज़र ! पहले मेरी अर्ज़ी पढ़ें, महान सीज़र इसे पढें क्योंकि इसका सीज़र से सम्बन्ध है।

सीज़र : जिसका मुझसे सम्बन्ध है उसे तो मै सबके अंत मे ही पढ़ूँगा

आर्टिमीडोरस : देर न करें सीज़र। इसे तुरन्त पढ़ ले।

सीज़र : क्या यह आदमी पागल है ?

पब्लियस : हटो-हटो। सीजर को रास्ता दो।

कैशस : क्या तुम रास्ते में अर्ज़ी देना चाहते हो ? राजधानी में आन

[सीज़र राजधानी में सिनेट-भवन की ओर जाता है। सब पीछे जाते हैं सब सिनेट के सदस्य खड़े होते हैं।]

पौपीलियस : मेरी कामना है, आज तुम्हारा कठिन कार्य्य पूर्ण हो

कैशस : कैसा कार्य्य पौपीलियस ?

पौपीलियस : विदा ।

[सीजर के पास जाता है ।]

ब्रूटस पौपीलियस लेना ने क्या कहा ?

कैशस : उसने कामना की कि हमारा कठिन कार्य्य पूर्ण हो। मुझे डर है हमारा उद्देश्य प्रगट हो गया है ।

ब्रूटस : देखो-देखो ! वह सीजर की ओर कैसे जा रहा है ? उसे ध्यान से देखो ।

कैशस : कास्का । जल्दी करो । मुझे डर है कहीं विघ्न न पड जाये। ब्रूटस ! क्या होगा अब ! अगर यह सब भडाफोड हो गया तो या तो कैशस आज लौटेगा या सीजर ही । मैं तो आत्मघात कर लूँगा ।

ब्रूटस : कैशस ! धीरज धरो । पौपीलियस लेना हमारे कार्य्य के बारे मे कुछ भी नही कह रहा है क्योंकि वह मुस्कराता है और सीजर के मुख पर भी कोई विकृति नही आई है ।

कैशस : ट्रैबोनियस अपना कार्य्य जानता है। देखो न ब्रूटस ! वह मार्क ऐन्टोनी को रास्ते से अलग किये ले रहा है ।

[ऐन्टोनी और ट्रैबोनियस का प्रस्थान । सीजर तथा सिनेट के सदस्यों का आसन ग्रहण करना ]

डेसियस : मैटैलस सिम्बर कहाँ है, उसे भेजो । उसे सीजर के सामने इसी वक्त अपनी अर्जी रखनी चाहिये ।

ब्रूटस : वह तैयार है, उसके पास जाओ, उसे मदद दो ।

सिन्ना : कास्का ! सबसे पहले तुम्हे हाथ उठाना होगा ।

सीजर : क्या हम सब तैयार हैं ? क्या-क्या कमियाँ हैं जिन्हे सीजर और उसकी सिनेट को दूर करना है ?

मैटैलस : परमशक्तिवान् ! सर्वोच्च महान् बलशाली सीजर, मैटैलस

सिम्बर आपके सम्मुख अपनी तुच्छ प्रार्थना प्रस्तुत करने की आज्ञा चाहता है—

[झुकता है।]

सीज़र : सिम्बर ! झुकने से मैं तुम्हे रोकता हूँ। यह झुकना और यह विनम्र प्रार्थनाएँ साधारण मनुष्यों के रक्त को ही विचलित कर सकती हैं। वे ही वालकों की भाँति अपने प्रथम निर्णय और मूल आज्ञाओं से विचलित हो सकते हैं। यह सोचने का व्यर्थ श्रम न करो कि सीज़र की धमनियों में भी मूर्खों का-सा ही रक्त है जो इन चाटुकारिताओ से द्रवित हो जायेगा और अपने सद्‌गुणों से च्युत हो जायेगा। इन मूढ दिखावटों से मेरा मतलब चापलूसी से है। वे ही छलने का प्रयत्न करती हैं। तुम्हारे भाई का निर्वासन नियमों के अनुसार हुआ है। यदि तुम उसके लिये झुकते हो, प्रार्थना करते हो, चापलूसी पर उतरते हो, तो मैं तुम्हे एक कुत्ते की भाँति ही पथ से हटा दूँगा। याद रखो ! सीजर अन्याय नही करता और उचित कारण के बिना वह सतुष्ट भी नही होता।

मैटॅलस : क्या यहाँ मुझसे अधिक कोई योग्य व्यक्ति नही बोल सकता जिसके मधुर शब्द मेरे निर्वासित भाई के पक्ष मे उसके अपराध क्षमा करवा देने को महान सीज़र से अनुनय करें !

ब्रूटस : मैं तेरे हाथ को चूमता हूँ सीज़र ! यह चाटुकारिता नही है। मेरी प्रार्थना है कि पब्लियस सिम्बर को निर्वासित करके जिस स्वतन्त्रता का अपहरण किया गया है वह तुरन्त ही उसे लौटा दी जाये।

सीज़र : कौन ! ब्रूटस ! !

कैशस : क्षमा सीज़र ! क्षमा करें सीज़र ! कैशस तुम्हारे चरणों पर

पौंपीलियस : विदा।

[सीजर के पास जाता है।]

ब्रूटस पौंपीलियस लेना ने क्या कहा ?

कैशस : उसने कामना की कि हमारा कठिन कार्य्य पूर्ण हो। मुझे डर है हमारा उद्देश्य प्रगट हो गया है।

ब्रूटस : देखो-देखो ! वह सीजर की ओर कैसे जा रहा है ? उसे ध्यान से देखो।

कैशस : कास्का। जल्दी करो। मुझे डर है कही विघ्न न पड जाये। ब्रूटस ! क्या होगा अब ! अगर यह सब भडाफोड़ हो गया तो या तो कैशस आज लौटेगा या सीजर ही। मैं तो आत्मघात कर लूँगा।

ब्रूटस : कैशस ! धीरज धरो। पौंपीलियस लेना हमारे कार्य्य के बारे में कुछ भी नही कह रहा है क्योंकि वह मुस्कराता है और सीजर के मुख पर भी कोई विकृति नही आई है।

कैशस : ट्रैबोनियस अपना कार्य्य जानता है। देखो न ब्रूटस ! वह मार्क ऐन्टोनी को रास्ते से अलग किये ले रहा है।

[ऐन्टोनी और ट्रैबोनियस का प्रस्थान। सीजर तथा सिनेट के सदस्यों का आसन ग्रहण करना ]

डेसियस : मैटैलस सिम्बर कहाँ है, उसे भेजो। उसे सीजर के सामने इसी वक्त अपनी अर्जी रखनी चाहिये।

ब्रूटस : वह तैयार है, उसके पास जाओ, उसे मदद दो।

सिन्ना . कास्का ! सबसे पहले तुम्हे हाथ उठाना होगा।

सीजर : क्या हम सब तैयार हैं ? क्या-क्या कमियाँ है जिन्हे सीजर और उसकी सिनेट को दूर करना है ?

मैटैलस . परमशक्तिवान् ! सर्वोच्च महान् बलशाली सीजर, मैटैलस

सिम्बर आपके सम्मुख अपनी तुच्छ प्रार्थना प्रस्तुत करने की आज्ञा चाहता है—

[झुकता है।]

सीज़र : सिम्बर ! झुकने से मैं तुम्हें रोकता हूँ। यह झुकना और यह विनम्र प्रार्थनाएँ साधारण मनुष्यों के रक्त को ही विचलित कर सकती हैं। वे ही बालकों की भाँति अपने प्रथम निर्णय और मूल आज्ञाओ से विचलित हो सकते हैं। यह सोचने का व्यर्थ श्रम न करो कि सीज़र की धमनियों में भी मूर्खों का-सा ही रक्त है जो इन चाटुकारिताओ से द्रवित हो जायेगा और अपने सद्गुणों से च्युत हो जायेगा। इन मूढ दिखावटों से मेरा मतलब चापलूसी से है। वे ही छलने का प्रयत्न करती हैं। तुम्हारे भाई का निर्वासन नियमों के अनुसार हुआ है। यदि तुम उसके लिये झुकते हो, प्रार्थना करते हो, चापलूसी पर उतरते हो, तो मैं तुम्हें एक कुत्ते की भाँति ही पथ से हटा दूँगा। याद रखो ! सीजर अन्याय नही करता और उचित कारण के बिना वह सतुष्ट भी नही होता।

मैटेलस : क्या यहाँ मुझसे अधिक कोई योग्य व्यक्ति नही बोल सकता जिसके मधुर शब्द मेरे निर्वासित भाई के पक्ष मे उसके अपराध क्षमा करवा देने को महान सीज़र से अनुनय करें।

ब्रूटस : मैं तेरे हाथ को चूमता हूँ सीज़र ! यह चाटुकारिता नही है। मेरी प्रार्थना है कि पब्लियस सिम्बर को निर्वासित करके जिस स्वतन्त्रता का अपहरण किया गया है वह तुरन्त ही उसे लौटा दी जाये।

सीज़र : कौन ! ब्रूटस ! !

कैशस : क्षमा सीज़र ! क्षमा करें सीज़र ! कैशस तुम्हारे चरणों पर

गिर कर अनुनय करता है कि पब्लियस सिम्बर की स्वतन्त्रता उसे लौटा दी जाये।

**सीज़र :** यदि मैं तुम जैसा होता तो अवश्य ही तुम्हारी प्रार्थना से द्रवित हो जाता। यदि मै द्रवित करने को प्रार्थना किया करवाता तो अवश्य ही प्रार्थनाओ से विचलित हो जाता। किंतु मैं ध्रुव नक्षत्र की भांति अडिग हूं जिसकी दृढता और अचल पहिया की तुलना मे आकाश का कोई भी ज्वलत पिण्ड खडा नही होता। विशाल आकाश मे असख्य अग्निपिण्ड हैं किंतु वे केवल दीप्तिमात्र हैं, उनमे से कोई भी ध्रुवतारा की भांति जाज्वल्यमान नही है। इसी प्रकार यह लोक अस्थि-रक्त-मास के असख्य प्राणियो से भरा हुआ है, जिनमे मेधा भी है, किंतु मै उन सबमे केवल एक ही ऐसे प्राणी को जानता हूँ जो कि अचल और अडिग है और वह दृढ व्यक्ति मैं हूं। ठहरो। मुझे उसी दृढता को प्रदर्शित करने दो। सिम्बर को निर्वासित करते समय भी मै अडिग था और अब भो उसी भांति स्थिर हूँ।

**सिन्ना :** आह सीजर ..

**सीज़र :** क्या तुम देवताओ के निवास ओलिम्पस पर्वत को उठाने का साहस कर रहे हो ?

**डेसियस** महान सीजर

**सीज़र :** क्या ब्रूटस की प्रार्थना विफल नही हो गई ?

**कास्का :** मेरे हाथो ! बोलो ! मेरे लिये पुकार उठो !

[सीज़र के गले पर छुरा मारता है। सीज़र उसका हाथ पकड लेता है। तब अन्य षड्यत्रकारी उसे छुरो से गोदते हैं। अन्त में मार्क्स ब्रूटस छुरा मारता है।]

**सीज़र :** ब्रूटस ! तुम भी! सीजर! तब मौत भी तेरे लिये अच्छी है!

[मृत्यु]

सिन्ना : स्वतन्त्रता ! मुक्ति ! अतिचार का ध्वंस हुआ ! जाओ ! गली-गली मे तुरन्त घोषणा कर दो !

कैशस : जाओ ! सभा-केन्द्रो से पुकार उठो—स्वतन्त्रता ! मुक्ति ! लौह स्वर से उगल उठो—अतिचार का ध्वंस हुआ !

ब्रूटस : सिनेट के सदस्यो ! प्रजाजनो ! भयभीत मत हो ! भागो मत ! ठहर जाओ ! महत्त्वाकाक्षा का ऋण चुका दिया गया।

कास्का : ब्रूटस ! भाषण देने की वेदी पर चढो।

डेसियस : कैशस ! तुम भी !

ब्रूटस : पब्लियस कहाँ है ?

सिन्ना : यह रहा ! वह विप्लव से स्तम्भित रह गया है।

मैटैलस : एक होकर दृढ बने रहो। कही सीजर का कोई मित्र अचानक···

ब्रूटस : रुकने की बात न करो। पब्लियस ! बधाई है। कोई तुम्हारे ऊपर आक्रमण नही करेगा। अब किसी रोमवासी पर आघात नही होगा। पब्लियस सबसे चिल्लाकर कहो।

कैशस : चले जाओ पब्लियस। कही हम पर प्रजा के आघात की चपेट मे तुम जैसे वयोवृद्ध न आ जायें।

ब्रूटस : यही करो। इस कार्य्य का फल ,किसी और को न भोगना पड़े। हम ही इसके लिये उत्तरदायी हैं।

[ट्रैवोनियस का पुनः प्रवेश]

कैशस : ऐन्टोनी कहाँ है ?

ट्रैवोनियस : स्तम्भित-सा वह घर भाग गया है। पुरुषो, स्त्रियों और वालकों की आँखे फटी की फटी रह गई है। सभी चिल्ला कर इधर-उधर ऐसे भाग रहे हैं जैसे प्रलय की वेला आ गई हो !

ब्रूटस भाग्य की दैवी शक्तियो ! हम तुम्हारी इच्छा से अवगत है, हम जानते हैं कि एक दिन हम भी मरेंगे। किंतु लोक के प्राणी वह राह खोजते है जिससे जीवन की अवधि दीर्घ हो सके।

कैशस : मेरी राय मे जो कोई आयु को बीस वर्ष घटाता है वह मृत्यु-भय के अनेक वर्ष भी तो घटा देता है ?

ब्रूटस : यदि यही ठीक है कि मृत्यु मनुष्य के लिये उपकार है तो हम सीजर के मित्र है क्योकि हमने मृत्यु के आतंक का समय उसके लिये घटा दिया है। रोम के निवासियो, झुको, आओ झुको और सीजर के रुधिर से हाथो को कुहनियो तक भिगो लो। उसके रक्त से अपने खड्गो को रजित कर लो और फिर बढो ! हाट मे चतुष्पथो पर रक्तरजित अपने लाल-लाल आयुधो को सिर के ऊपर उठा कर हिला कर पुकार उठो—मुक्ति ! शाति ! स्वाधीनता !

कैशस : आओ, झुको और रक्त से स्नान करो ! कितने अनजाने युगो, तक आज के इस महान दृश्य का कितने अज्ञात देशो और अविदित भाषाओ में अभिनय होता रहेगा !

ब्रूटस : कौन जानता है कि कितनी बार अभिनयो मे सीजर का लहू बहेगा। मुट्ठीभर धूलि की भाँति सीजर आज पोम्पी की मूर्त्ति के चरणो पर धराशायी है।

कैशस : और जब-जब लोग इस दृश्य को दुहरायेंगे, इतिहास हमारे लिये पुकारा करेगा कि ये हैं वे मनुष्य जिन्होने अपने देश को स्वाधीनता दिलाई।

डेसियस . क्या हम अब बाहर चलें ?

कैशस : हाँ, हर एक को जाना होगा। ब्रूटस ! नेतृत्व करो ! हम तुम्हारा अनुसरण करेंगे। रोम के परम वीर और कुलीनतम

हृदय वाले व्यक्तियो के साथ हम तुम्हारे पीछे चलेंगे ।

[एक सेवक का प्रवेश]

ब्रूटस : शात ! वह कौन आ रहा है ! ऐन्टोनी का मित्र है !

सेवक : मेरे स्वामी ने मुझे आज्ञा दी है कि मै पहले आपके सामने घुटने टेकूं और तब, मेरे स्वामी मार्क ऐन्टोनी ने कहा है कि पृथ्वी पर लेट कर आपको प्रणाम करना और प्रार्थना करूँ कि ब्रूटस मेधावी, कुलीन, सरल हृदय और वीर है। सीजर सर्व-शक्तिमान, राजसी, स्नेही, विभवान्वित और परम वीर था। जा कर कहना कि मैं ब्रूटस से स्नेह करता हूं, उसका सम्मान करता हूं, और कहना कि मैं सीज़र से भीत रहता था, उसका सम्मान करता था, उसे प्यार करता था। यदि ब्रूटस प्रतिज्ञा करे कि ऐन्टोनी उस तक सुरक्षित आ सकता है तो वह उससे पूछेगा कि सीज़र किन कारणों से हत्या कर देने के योग्य प्रमाणित हुआ ? मार्क ऐन्टोनी यह जान लेने पर मृत सीज़र से नही, जीवित ब्रूटस से प्रेम करने लगेगा। सच्चे हृदय से वह, ब्रूटस को नयी परिस्थिति मे कैसे भी विघ्न क्यो न उपस्थित हो, सहायता देगा; राज्य के कार्य्यों मे सहयोग देगा। मेरे स्वामी मार्क ऐन्टोनी ने यही सवाद आपसे कहलवाया है।

टस : तेरा स्वामी महानगर रोम का एक वीर और बुद्धिमान निवासी है। मैंने उसे कभी भी बुरा नही समझा है। उससे कह दे कि यदि वह यहां आना चाहे तो आ जाये। वह यहां आ कर संतुष्ट हो जायेगा। और मैं अपने आत्मसम्मान की शपथ खा कर कहता हूं कि उसे कोई स्पर्श भी नही करेगा।

सेवक : मैं उन्हे अभी लाता हूं।

[प्रस्थान]

**ब्रूटस** में जानता हूँ वह हमारा मित्र बन जायेगा।

**कैशस** यही मै भी चाहता हूँ। किंतु फिर भी मेरे मन मे उसके वारे मे बडी शका है। मेरी शकाएँ सदैव सत्य होती हैं।

**ब्रूटस** . वह लो ऐन्टोनी आ गया। आओ! मार्क ऐन्टोनी। मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ।

**ऐन्टोनी** : अरे परम शक्तिमान् सीजर! आज तुम यहाँ इतने नीचे पडे हुए हो! क्या तुम्हारी ये दिग्विजय, वैभव, गौरव, महिमा और विजितो से प्राप्त कोष इस दीन दशा मे आकर सीमित हो गये हैं? महावीर! बिदा! महानुभावो! मैं नही जानता आप क्या करना चाहते है? और कौन है जिसका लहू अभी वहाना शेष है? कौन है जो आपके आघात के लिये उपयुक्त है! यदि मैं ही हूँ तो सीजर की मृत्यु के समय से उपयुक्त और कोई समय नही हो सकता, न आपके खड्गो से बढकर मुझे मारने के उपयुक्त कोई अन्य आयुध हैं क्योकि सारे ससार के सर्वश्रेष्ठ रक्त ने उन्हे अमरता का वैभव दे दिया है। यदि आपको मुझमे कुछ विद्वेष है तो मैं अनुनय करता हूँ कि इन्ही रक्त से भीगे हुए हाथो से, इन्ही लोहू की धारा से उत्तप्त हाथो से मेरी हत्या करके अपने आपको प्रसन्न करें। चाहे मुझे हजार वर्ष क्यो न जीवित रहना पडे किंतु मृत्यु के लिये ऐसा उपयुक्त अवसर सभव है मुझे कभी भी नहीं मिल सकेगा। मृत्यु का कोई मार्ग, कोई स्थान मुझे ऐसी तृप्ति नहीं देगा जैसा कि सीजर का सान्निध्य! मेरे युग के निर्माताओ, प्रभुओ, आओ! मेरे टुकडे-टुकडे कर डालो!

**ब्रूटस** : ओ ऐन्टोनी! हमसे मृत्यु की प्रार्थना मत करो! हम अपने इस कार्य्य से, अपने हाथो से अवश्य खूनी और हत्यारे दिखाई

देते हैं किंतु तुम केवल हमारे हाथो को देख रहे हो। लहू की धारें गिराने वाले इन हाथो को नही, हमारे हृदयो को देखो। उन्हे क्यो नही देखते ? देखो उनमे कितनी करुणा है, सार्वजनिक रूप से रोम के प्रति किये हुए अन्याय से हमे कितनी व्याकुलता है ? अग्नि अग्नि को दूर करती है उसी प्रकार रोम के प्रति हमारी दया ने सीजर के प्रति हमारी दया को नष्ट कर दिया है। किंतु मार्क ऐन्टोनी ! तुम्हारे लिये हमारे खड्ग भौंथरे पड गये है। अब हमारी भुजाओ में द्वेष नही, मैत्री ने हमारे हृदयो को वधु-भाव से ग्लपयित कर दिया है। आओ, स्वागत है। हमारे स्नेह, सद्भावनाओ और सम्मान को स्वीकार करो।

कैशस : तुम्हारा मत नये गौरव प्रदान करते समय किसी भी योग्य व्यक्ति की भाँति समर्थ होगा।

ब्रूटस . कुछ देर ठहर जाओ, जब तक इस प्रजा की भयभीत भीड़ को हम अभय नही प्राप्त करा देते। उसके वाद मै तुम्हे वताऊँगा कि मैं जो सीजर को इतना चाहता था, स्वय मैने ही उस पर आघात करने का ऐसा कार्य्य क्यो किया ?

ऐन्टोनी : मुझे तुम्हारी बुद्धिमत्ता पर तनिक भी शका नही है। आओ, तुममे से हर एक अपना लहू से भीगा हुआ हाथ मुझसे मिलाओ ! मार्क्स ब्रूटस ! सबसे पहले तुम मुझे अपना हाथ दो। आओ कैस कैशस, तुम इसके वाद आओ। डेसियस ब्रूटस, आओ, आओ मेरे भद्र ट्रैबोनियस ! सर्व महानुभावो ! हाय ! मै क्या कहूँ ? मेरा यश कैसी फिसलनी धरती पर खडा है ? या तो तुम मुझे कायर समझ रहे होगे या चापलूस ! यह सत्य है सीजर ! कि मै तुझसे प्रेम करता था, यदि तेरी आत्मा इस

समय देख रही होगी तो क्या मृत्यु से भी अधिक यातना उसे यह देखकर नही होगी कि तेरा ऐन्टोनी तेरे शत्रुओ के रक्त-रजित हाथो से हाथ मिला कर मित्रता कर रहा है, और वह भी हे परम वीर ! तेरे शव के समुख ही ? यदि मेरे उतनी ही आँखें होती जितने तेरे शरीर पर घाव दीख रहे हैं, तो उनमे से उतने ही आंसू वहते जितना तेरे घावो से लोहू टपक रहा है ! यदि यह हो जाता तो तेरे शत्रुओ से मित्रता करने की अपेक्षा तो कही अच्छा होता। मुझे क्षमा कर जूलियस ! वीर ! हरिण की भाँति तुझे यहाँ लाया गया और यही तेरी हत्या की गई। यही तेरे अहेरी खडे हैं, जिनके हाथ तेरे रक्त से रगे हुए हैं। तेरे रुधिर ने उनको प्रगट कर दिया है। ओ ससार ! तुम उसके लिये जगल के समान थे। एक दिन तुममें ही वह स्वतत्र घूमा करता था, उस दिन वह तुम्हारे जीवन का स्रोत था ! और आज वही सीजर राजन्यो द्वारा आखेट किये हुए मृग की भाँति पडा है।

कैशस : मार्क ऐन्टोनी !

ऐन्टोनी : क्षमा करो कैस कैशस ! सीज़र के शत्रु भी ऐसा ही कहेगे और एक मित्र के द्वारा कहे हुए ये शब्द प्रेम की प्रशसा के शब्द हैं।

कैशस : मैं सीजर की प्रशसा करने पर तुम्हे दोष नही देता ! किंतु तुम्हारा अव हमसे क्या सवध होगा ? हम अपने मित्रो मे तुम्हे भी एक समझें या अपने मार्ग पर चलें और तुम पर निर्भर नही रहे ?

ऐन्टोनी : मित्र वनने के लिये ही तो मैंने तुमसे हाथ मिलाया है। सचमुच क्षण भर को नीचे सीज़र की ओर देख कर मै अपने पथ

से विचलित हो गया था। मित्रो ! मै तुम सबके साथ हूँ, तुमसे प्रेम करता हूँ, किंतु इसी आशा पर कि तुम बताओगे कि सीज़र क्यो और किस तरह इतना खतरनाक था !

ब्रूटस : अन्यथा तुम हमारे कार्य्य को बर्बरता समझना, हमारे कारण इतने ठोस है कि ऐन्टोनी ! यदि तुम सीज़र के पुत्र भी होते तो भी सतुष्ट हो जाते।

ऐन्टोनी : बस यही मै चाहता हूँ। इस समय मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे नगर के चौक में उसके शव को ले जाने दें ताकि मित्र का कर्त्तव्य निर्वाह करते हुए मैं उसकी दाह-क्रिया के सबंध मे लोगो से बातचीत कर सकूँ।

ब्रूटस : मार्क ऐन्टोनी ! तुम इसे ले जा सकते हो !

कैशस : ब्रूटस ! मै तुमसे एक बात करना चाहता हूँ। (ब्रूटस से एक ओर) तुम नही जानते तुम क्या कर रहे हो। इस बात को स्वीकार मत करो कि उसकी दाह-क्रिया के समय ऐन्टोनी प्रजा से बातें कर सके। क्या तुम जानते हो कि जो वह कहेगा उससे लोगों पर क्या असर होगा ?

ब्रूटस : मुझे क्षमा करो। मै स्वयं मच पर से पहले प्रजा को बताऊँगा कि किन कारणो से सीज़र मारा गया। जो कुछ ऐन्टोनी कहेगा, मैं पहले ही जनता से कहूँगा कि वह मेरी आज्ञा से कह रहा है और हम सब इसे स्वीकार करते हैं कि सीज़र की दाह-क्रिया पूर्ण संस्कारो के साथ संपन्न हो। इससे तो हमे हानि के स्थान पर लाभ ही अधिक पहुँचेगा।

कैशस : मैं नही जानता इसका नतीजा क्या होगा। परंतु मैं इसे पसंद नही करता।

ब्रूटस : सुनो मार्क ऐन्टोनी ! तुम सीज़र के शरीर को ले जाओ।

अपने दाह-क्रिया-सबधी भाषण मे तुम हमे किसी प्रकार दोषी नही ठहराओगे । हाँ सीजर की चाहे कितनी प्रशसा कर सकते हो और कहना कि वह सब तुम हमारी आज्ञा से कह रहे हो । अन्यथा तुम्हे किसी भी भाति उस सबमे सम्मिलित नही किया जायेगा । ज्योही मेरा भाषण समाप्त हो, तुम उसी मच से भाषण दोगे । जहाँ मैं जा रहा हूँ, वही चलो ।

**ऐन्टोनी :** मैं यही करूँगा । मेरी और कोई अभिलाषा नही है ।

**ब्रूटस :** तो शव को तैयार कर लो और हमारे पीछे आओ ।

[ऐन्टोनी के अतिरिक्त सबका प्रस्थान]

**ऐन्टोनी :** (जहाँ सीजर का शव धूलि-सिक्त पडा है उस भूमिभाग को देख कर) ओ लोहू से भीगी हुई धरती ! मुझे क्षमा कर कि मैं इन बधिको से इतनी नम्रता और धैर्य्य से व्यवहार कर रहा हूँ। तू निश्चय ही ससार के किसी भी सुवर्ण-युग मे उत्पन्न होने वाले सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति का खडहर मात्र है। उस हाथ को धिक्कार है जिसने यह बहुमूल्य रक्त पृथ्वी पर गिराया है। ये तेरे घाव मुझे बोल उठने को उकसा रहे हैं। लाल-लाल होठो वाले एक मूक मुख की भाँति पुकार उठने को आतुर-से तेरे इन घावो के सामने आज मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि इन लोगो पर एक भयानक अभिशाप उतरेगा। समस्त इटली मे भीषण गृहयुद्ध की आग जलेगी और सारा देश विप्लव से काँपेगा। हत्या, विध्वस और रक्तपात का इतना आधिक्य हो उठेगा कि माताएँ, सग्राम-भूमि के कठोर योद्धाओ के हाथो से अपने दुधमुँहे बच्चो को कट-कट कर गिरता देख कर भी केवल मुस्कराती रहेगी क्योकि उनकी कोमलता जड हो चुकेगी। इन बर्बरताओ के असख्य कार्य्यों के कारण दया का चिन्हमात्र भी शेष नही रहेगा। और

प्रतिशोध की भूखी सीजर की आत्मा, नरक की दाहपूर्ण अग्नियो से निकली हुई प्रतिहिसा की देवी के साथ घूमती फिरेगी। और वह विकराल देवी साम्राज्ञी की भाँति समस्त देश मे फूत्कार भरती पुकारती डोलेगी कि ध्वस कर दो! सर्वनाश कर दो! विप्लव, अकाल, अग्निदाह आदि युद्ध के रक्तलोलुप कुत्ते कर्कश स्वर से भोकते हुए टूट पड़ेगे। सारी पृथ्वी सड़ते हुए शवो की चिरायध से ढँक जायेगी और दाह-सस्कार के लिये तडपते हुए, दम तोडते हुए प्राणी भयानक हाहाकार करते हुए पड़े रहेगे।

[एक सेवक का प्रवेश]

क्या तू ऑक्टेवियस सीजर का ही तो सेवक नही है?

**सेवक** : हाँ मार्क ऐन्टोनी!

**ऐन्टोनी** सीज़र ने उसे रोम आने को लिखा था।

**सेवक** . उन्हे पत्र मिल गया है। वे आ रहे हैं। उन्होने मुझसे कुछ मुँहजवानी खबर आपको भिजवाई है ··

[शव को देख कर]

ओ !! सीजर !!

**ऐन्टोनी** : तेरा हृदय भर आया है। उधर हट जा और जी भर कर रो ले। व्यथा घेरे ले रही है क्योकि तुझे रोता देख कर मेरी आँखो मे भी वेदना की बूँदें छलकती आ रही है। क्या तेरे स्वामी आ रहे हैं?

**सेवक** : आज रात वे रोम से २१ मील दूरी पर आ जायेंगे।

**ऐन्टोनी** : तुरत तू शीघ्रता से चला जा और जो कुछ घटना हुई है उन्हे शीघ्र वता दे। रोम व्यथा मे डूब गया है, रोम खतरनाक हो उठा है। अभी ऑक्टेवियस के लिये रोम सुरक्षित स्थान नही हैं। शीघ्र जा और उन्हे सूचना दे। यही कह दे कि, लेकिन अभी

ठहर। जब तक इस शव को मैं अपने साथ चौक में न ले जाऊँ तू मेरे पास रह। वहाँ मैं भाषण देकर पहले इसकी जाँच करूँगा कि जनता इन हत्यारो के इस क्रूर कार्य्य को कैसा समझती है। उसी के अनुसार तू तरुण ऑक्टेवियस को जा कर सारी परिस्थिति समझाना। आ अब हाथ बँटा।

[सीज़र के शव के साथ उनका प्रस्थान]

## दृश्य २

[रोम। चौक]

[ब्रूटस और कैशस का नागरिकों की एक भीड़ के साथ प्रवेश]

**नागरिकगण :** हमें सतोष क्यो हो ? कारण दो कि हम सतुष्ट हो।

**ब्रूटस :** तो मित्रो, मेरे साथ आओ और जो कुछ मैं कहूँ उसे ध्यान से सुनो। कैशस ! तुम दूसरी सडक पर जाओ। और भीड को बाँट दो। जो मुझे सुनना चाहे वे यही रुक जायें। जो कैशस के साथ जाना चाहे वे उधर चले जायें। सीज़र की मृत्यु के कारण सार्वजनिक रूप से प्रगट किये जायेंगे।

**एक नागरिक :** मैं ब्रूटस की बात सुनूँगा।

**दूसरा नागरिक :** मैं कैशस की बात सुनूँगा और तब इनके कारणो की तुलना की जायेगी, जब अलग से हम इस पर विवेचन करेंगे।

**तीसरा नागरिक :** शात ! शात ! कुलीन वीर ब्रूटस ! मच पर पहुँच गया है।

**ब्रूटस :** अत तक धैर्य्य से सुनना ! रोम के निवासियो ! मेरे मित्रो ! मेरे देशवासियो ! मेरे कारणो को जानने के लिये मुझे सुनो ! शाति से मुझे अपना ध्यान दो कि तुम स्पष्ट सुन सको। मेरे आत्मसम्मान के लिये मुझ पर विश्वास करो, मेरे आत्मसम्मान का

आदर करो कि तुम्हे मेरी बातों पर विश्वास हो सके । अपनी तर्क-बुद्धि से मेरा निर्णय करो । अपनी भावनाओ को जाग्रत करो ताकि तुम उचित रूप से न्याय कर सको । यदि इस सभा में सीज़र का कोई प्रिय मित्र हो तो उससे मै कहता हूँ कि उससे किसी प्रकार भी सीज़र के प्रति ब्रूटस का प्रेम कम नही था । यदि वह मित्र यह जानना चाहे कि ब्रूटस सीज़र के विरुद्ध क्यों खड़ा हुआ तो सुनो मेरा यही उत्तर है : यह नही कि मैं सीज़र से कम प्रेम करता था, बल्कि वास्तव मे मुझे रोम से कहीं अधिक प्रेम था । क्या चाहते हो तुम ? किसे अच्छा समझते हो ? कि सीज़र जीवित रहता और तुम सब दासो की भांति मरते, या यह कि सीज़र मर गया ताकि तुम सब स्वतत्र व्यक्तियों की भाँति जीवित रह सकोगे ? मैं उसके लिये रोता हूँ क्योकि सीज़र मुझसे प्रेम करता था । आनद मुझमे उद्वेलित होता है क्योकि वह भाग्यशाली था । मैं उसका सम्मान करता हूँ क्योकि वह दुर्धर्ष पराक्रमी था, किंतु मैंने उसे मार डाला क्योकि वह महत्वाकांक्षी था । उसके प्रेम के लिये अश्रु बहुत हैं, सौभाग्य के लिये हर्ष बिखरता है, वीरता के लिये सम्मान झुकता है किंतु महत्त्वाकांक्षा के लिये मृत्यु, मृत्यु है । कौन है यहां ऐसा जघन्य नराधम जो स्वेच्छा से दास होना पसंद करेगा ? यदि कोई है तो बोले ? उसे मैंने अवश्य दु.ख पहुँचाया है । कौन है यहां इतना असंस्कृत जो रोम का निवासी, रोम का नागरिक बनना पसद नही करता ? यदि कोई है तो बोले । मंने अवश्य उसे दुःख पहुँचाया है । ऐसा कौन कुटिल और नोच है जो अपने देश को नही चाहता, अपने देश से प्रेम नही करता ? यदि कोई है तो बोले ! मंने अवश्य उसे दु.ख पहुँचाया है । बोलो ! मुझे उत्तर दो । मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ ।

सब : नही ब्रूटस ! ऐसा कोई नही है । ऐसा कोई नही है ।

ब्रूटस तब मैंने किसी को भी दुखी नही किया है । मैंने सीजर के साथ उससे अधिक कुछ नही किया जो आप ब्रूटस के साथ करते । सीजर की मृत्यु की घटना राजधानी के कागजो मे लिख कर रखी जायेगी । उसके गौरव को किसी भी प्रकार कम नही किया जायेगा । उसकी जितनी योग्यता थी वह लिखी ही जायेगी और उसके अपराध भी, जिनके कारण उसे अन्त मे मृत्यु प्राप्त हुई, बढा-चढा कर नही लिखे जायेंगे ।

[ऐन्टोनी तथा अन्यों का सीजर के शव के साथ प्रवेश]

यह लो ! सीजर का शव भी आ गया । मार्क ऐन्टोनी शोक मना रहा है । यद्यपि सीजर की मृत्यु मे ऐन्टोनी का कोई हाथ नही था फिर भी उसकी मृत्यु का लाभ वह भी उठायेगा। उसको भी सार्वजनिक सघ मे स्थान मिलेगा । आपमें से कौन है जिसे ऐसा लाभ नही प्राप्त होगा ? बस । अब मुझे केवल इतना ही कहना है कि जिस प्रकार मैंने अपने सबसे बडे प्रेमी को रोम की भलाई के लिये मारा है, उसी प्रकार जब भी कभी देश को मेरी मृत्यु की आवश्यकता होगी तब वही छुरा अपने लिये भी मैं उसी प्रकार सुरक्षित रखूँगा ।

सब : अमर हो ! ब्रूटस ! अमर हो !

एक नागरिक हम ब्रूटस को विजयी की भाँति उसके घर ले चलेंगे ।

दूसरा नागरिक उसके पूर्वजो के साथ उसकी भी मूर्त्ति बनवानी चाहिये।

तीसरा नागरिक : उसे सीज़र बनाओ ।

चौथा नागरिक : सीज़र के गुण ब्रूटस मे ही सम्मानित होगे ।

एक नागरिक चलो हम जयध्वनियो के साथ उसे घर पहुँचा आयें।

ब्रूटस : मेरे देशवासियो

दूसरा नागरिक . शात ! चुप रहो ! ब्रूटस बोल रहे है।
एक नागरिक : अरे शात ! शात !
ब्रूटस : मेरे स्वदेशबन्धुओ ! मुझे अकेला लौटने दो। मेरे कहने से मार्क ऐन्टोनी के साथ ठहरो। सीजर के शव का सम्मान करो। उसके मुख से सीजर के गौरव का वर्णन सुनो जो मार्क ऐन्टोनी हमारी आज्ञा से तुम्हे सुनायेगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि सिवाय मेरे जब तक ऐन्टोनी बोल न चुके, तुममे से एक भी व्यक्ति यहाँ से न जाये।

[प्रस्थान]

एक नागरिक ठहरो-ठहरो। मार्क ऐन्टोनी को सुनो।
तीसरा नागरिक : उसे ऊपर मच पर जाने को कहो। हम उसका भाषण सुनेगे। वीर ऐन्टोनी ऊपर जाओ।
ऐन्टोनी : मै आपका और ब्रूटस का बहुत ही आभारी हूँ।

[मच पर चढता है।]

चौथा नागरिक वह ब्रूटस के बारे मे क्या कहता है ?
तीसरा नागरिक : वह कहता है कि यह हम सबका और ब्रूटस का आभारी है।
चौथा नागरिक · यह उसकी ही भलाई के लिये है कि वह ब्रूटस के विरुद्ध कुछ न बोले।
एक नागरिक . यह सीजर अत्याचारी था।
तीसरा नागरिक : हाँ, यह बिल्कुल ठीक बात है। अच्छा हुआ रोम को उससे मुक्ति मिली।
दूसरा नागरिक : शान्त रहो ! सुनो-सुनो ! मार्क ऐन्टोनी की बात सुनने दो।
ऐन्टोनी : रोम के भद्र निवासियो...
नागरिक गण : शात ! शात ! हमे उसे सुनने दो।

**ऐन्टोनी :** रोम के निवासियो ! मेरे मित्रो ! मेरे देशबन्धुओ । सुनो ! मेरी बात को सुनो ! मैं सीजर का दाह-सस्कार करने आया हूँ न कि उसकी प्रशसा करने ! मनुष्य की मृत्यु के उपरात उसके गुण तो प्राय उसके दाह के साथ ही समाप्त हो जाते है, किंतु उसके अवगुण बहुत दिनो तक जीवित रहते हैं। सीज़र के गुणो को इसी गति को प्राप्त होने दो। वीर ब्रूटस ने आपसे कहा है कि सीज़र महत्त्वाकाक्षी था। यदि ऐसा ही था तो वह एक भयानक अपराध था और भीषण रूप से सीज़र ने उसका मोल भी चुकाया है। यहाँ ब्रूटस और अन्यो की आज्ञा से---क्योकि ब्रूटस एक परम सम्मानित और आदरणीय पुरुष है, क्योकि वे सब, सब ही परम आदरणीय व्यक्ति हैं—मैं सीजर की दाह-क्रिया के सम्बन्ध मे आपसे कुछ कहने आया हूँ। वह मेरा मित्र था, वह मेरे लिये न्यायशील था, कृतज्ञ था, किंतु ब्रूटस कहता है कि वह महत्त्वाकाक्षी था और ब्रूटस एक परम सम्मानित और आदरणीय पुरुष है। सीज़र अनेक देशो से बन्दियो को पकड कर रोम लाया था, जिनके लिये शत्रुओ द्वारा चुकाये गये मूल्य ने रोम के सार्वजनिक कोषो को समृद्ध किया था। क्या यही सीज़र की महत्त्वाकाक्षा प्रतीत होती है ? कौन नही जानता कि दीन-दुखियो की करुण पुकार सुन कर सीज़र रो उठता था। महत्त्वाकाक्षा तो कठोरता और निर्दयता को जन्म देती है ! लेकिन ब्रूटस कहता है कि वह महत्त्वाकाक्षी था और ब्रूटस एक परम सम्मानित और आदरणीय पुरुष है। तुम सबने देखा था कि लूपरिकल के उत्सव मे मैंने तीन बार उसे ताज़ दिया था किंतु उसने तीनो वार उसे लेने से इकार कर दिया था। क्या यह भी महत्त्वाकाक्षा थी? फिर भी ब्रूटस कहता

है कि वह महत्त्वाकाक्षी था और निश्चय ही ब्रूटस एक परम आदरणीय और सम्मानित पुरुप है। मै ब्रूटस के वक्तव्य को असत्य सिद्ध करने को नही बोल रहा हूँ, मै तो जो जानता हूँ उसे ही आपसे कह रहा हूँ। एक दिन आप सब उससे प्रेम करते थे। क्या वह अकारण ही था ? कौन-सा है वह कारण जो आज आपको उसकी मृत्यु पर शोक मनाने से रोक रहा है? ओ न्यायशक्ति! तू किन हिंस्र पशुओ मे पहुँच गई है! और मनुष्यो ने अपना तर्क खो दिया है ? मेरी वेदना के लिये मुझे क्षमा करिये क्योकि मेरा हृदय उस कफन मे सीज़र के शव के पास पहुँच गया है। ठहर जाओ! मुझे फिर से धैर्य्य धारण करने दो!

एक नागरिक : मेरे विचार से उसकी बातो मे तथ्य है।

दूसरा नागरिक : यदि ठीक तरह से इस पर सोचा जाय तो लगता है कि सीजर के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया गया है।

तीसरा नागरिक : आइये, यदि ऐसा हुआ है तो इसका अर्थ है कि अब उसकी जगह कोई और बडा अत्याचारी आयेगा।

चौथा नागरिक उसके शब्दो पर ध्यान दिया ? वह ताज नही लेना चाहता था। इससे तो प्रगट है कि वह महत्त्वाकाक्षी नही था।

एक नागरिक . यदि यह सत्य है तो किसी को इसका मँहगा मूल्य चुकाना पडेगा।

दूसरा नागरिक . देखो इस बिचारे को। कैसी रो-रोकर आँखे अगारे-सी लाल हो गई हैं।

तीसरा नागरिक . ऐन्टोनी से बढ कर महान रोम में कोई नही!

चौथा नागरिक : सुनो-सुनो। वह फिर बोलने वाला है।

ऐन्टोनी : कल तक सीज़र के मुख से निकला हुआ शब्द ससार को

चुनौती देता था, किंतु आज वह यहाँ पडा हुआ है। आज वह इतना दीन हो गया है कि तुममे से कोई भी उसका सम्मान तक नही कर रहा ? मेरे बन्धुओ ! यदि मै तुम्हारे विवेक और हृदय को क्रोध और विप्लव से विह्वल करने की इच्छा करूँगा तो वह ब्रूटस के साथ अच्छा नही होगा, कैशस के साथ बुराई करने के समान होगा। तुम जानते हो, वे परम आदरणीय और सम्मानित व्यक्ति हैं। मै उनके साथ अन्याय नही करूँगा। मै ब्रूटस तथा ऐसे अन्य सम्मानित और परमादरणीय व्यक्तियो के विरुद्ध कुछ भी कहने के स्थान पर यही पसन्द करूँगा कि इस मृत शरीर के प्रति अन्याय करूँ, अपने प्रति अन्याय करूँ, आप लोगो के प्रति अन्याय करूँ। किंतु यह देखिये ! सीज़र का एक मुद्राङ्कित पत्र है। इसमें उसकी वसीयत है। इसे मैने उसके कमरे मे पाया है। ओ प्रजाजनो ! मुझे क्षमा करो कि मै इसे पढ कर नही सुनाऊँगा क्योकि मेरे इसे पढने ही आप लोग सीज़र के शव के समीप जा कर उसे आदर से चूमने लगेगे, उसके पवित्र रक्त से अपने रूमालो को भिगो लेंगे, और प्रार्थना करेंगे कि स्मृति उसकी जीवित रखने के लिये आपको उसके सिर का एक बाल ही मिल जाये। आप प्रार्थना करेंगे कि आपके मरते समय आप अपनी वसीयत मे यही लिख जायें कि वह बाल आपकी सतान को एक पैतृक सपत्ति की भांति ही उत्तराधिकार मे प्राप्त हो।

**चौथा नागरिक** हम इस वसीयत को सुनेंगे मार्क ऐन्टोनी, पढ कर सुनाओ।

सब वसीयत पढो ! वसीयत पढो ! हम सीज़र की वसीयत को सुनना चाहते है !

ऐन्टोनी : धैर्य धारण करो मेरे मित्रो! मुझे इसे नहीं पढना चाहिये। तुम्हारे लिये यह उचित नही होगा कि तुम अपने प्रति सीजर के प्रेम को जान लो। तुम पत्थर नही हो, अचेतन काठ नही हो। तुम मनुष्य हो और मनुष्य होने के नाते, सीजर की वसीयत सुनने पर, तुम भडक उठोगे। यह तुम्हे क्रोध से पागल वना देगी। अच्छा यही है कि आप लोग यह जाने ही नही कि आप ही सीजर के उत्तराधिकारी हैं। क्योकि यदि आप इसे जान गये तो पता नही क्या परिणाम निकलेगा!

चौथा नागरिक : वसीयत पढो! हम उसे सुनना चाहते है ऐन्टोनी! तुम्हे वसीयत पढ कर हमे सुनानी ही होगी। सीजर की अन्तिम इच्छा बताओ!

ऐन्टोनी : धैर्य धारण करिये! शात रहिये! रुकिये तो सही! आपको वताते-वताते मै वहुत आगे वढ गया हूँ। मुझे डर है कि मैं परम आदरणीय और सम्मानित व्यक्तियो के प्रति अन्याय कर रहा हूँ; उनके विरुद्ध वोल रहा हूँ जिनके छुरो ने सीज़र के शरीर को गोद दिया है। मुझे डर लग रहा है।

चौथा नागरिक . वे देशद्रोही हैं! सम्मानित और आदरणीय पुरुप!!

सव . वसीयत! वसीयत पढो।

दूसरा नागरिक : वे कुटिल नराधम हत्यारे है! वसीयत सुनाओ! वसीयत पढो!

ऐन्टोनी : आप लोग मुझे वसीयत पढने के लिये विवश करते है! तो सीजर के शव के चारो ओर गोला वनाकर खड़े हो जाओ। और पहले मुझे उसे दिखाने दो जिसने यह वसीयत लिखी है? क्या मैं मंच से उतर सकता हूँ? आज्ञा है?

सव नागरिक : आ जाओ!

**एक नागरिक** उतर आओ !

**तीसरा नागरिक :** तुम्हे पूर्ण स्वतन्त्रता है ।

[ऐन्टोनी उतरता है ।]

**चौथा नागरिक :** गोला बनाओ । घेर कर खडे हो ।

**एक नागरिक** कफन से अलग रहो । शव से हट कर खडे हो ।

**दूसरा नागरिक** ऐन्टोनी के लिये जगह करो । आओ वीर ऐन्टोनी !

**ऐन्टोनी** · नही । आप मुझसे ज़रा हट कर खडे हो !

**सब :** हटो-हटो । पीछे खडे हो । जगह दो । पीछे हटो ।

**ऐन्टोनी** यदि तुम्हारे नयनो मे अश्रु शेष हैं, तो आओ, अब अपने हृदयो को द्रवित करने को तत्पर हो जाओ ! इस चोगे को आप सब पहँचानते है ? मुझे याद है सीजर ने इसे जब पहले पहल पहना था । वह ग्रीष्म-काल की एक सध्या थी, वह अपने शिविर मे था उस दिन उसने नर्वी[1] को पराजित किया था । देखो ! यह है वह जगह जहाँ कैशस का छुरा घुसा था । देखो ! ईर्ष्यालु कास्का ने कितना गहरा घाव किया है । सीज़र के अत्यत प्रिय पात्र ब्रूटस ने इस जगह लौह फलक घुसेड दिया था और जब उसका वह अभिशप्त छुरा बाहर निकला था तब देखो ! सीज़र का रक्त कैसा झर-झर कर बह उठा था ! मानो सोता फूट निकला हो ! मानो वह यह जानना चाहता था कि क्या ब्रूटस ने ही वह निर्दय आघात किया था ? जानते हो न ? ब्रूटस ही सीज़र का पथ-प्रदर्शक था । वह उसे देवदूत मानता था । ओ देवताओ ! आकाश के स्वामियो ! तुम साक्षी हो कि सीज़र ब्रूटस से कितना प्रेम करता था । यही, हाँ यही आघात सारे आघातो से अधिक निर्मम था, क्योकि जब महान सीज़र ने उसे भी छुरा

---

मारते हुए देखा तब षड्यन्त्रकारियो की भुजाओ से भी अधिक मर्मान्तिक वेदना-दायिनी उस अकृतज्ञ कृतघ्नता ने सीज़र के हृदय को अवसाद मे डुबा दिया और उसका विशाल हृदय उस समय आर्त्त पीड़ा से खड-खड हो गया। उस समय शोक, भय नही, शोक से व्याकुल हो कर उसने अपने चोगे को अपने चेहरे पर लपेट कर अपनी आँखो को छिपा लिया क्योकि ऐसा दारुण विश्वासघात देखना उसके लिये असह्य हो गया था। और तब पोम्पी की मूर्त्ति के चरणो के समीप, जब कि उसके शरीर से रक्त की धाराएँ गिर रही थी, सीजर, महान सीज़र गिर पड़ा। मेरे देशवासियो! आह! कैसा था वह पतन! उस समय मानों मैं और तुम और सब ही एक साथ ही गिर पड़े। और रक्त से भीगा हुआ हत्यारा विश्वासघात हमारे ऊपर रौंद कर चढ़ गया। क्यो रोते हो! अब रो कर भी क्या होगा? क्या करुणा तुम्हारे मर्म को विदीर्ण कर रही है? रक्त की बूँदें है कि कृतज्ञता द्रवित हो रही है? द्रयार्द्र आत्माओ! क्या तुम सीजर के फटे हुए वस्त्र को देख कर ही इस प्रकार फूट-फूट कर रो रहे हो? इधर देखो! यह रहा वह स्वय! देखते हो आघातो से विकृत देह! पड़ा है यहाँ। किसने मारा है इसे! विश्वासघाती! देशद्रोहियों ने।

एक नागरिक कितना करुण दृश्य है।

दूसरा नागरिक : हाय! सीज़र महान!

तीसरा नागरिक . हाय रे दुर्दिन!

चौथा नागरिक · अरे धूर्त्त देशद्रोहियो!

एक नागरिक . कितनी निर्दय हत्या हुई है।

दूसरा नागरिक : हम इसका प्रतिशोध लेंगे!

**सब :** प्रतिशोध ! उठो ! बढो ! जला दो ! भस्म कर दो । मारो ! वध कर दो ! एक भी देशद्रोही जीवित न रहे !

**ऐन्टोनी** · ठहरो मेरे देशवासियो !

**एक नागरिक :** शात-शात । वोर ऐन्टोनी को सुनो !

**दूसरा नागरिक** बोलो ! बोलो ! हम इसके साथ चलेंगे। हम इसके इशारे पर जान देंगे !

**ऐन्टोनी :** मेरे अच्छे मित्रो ! मेरे दयालु मित्रो ! नही, मैं तुम्हे इस प्रकार अकस्मात् ही विप्लव की बाढ मे बहाना नही चाहता। जिन्होने यह कार्य्य किया है वे परम आदरणीय और सम्मानित व्यक्ति है। मैं नही जानता उनका सीज़र से क्या व्यक्तिगत विद्वेष था जो उन्होने ऐसा कार्य्य किया। वे बुद्धिमान है, वे परम आदरणीय और सम्मानित हैं। निश्चय ही वे तुम्हे अपने कृत्य का कारण भी बतायेंगे। मित्रो ! मैं तुम्हे अनुचित रूप से प्रभावित करने नही आया हूँ। ब्रूटस की भाँति मैं वक्ता भी नही हूँ। तुम सबको ज्ञात है कि मैं एक सीधा-सादा व्यक्ति हूँ। मैं दुराव नही जानता। मैं अपने मित्र से प्रेम करता हूँ। और इसे वे भी जानते है, जिन्होने मुझे प्रजा मे बोलने का अधिकार दिया है। न मुझमे वुद्धि है, न चातुर्य्य ! न मै शब्दजाल जानता हूँ, न मुझमे वक्तृता की शक्ति ही है। कोई योग्यता नही, कोई मेरे पास कार्य्य-कुशलता भी नही है कि मै मनुष्यो के लोहू को खौला सकूँ ! जिसे आप स्वय जानते है वही मैंने आपके सामने सीधी-सादी भाषा मे व्यक्त किया है। मैंने तो आपको केवल प्रिय सीज़र के घाव दिखाये हैं जो गूगे मुखो की भाँति मुझको वोलने के लिये प्रेरित कर रहे हैं। किंतु यदि मैं ब्रूटस होता या ब्रूटस मेरे स्थान पर खड़ा होता तो मैने आपकी चेतना को

झकझोर कर रख दिया होता कि सीजर का प्रत्येक घाव मुँह खोल कर पुकारने लगता, जिसका आवाहन सुन कर महानगर रोम के हृदयहीन पाषाण तक विक्षुब्ध विद्रोहियो की भाँति विप्लव के लिये सन्नद्ध हो कर गरजने लगते ।

सब : विप्लव ! विद्रोह ! हम विद्रोही है !

एक नागरिक : हम ब्रूटस के घर को धू-धू करके जला देंगे ।

तीसरा नागरिक : चलो ! आगे बढो ! षड्यन्त्रकारियो को ढूँढो ।

ऐन्टोनी : मेरे देशवासियो ! सुनो ! अभी मेरी बात समाप्त नही हुई।

सब : शात ! शात ! ऐन्टोनी बोल रहा है ।

वीर ऐन्टोनी बोल रहा है ।

ऐन्टोनी : मेरे मित्रो ! आप ऐसा काम करने चल पड़े है कि अभी आप समझ भी नही रहे है । सीजर ने आपका इतना स्नेह पाने योग्य क्या किया है ? कैसा दुःख है कि आप नही जानते । आइये मैं बताऊँ । क्या आप उस वसीयत के बारे मे सब कुछ भूल गये हैं ?

नागरिक : अरे हाँ ! वसीयत ! सुनो ! रुको ! पहले वसीयत को तो सुनो ।

ऐन्टोनी : यह है वह वसीयत ! देखो सीजर की मुद्रा से अकित है । वह प्रत्येक रोम के नागरिक को देता है--प्रत्येक नागरिक को ७५ मुद्राएँ ।[1] ७५ द्राख्मा !

दूसरा नागरिक : उदार महान सीजर ! दानी सीजर ! हम उसकी हत्या का प्रतिशोध लेंगे !

तीसरा नागरिक : राजराज सीज़र !

---

१ ७५ द्राख्मा = ३ पाउंड ।

**ऐन्टोनी :** शाति से मेरी बात सुनो !

**नागरिक .** सुनो-सुनो !

**ऐन्टोनी :** इसके अतिरिक्त अपने उद्यान, अपने कुञ्ज, अपने फलो से लदे नये उपवन, जो टाइबर नदी के इस ओर हैं, वे सब उसने आपको दिये हैं। आपको, आपकी सतान को, सदा के लिये दिये है, सार्वजनिक आनद के लिये दिये हैं कि आप उनमे विहार कर सकें और हर्ष तथा मगल मनाया करें। यह था एक सीज़र ! क्या ऐसा दूसरा हो सकेगा ?

**एक नागरिक** कभी नही, कभी नही होगा। चलो-चलो ! हम पवित्र स्थान मे उसके शव का दाह-सस्कार करे और चिता की धधकती लकडियाँ लेकर षड्यत्रकारियो के घरो को जला दें। चलो, शव को ले चलें।

**दूसरा नागरिक :** जाओ, अग्नि लाओ !

**तीसरा नागरिक :** लकडियाँ एकत्र करो।

**चौथा नागरिक :** चलो हम आसन, कुर्सी, खिडकियाँ और जो हाथ लगे तोड लाये।

[शव के साथ नागरिकों का प्रस्थान]

**ऐन्टोनी** आग फूट निकली है। बढने दो इस विप्लव की ज्वाला को। धधकने दो।

[एक सेवक का प्रवेश]

कौन ? तू है ? क्या बात है ?

**सेवक :** श्रीमान् ! ऑक्टेवियस रोम मे आ भी गये है।

**ऐन्टोनी :** कहाँ हैं वे ?

**सेवक** ' वे और लैपीडस सीज़र के भवन मे है।

**ऐन्टोनी :** मैं भी सीधे वही जा कर उनसे मिलता हूँ। कैसे मौके से

सक्षिप्त, विवेकपूर्ण और सच-सच उत्तर दूँ ? विवेकपूर्ण मै कहता हूँ कि मैं कुंवारा हूँ

**दूसरा नागरिक** : तुम्हारा कहने का मतलब तो यह हुआ कि जो विवाह करते हैं वे मूर्ख हैं? इसके लिये एक कडी तुम्हे मेरे हाथो झेलनी होगी । और बोलो । सीधे ।

**सिन्ना** : सीधे ! मै सीजर के दाह-सस्कार मे जा रहा हूँ ।

**एक नागरिक** दोस्त की तरह या दुश्मन की तरह ।

**सिन्ना** : दोस्त की तरह ।

**दूसरा नागरिक** . यह तो सीधा उत्तर हुआ ।

**चौथा नागरिक** : अपने निवास के बारे मे—सक्षेप मे

**सिन्ना** सक्षेप मे मै राजधानी के पास रहता हूँ ।

**तीसरा नागरिक** . और जनाब आपका नाम, सच-सच !

**एक नागरिक** : इसके टुकड़े-टुकडे कर दो ! यह षड्यत्रकारी है !

**सिन्ना** : मैं कवि सिन्ना हूँ, मै कवि सिन्ना हू ।

**चौथा नागरिक** . तब इसे इसकी बुरी कविताओ के लिये टुकडे-टुकडे कर दो !

**सिन्ना** . मै षड्यत्रकारी सिन्ना नही हूँ ।

**चौथा नागरिक** उससे क्या होता है । उसका नाम तो है । इसके हृदय को फाड कर उसका नाम निकाल लो और फिर हम इसे जोड देंगे ।

**तीसरा नागरिक** : मारो ! काट डालो इसे ! जलती लकडियाँ ले कर चलो ! ब्रूटस, कैशस, सबको जला दो ! कुछ डेसियस के घर जाओ, कुछ कास्का के, कुछ लिगारियस के । चलो ! आगे बढो!

[ प्रस्थान ]

# चौथा अंक

## दृश्य १

[रोम । एन्टोनी के घर का एक कमरा]

[ऐन्टोनी, ऑक्टेवियस और लैपीडस एक मेज के चारो ओर बैठे हैं।]

ऐन्टोनी : तो इन सबको मृत्यु ही देनी होगी। यह है इनके नाम।

ऑक्टेवियस : क्या कहते हो लैपीडस ! तुम्हारे भाई का नाम भी इस सूची मे है। तुम स्वीकार तो करते हो ?

लैपीडस : करता हूँ · ···

ऑक्टेवियस : लिख लो ऐन्टोनी, उसका भी नाम।

लैपीडस : लेकिन शर्त्त यह है कि पब्लियस को भी मृत्युदण्ड मिलेगा मार्क ऐन्टोनी ! वह तुम्हारा भाञ्जा है ?

ऐन्टोनी : वह तो नही ही रहेगा। देखो ! उसका नाम तो मैंने पहले ही लिख रखा है। लेकिन लैपीडस ! तुम सीजर के घर जाओ। और उसकी वसीयत ले आओ ताकि उस वसीयतनामे मे से दानो को कम कर दे।

लैपीडस : तो क्या आप लोग यही मिलेंगे ?

ऑक्टेवियस : या तो यही होंगे या फिर राजधानी मे।

[लैपीडस का प्रस्थान]

ऐन्टोनी : यह एक तुच्छ और व्यर्थ का व्यक्ति है। यह केवल इस योग्य है कि इधर से उधर सदेसे पहुँचाये। क्या यह उचित होगा कि रोमन साम्राज्य की विशाल शक्ति को जिन तीन व्यक्तियो के हाथ मे रखा जायेगा, उनमे से एक यह भी होगा ?

ऑक्टेवियस : तुमने ही तो उसे इस योग्य समझा है और तुमने ही

उसने यह भी राय ली कि अपने शत्रुओ को मृत्युदण्ड के लिये बनाई जाने वाली गुप्त सूची मे किस-किस का नाम लिखा जाये ?

**ऐन्टोनी :** ऑक्टेवियस ! मैंने तुमसे कही ज्यादा बरसातें देखी है। यद्यपि हम इस व्यक्ति को इसलिये सम्मान दे रहे हैं कि वह हमारे ऊपर होने वाले आक्रमण के भार को बँटा कर हमे हल्का कर सके, लेकिन यह याद रखो कि वह उसे ऐसे ही ढोयेगा जैसे कोई गधा सोने के ढेर को ढोते मे पसीने से लथपथ हो जाता है किंतु उसका लाभ नही उठा सकता। हम तो नकेल डाल कर उसे चाहे जिधर चलायेंगे। जब हम खजाने को अपने गतव्य पर पहुँचा चुकेंगे तब हम उसे कान हिला कर औरो के साथ चरने को छोड देंगे।

**ऑक्टेवियस** तुम जो चाहो करो लेकिन यह याद रखना कि वह एक तपा हुआ बहादुर सिपाही है।

**ऐन्टोनी .** और ऐसा ही मेरा घोडा भी है ऑक्टेवियस ! इसी लिये तो मैं उसे भी चारा-पानी देने की मेहनत करता हूँ। वह एक ऐसा जानवर है जिसे मैं लड़ना सिखाता हूँ सिर्फ इसी लिये कि चाहे जिधर वक्त पर मोड सकूँ, दौडा सकूँ, रोक सकूँ, घुमा सकूँ। और कुछ हद तक यही हाल लैपीडस का है। ऐसे ही उसे भी सिखाना चाहिये ताकि वह हमारा काम कर सके क्योकि बखुद वह अक्ल का मट्ठा है। उसकी समझ मे अपने आप तो कुछ नही आता। जिसे लोग पुराना कह कर छोड देते हैं उसे ही वह फैशन समझ कर स्वीकार कर लेता है। उसके बारे मे तो सिवाय इसके कि उसे अपने हाथ का एक पुतला समझ कर बातें की जाये और कोई बात नही करनी चाहिये। सुनो ऑक्टेवियस ! अब ज़रा बडी-बडी बातो पर गौर करो। ब्रूटस और कैशस सेना एकत्र

कर रहे हैं, अपनी शक्ति वढा रहे है। हमे अब सीधी करवाई करनी चाहिये। आओ, हम सब अपनी शक्ति को सगठित करे। सारे मित्र एक हो जाये, हमारे सारे सर्वश्रेष्ठ साधन तुरत प्रयोग मे लाये जाने चाहिये। हमे शीघ्र ही इस पर मंत्रणा करनी चाहिये कि किस तरह छिपे हुए खतरे जाहिर किये जाये और जाहिर खतरो का किस तरह जवाब दिया जाय।

**ऑक्टेवियस** . हमे यही करना चाहिये क्योकि हम खूँटे से बँधे हुए उस रीछ की तरह हैं जिसे उसके दुश्मन कुत्तो की तरह घेर लेते है। मुझे तो डर यह है कि वहुत-से जो वड़े भोले वन कर हमे देख कर मुस्कराते है वे ही लाखो आफते ढालने वाले न सावित हो।

[ प्रस्थान ]

## दृश्य २

[ सर्दिस के निकट सैन्यनिवेश में ब्रूटस के शिविर के सामने ]

[भेरी-निनाद। ब्रूटस, लूसिलियस लूशियस, तथा अन्य सिपाहियो का प्रवेश। टिटोनियस और पिन्डारस उनसे मिलते हुए वढते हैं।]

**ब्रूटस** : रुक जाओ।

**लूसिलियस** खडे होने की आज्ञा दो।

**ब्रूटस** : लूसिलियस! क्या कैशस पास ही है ?

**लूसिलियस** : हाँ निकट ही है। अपने स्वामी की ओर से तुम्हारा अभिवादन करने को पिन्डारस आया है।

**ब्रूटस** : पिन्डारस ! तुम्हारा स्वामी मुझे सद्भावनाएँ भेज रहा है। या तो उसमे कुछ परिवर्त्तन आ गया है या निम्न कोटि के पदाधिकारी इसके लिये उत्तरदायी है। जो हो। कुछ वाते हुई हैं

उससे यह भी राय ली कि अपने शत्रुओ को मृत्युदण्ड के लिये बनाई जाने वाली गुप्त सूची मे किस-किस का नाम लिखा जाये ?

**ऐन्टोनी** : ऑक्टेवियस ! मैंने तुमसे कही ज्यादा बरसातें देखी है। यद्यपि हम इस व्यक्ति को इसलिये सम्मान दे रहे हैं कि वह हमारे ऊपर होने वाले आक्रमण के भार को बँटा कर हमे हल्का कर सके, लेकिन यह याद रखो कि वह उसे ऐसे ही ढोयेगा जैसे कोई गधा सोने के ढेर को ढोते मे पसीने से लथपथ हो जाता है किंतु उसका लाभ नही उठा सकता। हम तो नकेल डाल कर उसे चाहे जिधर चलायेंगे। जब हम खजाने को अपने गतव्य पर पहुँचा चुकेंगे तब हम उसे कान हिला कर औरो के साथ चरने को छोड देंगे ।

**ऑक्टेवियस** तुम जो चाहो करो लेकिन यह याद रखना कि वह एक तपा हुआ बहादुर सिपाही है ।

**ऐन्टोनी** और ऐसा ही मेरा घोडा भी है ऑक्टेवियस ! इसी लिये तो मैं उसे भी चारा-पानी देने को मेहनत करता हूँ। वह एक ऐसा जानवर है जिसे मैं लडना सिखाता हूँ सिर्फ इसी लिये कि चाहे जिधर वक्त पर मोड सकूं, दौडा सकूं, रोक सकूँ, घुमा सकूँ। और कुछ हद तक यही हाल लैपीडस का है। ऐसे ही उसे भी सिखाना चाहिये ताकि वह हमारा काम कर सके क्योकि बखुद वह अक्ल का मट्ठा है। उसकी समझ मे अपने आप तो कुछ नही आता। जिसे लोग पुराना कह कर छोड देते हैं उसे ही वह फैशन समझ कर स्वीकार कर लेता है। उसके बारे मे तो सिवाय इसके कि उसे अपने हाथ का एक पुतला समझ कर बातें की जाये और कोई बात नही करनी चाहिये। सुनो ऑक्टेवियस ! अब ज़रा बडी-बडी बातों पर गौर करो। ब्रूटस और कैशस सेना एकत्र

कर रहे हैं, अपनी शक्ति वढा रहे है। हमे अब सीधी करवाई करनी चाहिये। आओ, हम सब अपनी शक्ति को सगठित करे। सारे मित्र एक हो जाये, हमारे सारे सर्वश्रेष्ठ साधन तुरत प्रयोग मे लाये जाने चाहियें। हमे शीघ्र ही इस पर मत्रणा करनी चाहिये कि किस तरह छिपे हुए खतरे जाहिर किये जाये और ज़ाहिर खतरो का किस तरह जवाव दिया जाय।

**ऑक्टेवियस** हमे यही करना चाहिये क्योकि हम खूँटे से वँधे हुए उस रीछ की तरह हैं जिसे उसके दुश्मन कुत्तो की तरह घेर लेते है। मुझे तो डर यह है कि वहुत-से जो वड़े भोले वन कर हमे देख कर मुस्कराते है वे ही लाखो आफते ढालने वाले न सावित हो।

[ प्रस्थान ]

## दृश्य २

[ सर्दिस के निकट सैन्यनिवेश में ब्रूटस के शिविर के सामने ]

[भेरी-निनाद। ब्रूटस, लूसिलियस लूशियस, तथा अन्य सिपाहियो का प्रवेश। टिटीनियस और पिन्डारस उनसे मिलते हुए बढते हं।]

**ब्रूटस :** रुक जाओ।

**लूसिलियस ·** खड़े होने की आज्ञा दो।

**ब्रूटस :** लूसिलियस ! क्या कैशस पास ही है ?

**लूसिलियस :** हाँ निकट ही है। अपने स्वामी की ओर से तुम्हारा अभिवादन करने को पिन्डारस आया है।

**ब्रूटस :** पिन्डारस ! तुम्हारा स्वामी मुझे सद्भावनाएँ भेज रहा है। या तो उसमे कुछ परिवर्त्तन आ गया है या निम्न कोटि के पदाविकारी इसके लिये उत्तरदायी है। जो हो। कुछ वाते हुई

या नही हुई हैं, कुछ भी हो, लेकिन जब वह आ ही गया है तो मुझे उत्तर मिलना ही चाहिये।

पिन्डारस : मुझे इसमे रत्तीभर भी सशय नही है कि मेरे वीर और उच्चहृदय स्वामी आपके सामने उच्च और वैसे ही निष्कपट सिद्ध होगे जैसे वे वास्तव मे है।

ब्रूटस इसमे कोई सदेह नही। लूसिलियस, सुनो! मुझे बताओ उसने तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जब तुम उससे मिलने गये थे?

लूसिलियस : उसका व्यवहार था तो बहुत सम्मानपूर्ण और सौजन्योचित था। किंतु उसमे न तो वह स्वतत्रता थी, न वह मैत्रीभाव ही था जैसा कि वह पहले दिखाया करता था।

ब्रूटस लूसिलियस! तुम्हारे कहने से तो यह लगता है कि पहले का स्नेह अब घटता जा रहा है। जब प्रेम कम होने लगता है तब वाह्याडबर निश्चित रूप से ऊपर छाने लगता है। गहरे मित्र अपने सीधे-सादे व्यवहार मे किसी प्रकार की चालबाजी नही दिखाते किंतु खोखले आदमी पहले तो जोशीले घोडे की तरह लम्बी चौकडी भर कर अपना वेग दिखाते हैं किंतु जब उनको ऐंड लगाई जाती है तब उनका सिर लटक जाता है और धोखेवाज घोडो की तरह परीक्षा मे असफल हो जाते हैं। क्या उसकी सेना भी आ रही है?

लूसिलियस आज रात तो वे सर्दिस मे ही बिताना चाहते हैं। वैसे अधिकाश सेना, जिसमें अश्वारोही वहुत है, कैशस के साथ आ गई है।

[नेपथ्य में सेना के चलने का शब्द]

ब्रूटस : सुनो! वह आ गया। नम्रता से उससे मिलने के लिये वढो।

[कंशस और उसकी सेना का प्रवेश]

कंशस : रुक जाओ !

ब्रूटस : रुक जाओ ! औरो से कहो ।

एक सैनिक : रुक जाओ !

दूसरा सैनिक : रुक जाओ !

तीसरा सैनिक : रुक जाओ !

कंशस : परम आदरणीय वधु ! तुमने मेरे साथ अन्याय किया है ।

ब्रूटस : आकाश के देवताओ ! मेरा न्याय करो ! जब मैं अपने शत्रुओ के साथ भी अन्याय नही करता, तो अपने एक बंधु के प्रति कैसे कर सकता हूँ ?

कंशस : ब्रूटस ! तुम्हारी यह भव्य आकृति तुम्हारे अन्यायो को ढँक लेती है और जब तक उन्हे करते हो

ब्रूटस : कंशस ! शात हो अपनी वेदना को शातिपूर्वक कहो। मै तुम्हे अच्छी तरह जानता हूँ। हम दोनों की सेनाएँ यहाँ उपस्थित है और हमे देख रही है । पारस्परिक प्रेम के अतिरिक्त हमें उनके सामने और कोई भाव प्रगट नही करना चाहिये । हमे लड़ना नही चाहिये । आज्ञा दो कि वे यहाँ से हट जायें । तब मेरे शिविर मे चल कर कंशस ! तुम अपने दु:ख को प्रगट करो । मैं तुम्हारी वात वही सुनूंगा ।

कंशस : पिन्डारस ! हमारे सेनानायको को आज्ञा दो कि वे अपने आधीन सैनिको को ले कर दूर हट जाये ।

ब्रूटस : लूसिलियस ! तुम भी यही करो । जब तक हम अपनी मत्रणा समाप्त न कर लें तब तक किसी को भी हमारे शिविर मे न आने देना । लूशियस और टिटीनियस मेरे द्वार पर पहरा दे ।

[प्रस्थान]

## दृश्य ३

[ब्रूटस का शिविर]

[ब्रूटस और कैशस का प्रवेश]

कैशस तुमने मेरे साथ जो अन्याय किया है वह इसी से प्रगट हो जायेगा। सर्दियनो से रिश्वत लेने के अपराध पर लूशियस पैला को तुमने अपमानित करके दण्डनीय ठहराया है। उसकी ओर मे प्रार्थना करते हुए मैने तुम्हे कई पत्र लिखे, मैं उस व्यक्ति को जानता था, किंतु तुमने उन पत्रो की उपेक्षा की।

ब्रूटस . ऐसे मामले के बारे मे लिख कर तो तुमने अपनी ही बुराई की।

कैशस लेकिन ऐसे समय मे यह भी ठीक नही है कि साधारण से साधारण अपराध पर तुम ऐसी राय दो।

ब्रूटस कैशस ! मुझे तुमसे कहना ही पडता है कि तुम पर भी रिश्वत लेने के अभियोग है। लोग कहते हैं कि तुम ऊँचे और जिम्मेदारी के पदो को ऐसे लोगो को बेच रहे हो जिनमे न कोई विशेष योग्यता है न विशेप गुण ही।

कैशस मै रिश्वत का लालची हूँ ? तुम जानते हो ब्रूटस कि मेरे दोस्त होने के नाते तुम मुझसे नाजायज फायदा उठा रहे हो ? यदि तुम्हारे अतिरिक्त कोई और ऐसी बात कहता तो मैं देवताओ की शपथ खा कर कहता हूँ, यही दो टुकडे कर देता।

ब्रूटस केवल तुम्हारे नाम का ही सबंध भ्रष्टाचार से लगा हुआ है इसीलिये अभी तक तुम दण्ड से बचे हुए हो !

कैशस . तुम दण्ड की बात कर रहे हो ?

ब्रूटस कैशस ! १५ मार्च का स्मरण करो और याद करो कि उस दिन क्या हुआ था ? क्या उस दिन न्याय के लिये ही महान जूलियस सीजर का रुधिर नही बहा था ? कौन ऐसा नीच था

जिसने नाम के अतिरिक्त किसी अन्य भावना की लिप्सा से उसके शरीर पर आघात किया था ! क्या डाकुओं का सहयोगी बन जाने के कारण सारे ससार के एक विख्यात और अग्रणी पुरुप जूलियस सीज़र को जिन लोगो ने मारा था, उन्ही मे से क्या एक ऐसा निकलेगा जिसकी उँगलियाँ रिश्वत के धन से गँदी हो जायेगी ? क्या वह हमारे महान आत्मसम्मान को, हमारे गौरव को मुट्ठीभर व्यर्थ का सुवर्ण ले कर बेच देगा ? यदि ऐसा है तो एक रोम का वीर निवासी होने की अपेक्षा मेरे लिये कही अच्छा होता कि मै एक कुत्ता होता और चद्रमा की ओर भौका करता !

कैशस : ब्रूटस ! मुझे उत्तेजित मत करो। मैं इसे नही सह सकता। मेरे अधिकारों को सीमाबद्ध करते समय तुम अपने आपको भूले जा रहे हो ! मैं एक सिपाही हूँ। मै एक तुमसे पुराना योद्धा हूं, समझौता करने के लिये मैं तुमसे अधिक अनुभवी और योग्य हूँ :

ब्रूटस : नही कैशस, तुम नही हो। यही काफी है।

कैशस : हूँ और निश्चय हूँ।

ब्रूटस : मैं कहता हूँ नही हो।

कैशस : मुझे और आवेश से न भरो। मैं अपने आपको भूल जाऊँगा। अपने जीवन की चिता करो। मुझे और मत उकसाओ।

ब्रूटस : चले जाओ ! नीच !

कैशस : क्या यह भी संभव है ?

ब्रूटस : तो सुन लो ! क्या मैं तुम्हारे क्रोध से विचलित हो जाऊँगा ? क्या कोई पागल मुझे घूरने लगेगा तो मैं डर जाऊँगा ?

कैशस : ओ देवताओ ! बोलो मेरे देवताओ ! क्या यह सब भी मुझे

सहना पडेगा ?

ब्रूटस : हाँ कैशस ! यही नही, अभी तो बहुत कुछ शेष है ! तब तक सहना होगा जब तक तुम्हारा गर्वी हृदय खड-खड नही हो जाये। जाओ ! अपना यह क्रोध अपने दासो को प्रदर्शित करो कि वे तुम्हारे आश्रित आतक से थर्रा उठें। क्या मैं भी तुमसे डरूँ ? क्या मैं भी तुम्हारा आदर करूँ ? क्या मैं भी तुम्हारे आक्रोश के सामने अपने घुटने टेक दूं ? देवताओ की शपथ ! अपना क्रोध, मैं कहता हूं, तुम्हे ही निगलना पडेगा, चाहे उससे तुम्हारा हृदय ही क्यो न विदीर्ण हो जाये ! और यही नही, तुम्हारे इस दीन क्रोध को देख कर मैं ठठा कर हँसा करूँगा, आनदविभोर हुआ करूँगा।

कैशस तो क्या इसका यह नतीजा निकलेगा ? यहाँ तक ?

ब्रूटस : यदि तुम समझते हो कि तुम मुझसे अच्छे योद्धा हो तो फिर इसका भी निर्णय हो जाने दो। अपने दभ को सत्य होने दो। मुझे भी इससे प्रसन्नता ही होगी। महान पुरुषो से कुछ सीखने मे मुझे सदा ही प्रसन्नता होती है।

कैशस . तुम मेरे साथ अन्याय कर रहे हो ब्रूटस ! तुम मेरे साथ अत्याचार कर रहे हो ! हर प्रकार से अन्याय कर रहे हो ! मैंने अवस्था मे बडा योद्धा कहा था, न कि तुमसे अच्छा ! क्या मैंने अच्छा कहा था ?

ब्रूटस : यदि तुमने कहा भी था तो भी मुझे कोई चिंता नही।

कैशस : जब सीज़र जीवित था तब उसमे भी मुझे इस प्रकार उत्तेजित करने का साहस नही था।

ब्रूटस . शात ! शात ! किंतु तुममे भी उसे इस प्रकार क्रुद्ध करने का साहस नही था।

कैशस : मुझमे साहस नही था ?

ब्रूटस : नही।

कैशस : क्या मै उसे उत्तेजित नही कर सकता था ?

ब्रूटस : मैं कहता हूँ सारे जीवन मे नही, क्योकि उस समय तुम्हे अपना जीवन प्रिय था।

कैशस . मेरे प्रेम का आधार ले कर बहुत कुछ अपनी ओर से कल्पन मत कर लो। मै ऐसा भी कर सकता हूँ जिससे भले ही मुझे वाद मे अत्यंत दु खी होना पडे।

ब्रूटस : तुमने ऐसा काम तो कर भी डाला है कैशस ! जिसके लि तुम्हे दु खी होना ही चाहिये। मैं तुम्हारी धमकियों से भयभी नही हो सकता। मैं ईमानदारी के हथियारों से इतना सज हुआ हूँ कि तुम्हारी धमकियाँ धीमी हवा की भाँति मेरे चारो ओ से निकल जाती है। मैं उनकी परवाह नही करता। मैंने तुम कुछ सुवर्ण मँगाया था परतु तुमने देने से मना कर दिया देवता जानते हैं, मैं किसानो की गाढी कमाई छीनने के जघन साधन की अपेक्षा अपने हृदय से परिश्रम करके अपने रक्त व एक-एक बूंद टपका कर ही धन एकत्र करना उचित समझ हूँ। मैंने तुमसे धन माँगा था कि अपने सैनिको का वेतन चु सकूँ, किंतु तुमने देने से मना कर दिया। क्या यह कैशस लिये उचित था ? क्या मैं भी कैस कैशस को ऐसा ही उत्त देता ? यदि मार्क्स ब्रूटस ऐसा लोलुप हो जाये कि अपने मि को देने के स्थान पर वह तुच्छ धन को कृपणता से सचित क लगे तो आकाश के देवताओ ! उस पर इतने भीषण वज्रप करो कि वह खड-खंड हो जाये।

कैशस : मैंने कभी मना नही किया।

ब्रूटस : तुमने किया था।

कैशस : कभी नही किया। वह व्यक्ति जिसने मेरी ओर से तुम्हे ऐसा उत्तर आ कर सुनाया वह निश्चय ही मूर्ख था। ब्रूटस ! तुमने मेरे हृदय को विदीर्ण कर दिया है। एक मित्र को अपने मित्र के अभाव और दोषो को सहन करना चाहिये, किंतु ब्रूटस ! तुम मेरी निर्बलताओ को इतना बड़ा करके दिखाते हो जितनी वे हैं भी नही।

ब्रूटस : जब तक तुमने स्वय ही अपनी निर्बलताओ को मेरे समक्ष ला कर उपस्थित नही किया, तब तक मैंने तो कुछ भी नही कहा।

कैशस : तुम मुझसे प्रेम नही करते।

ब्रूटस मैं तुम्हारे अपराधो को पसद नही करता।

कैशस · मित्र की आँख होती तो वह निर्बलता को देख भी नही पाती।

ब्रूटस : एक खुशामदी को तो वे दिखाई ही न देती चाहे वे देवताओ के महान और विशाल पर्वत से भी बडी क्यो न होती।

कैशस आओ ऐन्टोनी ! तरुण ऑक्टेवियस आओ ! केवल कैशस से ही अपना प्रतिशोध लो क्योकि कैशस का दिल इस दुनिया से अब भर गया है। जिनसे वह प्रेम करता है वे ही उससे घृणा करते हैं। उसका बधु उसको दबा रहा है, मानो वह उसका दास हो। उसके समस्त अपराधो की सूची बना कर रखी गई है। और उसके बधु ने उन्हे रट लिया है, बार-बार सुना-सुना कर उसके हृदय को वेध रहा है। आह ! क्या ही अच्छा होता कि रो-रो कर मैं अपनी चेतना को ही घुला-घुला कर बहा देता ! यह मेरा छुरा है, यह मेरी खुली हुई छाती है, इसके अदर प्लूटो[1] की

१ धन का देवता—कुबेर।

समस्त धनराशि से भी अधिक मूल्यवान, सुवर्ण से भी अधिक सपन्न और पूर्ण मेरा हृदय है। यदि तुम रोम के एक वीर निवासी हो तो इसको निकाल लो! मैं, जिसने तुम्हे सोना देना अस्वीकार कर दिया था, तुम्हे अपना हृदय देता हूँ। मारो! जैसे तुमने सीज़र को मारा था, क्योकि मै जानता हूँ कि जब तुम उससे अत्यत घृणा करते थे तब भी उसके प्रति तुम्हारे हृदय मे कैशस के प्रति होने वाले प्रेम की अपेक्षा कही अधिक प्रेम था।

ब्रूटस : अपने छुरे को म्यान मे रखो! जब तुम्हारी इच्छा होती है तभी तुम क्रुद्ध हो लेते हो। मनमानी करने की आदत तो तुम्हारे स्वभाव के कारण है, यह मैं जानता हूँ। मै सब कुछ सह लूंगा, भले ही तुम मुझे अपमानित कर लो। मैं एक भेड के मेमने की तरह नम्र हूँ। जो ऐसे ही क्रोध को ले कर चलता है जो हृदय मे छिपा रहता है परतु कभी-कभी चमक उठता है और वह भी तब जब चकमक की तरह रगड़ कर उसे बाहर निकलने को विवश किया जाता है। क्षणभर मे ही वह शात हो जाता है।

कैशस क्या दु खी और क्रुद्ध होने पर कैशस केवल ब्रूटस के उपहास और विनोद का ही साधन बन कर जीवित रह सकता है?

ब्रूटस : जब मैंने वह सब कहा था तब मैं भी क्रुद्ध हो गया था।

कैशस : क्या तुम इतना भर स्वीकार करते हो? तो मुझे अपना हाथ दो।

ब्रूटस और मेरा हृदय भी।

कैशस : आह ब्रूटस!

ब्रूटस : क्यो क्या हुआ?

कैशस : क्या तुम मुझे इतना भी प्यार नही करते कि मेरे इस क्रोध को ही सह लिया करो, और जानते हो कि ऐसा स्वभाव मैंने

अपनी माँ से पाया है।

ब्रूटस हाँ कैशस ! आज से जब कभी तुम ब्रूटस से झगडोगे, उस पर क्रोध करोगे, तो वह यही समझ कर तुम्हे छोड देगा कि तुम्हारी माता उसे फटकार रही हैं।

[नेपथ्य में कोलाहल]

**नेपथ्य में कवि :** मुझे सेनापतियो से मिलने के लिये जाने दो। उनमें कोई झगडा हो रहा है। उनका अकेला रहना ठीक नही।

**नेपथ्य में लूसिलियस** . तुम उन तक नही जा सकते।

**नेपथ्य में कवि** मुझे मृत्यु के अतिरिक्त कोई नही रोक सकता।

[कवि का प्रवेश। पीछे-पीछे लूसिलियस, टिटीनियस और लूशियस हैं।]

**कैशस :** क्यो ? क्या बात है ?

**कवि** तुम सेनापतियो ! तुम्हे धिक्कार है ! इसका क्या मतलब है ? एक दूसरे से प्रेम करो, एक दूसरे के मित्र बनो जैसा कि तुम जैसे आदमियो को करना चाहिये। मैं तुम दोनो से आयु मे अधिक हूँ, तुम्हे मेरी बात माननी चाहिये।

**कैशस** वाह-वाह ! इस निराशावादी ने कैसी भद्दी तुक मिलाई है।

**ब्रूटस :** ऐ मूर्ख ! निकल यहाँ से, बदमाश कही का।

**कैशस :** उसकी बात को सह लो ब्रूटस। यह तो उसका स्वभाव है।

**ब्रूटस :** उचित समय पर ही मै उसके हास्य को सह सकता हूँ, पर युद्धस्थलो मे ऐसे मूर्खों की आवश्यकता ही क्या है ? ऐसो को क्या साथी बनाना ?

**कैशस :** चलो-चलो, निकलो यहाँ से।

[कवि का प्रस्थान]

**ब्रूटस** लूसिलियस ! टिटीनियस ! सेनानायको को आज्ञा दो कि आज रात को सेना का पडाव यही डालने का प्रबंध करें।

कैशस : और मेसाला को ले कर तुम यहीं आ जाओ। तुरत !

[लूसिलियस और टिटीनियस का प्रस्थान]

ब्रूटस : लूशियस ! मदिरा का चषक[1] लाओ।

[लूशियस का प्रस्थान]

कैशस : मुझे यह आशा नहीं थी कि तुम इतने क्रुद्ध हो उठोगे।

ब्रूटस : ओह कैशस ! मुझे अपनी ही अनेक व्यथाएँ हैं।

कैशस : यदि तुम इस प्रकार की आकस्मिक घटनाओं से विचलित हो उठा करोगे तो फिर बताओ तुमने अपने दार्शनिक ज्ञान का प्रयोग कहाँ किया ?

ब्रूटस : मुझसे अधिक दुःखी इस संसार में और कोई न होगा। पोर्शिया का देहांत हो गया है।

कैशस : हाय ! पोर्शिया !

ब्रूटस : वह अब नहीं रही।

कैशस : हाय ! तुम्हें इतना क्रुद्ध करने के बदले में मैं मर ही क्यों न गया। उफ ! कैसा निस्सहाय और व्याकुल कर देने वाला आघात है ? क्या रोग था ऐसा उसे ?

ब्रूटस : मेरी अनुपस्थिति से अधीर हो कर वह व्यथित हो गई। उसे इसकी भी बड़ी वेदना हुई कि ऑक्टेवियस ने मार्क ऐन्टोनी के साथ एक विशाल सेना एकत्र कर ली है। उसकी मृत्यु के साथ ही वह समाचार भी मिला। और इस सबके कारण वह अपनी चेतना खो बैठी और सेवकों की अनुपस्थिति में वह जलता हुआ अंगारा उठाकर निगल गई।

कैशस : और फिर मर गई ?

ब्रूटस : यही तो।

---

१. पात्र।

केशस : आह मृत्युञ्जय देवताओ !

[लूशियस का मदिरा तथा मोमबत्तियों के साथ प्रवेश]

ब्रूटस : उसके बारे में और बाते न करो—मुझे मदिरा का चषक दो ''कैशस मैं इसमे सारी कटुता को डुबा देना चाहता हूँ।

[पीता है।]

कैशस : मेरा हृदय भी उस महान प्रतिज्ञा के लिये प्यासा है। ढाल ! लूशियस ! इतनी ढाल कि प्याला ऊपर तक उफन आये और मदिरा बहने लगे। मैं जितनी पियूँगा उतना ब्रूटस का प्रेम तो मुझे नही मिलेगा।

[पीता है।]

ब्रूटस : भीतर आ जाओ टिटीनियस !

[लूशियस का प्रस्थान। टिटीनियस और मेसाला का प्रवेश]

ब्रूटस स्वागत प्रिय मेसाला ! अब हम लोग इस बत्ती के पास बैठे और अपनी ज़रूरत के सवालो पर विचार करें।

कैशस : पोर्शिया ! क्या तू चली गई।

ब्रूटस : मैं तुमसे अनुनय करता हूँ कि पोर्शिया के बारे मे और याद न दिलाओ। मेसाला ! मुझे यहाँ पत्र मिले हैं कि मार्क ऐन्टोनी और तरुण ऑक्टेवियस एक विशाल सेना ले कर हम पर आक्रमण के लिये आ रहे हैं। वे लोग फिलिपी की ओर बढ रहे हैं।

मेसाला . यही भाव लिये कुछ पत्र मुझे भी मिले हैं।

ब्रूटस और क्या लिखा है ?

मेसाला : ऑक्टेवियस, ऐन्टोनी और लैपीडस ने राज्य के अपराधी घोषित करके सिनेट के १०० सदस्यो को मरवा डाला है।

ब्रूटस : तो हमारे पत्र परस्पर नही मिलते ? मेरे मे तो सिनेट के ७० सदस्य लिखे है और वे अपराधी घोषित किये गये थे। उनमे

सिसरो भी एक है।

कैशस : सिसरो भी एक है!

मेसाला : उस दण्ड की आज्ञा मे सिसरो भी मारा गया है। मेरे प्रभु! क्या आप अपनी पत्नी से पत्र प्राप्त करते रहे है?

ब्रूटस नही मेसाला!

मेसाला : क्या आपके पत्रो मे उसके विपय मे कुछ भी नही लिखा है?

ब्रूटस : कुछ भी नही मेसाला।

मेसाला . क्या अजीव वात है।

ब्रूटस : क्यो पूछते हो? क्या उसके वारे मे तुम्हारे पत्र मे कुछ लिखा है?

मेसाला . नही मेरे प्रभु!

ब्रूटस : तुम रोम के निवासी हो मेसाला। सच वताओ।

मेसाला : तो फिर एक रोम-निवासी की भाँति ही यह सत्य सुनने को तत्पर हो जाये। वह निश्चय ही मर गई है और वह भी आश्चर्य्य-जनक रीति से।

ब्रूटस : पोर्शिया! विदा! मेसाला! हमे भी तो मरना है। यह सोच कर कि पोर्शिया को एक दिन मरना ही था, मैं उसकी मृत्यु के दु.ख को धैर्य्य के साथ सहन किये लेता हूँ।

मेसाला : महान व्यक्ति महान हानियो को इसी प्रकार सहन कर लेते है।

कैशस : मेरा भी विचार इस विषय मे ऐसा ही है किंतु मेरी प्रकृति तो मुझे इसे सहने नही देती?

ब्रूटस : जीवितो के विपय मे विचार करे। क्या सोचते हो? क्या तुरत फिलिपी की ओर वढना चाहिये?

कैशस : मै इसे अच्छा नही समझता।

है ! क्लॉडियस तथा मेरे कुछ और आदमियो को बुला ताकि ये मेरे शिविर मे गद्दो पर सोवें ।

लूशियस वारो और क्लॉडियस !

[वारो और क्लॉडियस का प्रवेश]

वारो : क्या स्वामी बुलाते हैं ?

ब्रूटस · मैं चाहता हूँ कि आप लोग मेरे ही डेरे मे सो रहे । हो सकता है कि किसी काम के लिये मुझे तुम्हे अपने बधु कैशस के पास भेजने के लिये शीघ्र जगाना पडे !

वारो : बहुत अच्छा । हम सेवा मे उपस्थित हैं । जब आज्ञा देगे प्रतीक्षा करेंगे ।

ब्रूटस नही मित्रो । यह ठीक नही होगा । आप लोग सोवें । हो सकता है, मुझे किसी को जगाने की जरूरत ही न पडे । देख लूशियस ! जिस किताब की मुझे जरूरत थी न ? वह यहाँ है । मैंने इसे चोगे की जेब मे रख दिया था ।

[वारो और क्लॉडियस लेटते हैं ।]

लूशियस श्रीमान् मुझे तो पूरा विश्वास था कि आपने उसे मुझे नही दिया था ।

ब्रूटस : हाँ मुझमे ही भूल हुई । मेरे अच्छे लडके, मै बडा भुलक्कड हूँ । क्या तू थोडी देर अपनी उनीदी पलको का झपकना किसी तरह रोक कर मुझे अपना बाजा बजा कर सुना सकता है ?

लूशियस जिसमे मेरे स्वामी को प्रसन्नता मिले !

ब्रूटस मुझे सुख मिलता है रे बालक ! कष्ट दे रहा हूँ तुझे, पर तुझे भी तो यह अच्छा लगता है ।

लूशियस यह तो मेरा कर्त्तव्य है श्रीमान् !

ब्रूटस : तेरी शक्ति से अधिक कार्य्य मैं तुझसे नही लेना चाहता ।

मैं जानता हूँ नवयुवको को आवश्यकता होती है ।

लूशियस : मेरे स्वामी । मैं तो सो चुका हूँ ।

ब्रूटस : यह अच्छा किया । और तू फिर भी तो सोयेगा, मैं अब तुझसे अधिक प्रतीक्षा नहीं कराऊँगा, यदि मैं जीवित रहा तो सदैव तेरे लिये कृपालु रहूँगा ।

[संगीत और गान]

कैसी उनीदी तान है ! ओ हत्यारी नीद ! तूने अपना भारी दण्ड लूशियस के सिर पर रख दिया है ? वह तुझे गीत सुना रहा था । अच्छी बात है । शैतान सो जा । मै तुझे इतनी देर जगा कर और कष्ट न दूंगा । कही हिलने मे तू बाजे को न तोड डाले । ला मैं ले लूँ तुझसे । मेरे अच्छे बालक ! सो जा । देखूँ, देखूँ तो, जहाँ मैंने पढना छोडा था, कही पृष्ठ तो नही पलट गया ? अरे यह रहा ।

[बैठता है । सीजर के प्रेत का प्रवेश]

अरे यह बत्ती कितनी धुंधली है! अरे! यह कौन आ रहा है? शायद यह मेरे नेत्रो की निर्बलता है कि मुझे यह भयानक आकृति दिखाई दे रही है। यह तो मेरी ओर ही आ रही है !...क्या है तू...सचमुच...कुछ है...तू कोई देवता है या देवदूत...या कोई शैतान...कि मेरा लहू जमा जा रहा है...और रोंगटे खड़े हो रहे हैं...कौन है तू...बोल...

प्रेत : ब्रूटस, मै तेरी दुरात्मा हूँ ।

ब्रूटस : क्या चाहते हो तुम......

प्रेत : तुझे यह बताना कि तू मुझे फिलिपी मे मिलेगा ।

ब्रूटस : अच्छा ! तब तो मै फिर तुझे देखूँगा ?

प्रेत : हाँ फिलिपी मे ।

ब्रूटस : अच्छी बात है, मैं तुझसे फिलिपी मे फिर मिलूँगा

[प्रेत अंतर्धान होता है।]

जब मुझे साहस आया वह लुप्त हो गयी! ओ दुष्ट आत्मा! मैं तुझसे और बात करना चाहता हूँ। लडके! लूशियस! वारो! क्लॉडियस! अरे! जागो! क्लॉडियस।

लूशियस : मेरे स्वामी, बाजे के तार बिगड गये हैं।

ब्रूटस : वह समझ रहा है कि अब भी वह अपना बाजा बजा रहा है। जाग लूशियस! जाग!

लूशियस : प्रभु!

ब्रूटस : लूशियस! क्या तूने सुपना देखा था कि तू इस तरह चिल्ला उठा!

लूशियस पता नही स्वामी, मैं क्यो पुकार उठा था! क्या मैं चिल्लाया था?

ब्रूटस हाँ! क्या तूने कुछ देखा था?

लूशियस नही प्रभु! कुछ नही।

ब्रूटस तो सो जा फिर! लूशियस सो जा। क्लॉडियस! वारो! जाग! जाग!

वारो मेरे प्रभु!

क्लॉडियस स्वामी!

ब्रूटस तुम लोग नीद मे इस तरह क्यो चिल्ला उठे थे?

वारो-क्लॉडियस . श्रीमान्! हम क्या चिल्लाये थे?

ब्रूटस : हाँ। क्या तुमने कुछ देखा था?

वारो . नही स्वामी, मैंने कुछ नही देखा।

क्लॉडियस . न मैंने ही कुछ देखा।

ब्रूटस : जाओ! बंधु कैशस को संवाद दो कि अपनी सेना ले कर वह

मेरी सेना के चलने के पहले ही प्रातःकाल चल पड़े। हम पीछे आयेंगे।

वारो-क्लॉडियस · जो आज्ञा स्वामी!

[प्रस्थान]

# पांचवां अंक

## दृश्य १

[फिलिपी के मैदान]

[ऑक्टेवियस, ऐन्टोनी और उनकी सेना का प्रवेश]

**ऑक्टेवियस :** ऐन्टोनी ! हमारी आशाएँ अब पूर्ण हुई ! तुमने कहा था कि शत्रु नीचे नही आयेगा और पहाडी पर ही जमा रहेगा। ऐसा नही हुआ ! उनकी सेना निकट ही है। उनका इरादा फिलिपी मे ही हम पर आक्रमण करने का है। और पहली चोट वे ही करना चाहते है !

**ऐन्टोनी** हिश ! मैं उनके मन की बात जानता हूँ। मुझे मालूम है कि यहाँ हमसे क्यो लडना चाहते है। उन्होने अन्य स्थान भी देखे होगे, पर वे भयानक वीरत्त्व दिखाने यहाँ आ रहे हैं, समझते है कि हम डर जायेंगे। उनमे हिम्मत है ही कहाँ ?

[चर का प्रवेश]

**चर** . सेनानायको ! तत्पर हो जायें। शत्रु भीषण सेना लिये बढा आ रहा है। उनका रक्त ध्वज युद्ध की सूचना देता हुआ फहरा रहा है। तुरत कुछ निश्चय होना चाहिये।

**ऐन्टोनी** · ऑक्टेवियस ! समतल भूमि की बाई ओर अपनी सेना को धीरे-धीरे ले जाओ !

**ऑक्टेवियस** मैं दाई ओर हूँ। तुम बाई तरफ रहना।

**ऐन्टोनी** · ऐसी परिस्थिति मे भी मेरा विरोध क्यो कर रहे हो ?

**ऑक्टेवियस** विरोध नही कर रहा हूँ। परन्तु मै ऐसा ही करूँगा।

[सेना का मार्च-प्रस्थान]

[भेरीनाद। ब्रूटस, कैशस, लूसिलियस, टिटीनियस, मेसाला तथा अन्यो के साथ सेना का प्रवेश]

**ब्रूटस** : वे लोग खडे हुए हैं। शायद कुछ मत्रणा करेंगे।

**कैशस** : टिटीनियस! तुम यही रहो। हम आगे जा कर विचार करेंगे।

**ऑक्टेवियस** : मार्क ऐन्टोनी! क्या हम युद्ध घोषित कर दें?

**ऐन्टोनी** : नही सीज़र! हम उनके आक्रमण का उत्तर देंगे। आगे वढो! सेनापति हमसे कुछ बातें करना चाहते है।

**ऑक्टेवियस** · आज्ञा मिलने तक कोई न हिले।

**ब्रूटस** : मेरे देशबधुओ! क्या युद्ध से पूर्व बाते करना उचित होगा?

**ऑक्टेवियस** : इसलिये नही कि हम तुम्हारी भाँति वातो को चाहते हैं।

**ब्रूटस** : ऑक्टेवियस! अच्छे शब्द बुरे आघातो से कही श्रेयस्कर हैं!

**ऐन्टोनी** : किंतु ब्रूटस! तुम्हारे तो आघातो मे सुदर शब्द भरे होते है। याद करो जव तुमने सीज़र के हृदय को वेधा था तव ज़ोर से चिल्लाये थे—जय! सीजर चिरजीवी हो!

**कैशस** : ऐन्टोनी! तुम्हारे आघात कैसे हैं यह तो हमे अभी जानना वाकी है, किंतु इतना निश्चित है कि तुम्हारे शब्दो की मिठास मधुमक्खियो का शहद छीने लेती है!

**ऐन्टोनी** : पर उनका डक तो नही होता!

**ब्रूटस** हाँ-हाँ, तुमने तो उन मक्खियो का गुजन भी छीन लिया है ऐन्टोनी! और अव डक मारने के पहले गुजन सुना रहे हो!

**ऐन्टोनी** : लेकिन कमीनो! तुम तो यह भी नही करते! एक-एक करके जव तुम्हारे छुरे सीजर के शरीर मे गड़े थे तव तुमने उसे पहले से सावधान तो नही किया था! वदरो की तरह

दांत निकालते हुए, कुत्तो की तरह जीभ लटकाते हुए, गुलामो की तरह झुकते हुए, सीज़र के पांव चूम रहे थे तुम जब उस कुत्ते, कमीने कास्का ने पीछे से सीज़र की गर्दन पर छुरा मारा था। नीच ! खुशामदियो !

**कैशस :** खुशामदियो ! देखो ब्रूटस ! धन्य हो तुम, यदि आज कैशस का अधिकार चलता तो इस जीभ ने आज इतनी हिम्मत नही की होती ।

**ऑक्टेवियस :** आओ ! मतलब की बात करो । अगर बातें करने से पसीना आता हो तो शीघ्र ही यह रक्त की बूदें बन जायेगा । मैं षड्यन्त्रकारियो के विरुद्ध खड्ग उठाता हूँ ! जानते हो यह म्यान मे कब लौटेगा ? तब तक नही जब तक सीज़र के तेतीस मे से हर एक घाव का वदला नही ले लिया जाता ! तब तक नही जव तक फिर एक नया सीज़र नही खडा हो जाता जिसे काटने के लिये फिर देशद्रोहियो के खड्ग रुधिर से भीग जायेंगे ! !

**ब्रूटस :** सीज़र ! यदि तुम्हे देशद्रोहियो के हाथो से ही मरना वदा था तो तुम्हे उन्हे अपने साथ ही लाना होगा !

**ऑक्टेवियस .** मैं भी यही आशा करता हूँ । मै ब्रूटस की तलवार से मरने को पैदा नही हुआ हूँ ।

**ब्रूटस** अरे ! तू अपने कुल मे सर्वोत्तम है किंतु मेरे खड्ग से मृत्यु प्राप्त करने से अधिक सम्माननीय तेरे लिये और कुछ नही है ।

**कैशस :** मूर्ख लडका है यह । इस सम्मान के लिये उपयुक्त नही क्योंकि यह तो एक विलासी और नर्त्तक[1] से मिल गया है ।

**ऐन्टोनी :** कैशस वैसा ही कुटिल है !

---

१ Masker—मुख पर नकली चेहरा चढाने वाला । जैसे रामधारी होता है । अपमानजनक शब्द ।

**ऑक्टेवियस :** बढ़ो ऐन्टोनी । आओ ! देशद्रोहियो ! हम तुम्हे चुनौती देते है । यदि तुममे आज लडने का साहस है तो युद्धभूमि मे आओ ! आज नही तो जब चाहो तब आ सकते हो !

[ऑक्टेवियस, ऐन्टोनी तथा उनकी सेना का प्रस्थान]

**कैशस :** तूफान ! टूट पड ! लहरो ! प्रचंड स्पर्धा से उठो ! सकट आ गया है । नाव को तूफान मे खेना है ।

**ब्रूटस :** लूसिलियस ! सुनो !

**लूसिलियस** (निकट आ कर) प्रभु !

[अलग परस्पर बातें करते है ।]

**कैशस :** मेसाला !

**मेसाला .** (बढ कर) आज्ञा मेरे सेनापति !

**कैशस** मेसाला ! आज मेरा जन्मदिन है । आज ही मैं पैदा हुआ था । मुझे अपना हाथ दो मेसाला ! और मेरे साक्षी बनो कि अपनी इच्छा के विरुद्ध पोम्पी की भाँति मुझे भी अपनी स्वतत्रता को युद्ध मे झोकना पड़ रहा है । तुम जानते हो कि मैं तो ऐपोक्यूरस के दार्शनिक सिद्धांतो को मानता हूँ, किंतु मुझे अब अपने विचार बदलने पड रहे है । कुछ-कुछ शकुन-अपशकुनो मे विश्वास होने लगा है । जब हम सर्दिस से चले थे तब हमारे चलते ही दो विशाल ईगल पक्षी झपटे थे और हमारे सैनिकों के हाथों को कुरेद-कुरेद कर खाने लगे थे । फिलिपी तक तो वे हमारे साथ थे पर न जाने यहाँ से कहाँ चले गये ! उनके बदले कौए, गिद्ध, और चीलें हमारे ऊपर मँडरा रही हैं, हमें झुक-झुक कर देख रही है, मानो हम उनके शिकार हो । उनकी छाया कैसी भयानक चँदोवे-सी दिख रही है जिसके नीचे हमारी सेना ऐसी पड़ी है जैसे हम सबका अवश्यम्भावी नाश हो जायेगा!

मेसाला : ऐसा विश्वास मत करो ।
कैशस मै कुछ-कुछ ही ऐसा मानता हूँ क्योकि वैसे मेरी आत्मा स्वस्थ है और हर तरह के सकट झेलने के लिये सतत तत्पर हूँ।
ब्रूटस लूसिलियस ! यही लगता है ।
कैशस वीर और महान ब्रूटस ! देवता करे कि हम जितने मित्र हैं उतने ही वृद्ध होने पर शातिकाल मे भी एक दूसरे के प्रेमी बने रहे । किंतु मनुष्य के भविष्य के कार्य्य-कलाप सदैव अज्ञात होते हैं, अत यदि कही हमारा सर्वनाश हो जाये तो हम क्या करें ? उस हालत मे क्या यह हमारी अतिम बातचीत है ? बताओ तब तुम क्या करोगे ?
ब्रूटस उन विचारो के नियमानुसार जिनसे कि मैंने आत्महत्या कर लेने पर केटो को दोषी ठहराया था, मैं उन्ही महान शक्तियो के कार्य्यों की धैर्य्य से प्रतीक्षा करूँगा जो कि ऊपर से हम पर शासन कर रही है। भविष्य मे क्या होने वाला है इस भय से मैं आत्मघात नही करूँगा, क्योकि ऐसा करना तो कायरता है ।
कैशस : यदि हम इस युद्ध मे पराजित हो जायें तो क्या तुम इससे सतुष्ट हो जाओगे कि वे लोग विजयोन्मत्त हो कर तुम्हे रोम की सडको पर बदी के रूप मे घुमावें ?
ब्रूटस नही कैशस नही ! रोम के वीर निवासी ! ऐसा मत सोचो ! कि ब्रूटस एक दास की भाँति बंध कर रोम जायेगा । वह कही अधिक विशाल हृदयवाला है । किंतु यही आज का दिन यह निश्चित करेगा कि १५ मार्च को जो कार्य्य प्रारभ किया गया था वह चलता है कि समाप्त होता है । यह भी निश्चय हो जायेगा कि हम फिर मिल सकेंगे या नही । अत आज विदाई स्वीकार करो । कैशस ! सदा के लिये विदा है । यदि हम फिर

मिल सकेंगे तो आनदोत्सव मनायेगे और यदि नही तो फिर यह विदाई ही अल है।

**कैशस :** ब्रूटस ! बिदा ! सदा के लिये विदा ! यदि हम फिर मिलेगे तो प्रसन्नता से हँसेगे और यदि नही मिले तो कोई बात नही। यह विदाई ही श्लाघ्य है।

**ब्रूटस :** तो आओ, वढे चलो। कितना अच्छा होता यदि युद्ध के पूर्व ही इसका परिणाम ज्ञात हो जाता। किंतु यही सोचना पर्य्याप्त है कि दिन भी समाप्त होगा और परिणाम भी विदित ही होगा। आओ, आओ ! आगे बढो !

[प्रस्थान]

## दृश्य २

[फिलिपी के मैदान]

[युद्धस्थल]

[युद्धनाद। ब्रूटस और मेसाला का प्रवेश]

**ब्रूटस :** तुरत अश्वारूढ हो जाओ मेसाला ! और इन पत्रों को सेना मे दूसरी ओर दे आओ !

[युद्धनाद वढता है।]

उनसे कहो तुरत आक्रमण कर दे क्योकि ऑक्टेवियस के सैन्यपक्ष मे मुझे उतना उत्साह दिखाई नही देता। एक जोर का धक्का उन्हे उखाड़ देगा। घोडा दौडाओ मेसाला। तुरत जाओ। उनसे कहो एकदम टूट पड़े।

[प्रस्थान]

## दृश्य ३

[युद्धभूमि का अन्य भाग]

[ युद्धनाद। कैशस और टिटीनियस का प्रवेश ]

**कैशस :** अरे देखो टिटीनियस! देखो मेरे कायर सैनिक कैसे भाग रहे हैं। मैं अपने ही आदमियों का दुश्मन हो गया हूँ? मेरा ध्वजवाह ही भाग रहा था। मैंने कायर को मार डाला और उससे ध्वज ले लिया।

**टिटीनियस** अरे कैशस! ब्रूटस ने बहुत जल्दी कर दी। उसने ज्योंही ऑक्टेवियस को ज़रा दबाया, बहुत प्रसन्न हो उठा। उसके सैनिक लूटने में लग गये और इधर हमे ऐन्टोनी ने घेर लिया है।

[पिन्डारस का प्रवेश]

**पिन्डारस** मेरे स्वामी! भागिये! तुरत भागिये! मार्क ऐन्टोनी आपके शिविर में घुस गया है। वीर कैशस, जितनी जल्दी भागा जा सके भागिये!

**कैशस :** यह पहाडी बहुत दूर है। क्या वही मेरे तम्बू हैं जिनमे आग लग रही है!

**टिटीनियस :** हाँ श्रीमान्। वही हैं।

**कैशस :** टिटीनियस यदि तुम मुझे चाहते हो तो मेरे घोडे पर चढ कर वायु-वेग से जाओ और सूचना लाओ कि वे सैनिक हमारे मित्र है या शत्रु!

**टिटीनियस** अभी लीजिये स्वामी! तुरत आता हूँ।

[प्रस्थान]

**कैशस** पिन्डारस, तुम इस पहाडी पर ऊँचे चढ जाओ। मेरी आँखे कुछ कमज़ोर हैं। तुम टिटीनियस को देखो और बताओ युद्ध-स्थल मे क्या हो रहा है।

[उसका पर्वतारोहण]

आज ही के दिन मेरा जन्म हुआ था और अन्त समय भी आ गया। आज ही मेरे जीवन का अन्त होगा। कहो ! क्या समाचार है ?

पिन्डारस : (ऊपर से) आह मेरे स्वामी !

कैशस : क्या बात है ?

पिन्डारस : टिटीनियस घिर गया है और घुडसवार उसका तेजी से पीछा कर रहे है। वह भी भाग रहा है। वे उसके पास पहुँच गये। कुछ घोड़ो से उतर रहे हैं। वह भी घोड़े से कूद पड़ा है। वह पकडा गया ! (कोलाहल) हाय ! सुनिये ! वे जय-ध्वनि कर रहे हैं।

कैशस और मत देखो ! नीचे आ जाओ। हाय मै कितना कायर हूँ कि अभी तक जीवित हूँ कि मेरा इतना अच्छा मित्र भी पकड लिया गया।

[पिन्डारस उतरता है।]

कैशस : इधर आओ पिन्डारस ! पार्थिया मे मैने तुम्हे बदी बनाया था। और तुम्हे जीवन-दान देते समय तुमसे शपथ ली थी कि जो भी काम मैं कहूँगा तुम वही करोगे ! आओ ! और अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करो ! अब से तुम एक स्वतत्र नागरिक हो। यह अच्छी तलवार लो जो एक दिन सीजर के शरीर मे घुसी थी। इसे लो। मुझसे तर्क मत करो। पकड़ो, इसकी मूंठ पकडो। और जब तुम अपनी आंखे ढँक लो, जैसे मैंने ढँक ली हैं, इसे मेरे वक्ष मे घुसा दो।

[पिन्डारस उसके तलवार मारता है।]

कैशस : सीजर ! जिस तलवार से तू मारा गया था, उसी से तेरा

प्रतिशोध ले लिया गया ।

[मृत्यु]

**पिन्डारस :** तो मैं अब स्वतन्त्र हूँ । यदि मैं चाहता तो भी स्वेच्छा से तो यह कार्य्य नही कर पाता । कैशस ! इस देश से पिन्डारस अब इतनी दूर भाग जायेगा कि कभी भी रोम-निवासी उसका पता नही लगा पायेंगे ।

[प्रस्थान]

[टिटीनियस और मेसाला का प्रवेश]

**मेसाला** कैसा परिवर्त्तन हो रहा है । उधर वीर ब्रूटस ने ऑक्टेवियस को हराया है, इधर ऐन्टोनी ने कैशस को पराजित कर दिया है ।

**टिटीनियस :** इस समाचार से कैशस को वडी सात्वना मिलेगी ।

**मेसाला :** तुमने उन्हे कहाँ छोडा था ।

**टिटीनियस :** इस पहाडी पर मैंने उन्हे वहुत ही निराश अवस्था मे उनके पास पिन्डारस के साथ वहाँ छोडा था ।

**मेसाला** क्या वे ही तो पृथ्वी पर नही लेटे हैं ?

**टिटीनियस** · हाय मेरे देवताओ ! वे तो जीवित-से नही लगते !

**मेसाला :** क्या वे वही हैं ?

**टिटीनियस :** नही हैं नही, थे कहो ! अव कैशस नही रहे मेसाला ! ओ डूवते हुए सूरज ! जैसे तू आज सध्या मे अपनी आरक्त किरणो मे खोया जा रहा है, ऐसे ही अपने ही रक्त मे कैशस का दिन भी छिप गया है । रोम का सूर्य्य अस्त हो गया है । हमारा अवमर गया । मेघ घिरे हैं, ओस गिर रही है । सकट झूल रहे है । हमारा सव कुछ चला गया । मुझमें अविश्वास होने के कारण ही ऐसा हुआ है ।

मेसाला : किंतु यह तो अपनी सफलता के अविश्वास के कारण ही हुआ है। वेदना की संतान ओ घृणित त्रुटि ! तू क्यों मनुष्यों को वही दिखाती है जो कि उसमे होता नही ! ओ त्रुटि ! जन्म से अंत तक तू कभी सुखी जीवन व्यतीत नही करने देती ! तू तो अपनी जन्मदात्री माता को ही नष्ट कर देती है।

टिटीनियस : लेकिन पिन्डारस कहाँ है ? पिन्डारस ! पिन्डारस !

मेसाला : उसे ढूंढो टिटीनियस, मैं वीर ब्रूटस से मिलने जा रहा हूँ। उसे यह संवाद दे दूं। आह ! लोहे के भालों की तरह यह बात उसके हृदय को वेध डालेगी। विषबुझे तीर से भी उसे इतनी आपत्ति नही होगी जितनी इस समाचार से।

टिटीनियस : जल्दी करो मेसाला ! तब तक मैं पिन्डारस को खोजता हूँ।

[मेसाला का प्रस्थान]

वीर कैशस ! तूने मुझे क्यों भेज दिया ? वहाँ तो मुझे तेरे मित्र मिले थे ! क्या उन्ही ने मेरे सिर पर यह पुष्पमाल नही डाली ? उन्होने कहा था कि यह माला तुझे दे दूं ! क्या तूने उनका जयनाद नही सुना था ? हाय ! तूने सब कुछ गलत समझा ! ले ! अब इस माला को पहन ले ! तेरे ब्रूटस ने कहा था कि इसे तुझे दे दूँ। मैं तो उसकी आज्ञा का पालन करूँगा। आओ ब्रूटस ! इधर आ कर देखो। मैंने कैस कैशस को कैसा सम्मान दिया है ! देवताओ ! आज्ञा दो ! यह रोम-निवासी का कर्त्तव्य है ! आ ! कैशस के खड्ग ! और टिटीनियस के हृदय को टटोल उठ !

[आत्मघात करता है।]

[युद्धनाद। मेसाला का ब्रूटस, तरुण केटो, स्ट्रैटो, वोलुमनियस और लूसिलियस के साथ प्रवेश]

**ब्रूटस** : कहाँ है मेसाला ! कहाँ है उसका शरीर !

**मेसाला** : वह रहा । टिटीनियस दुःख मना रहा है ।

**ब्रूटस** : टिटीनियस का मुख ऊपर की ओर है ।

**केटो** : वह तो कत्ल हो गया है ।

**ब्रूटस** : ओ जूलियस सीजर ! तू अभी तक इतना शक्तिवान है ! तेरी आत्मा सर्वत्र विचरण कर रही है और हमारे खड्गो को हमारे ही शरीरो मे घुसेड रही है ।

[मंद युद्धनाद]

**केटो** : वीर टिटीनियस ! देखो ! इसने मृत कैशस को विजयहार पहनाया है ।

**ब्रूटस** : क्या ऐसे दो रोम-निवासी और भी जीवित हैं ? ओ अंतिम रोम-निवासियो ! तुम्हे विदा ! यह असभव है कि अब रोम मे तुम जैसी संतान जन्म ले । मित्रो, जो आँसू मैं बहा रहा हूँ, इस मृत व्यक्ति के लिये तो मुझे उनसे कही अधिक बहाने होगे । किंतु उसके लिये तो मुझे समय निकालना होगा । आओ, अब इसके शव को थैसोस भेज दें । इसका दाह-संस्कार हमारे शिविरो में उचित न होगा क्योकि उससे हमे असुविधा होगी । आओ लूसिलियस, आओ तरुण केटो, हम युद्धभूमि मे चले । लेब्रियो और फ्लेवियस युद्ध जारी रखो ! इस समय तीन बजे हैं और रात्रि से पूर्व ही हमे दुबारा लड कर भाग्य की परीक्षा करनी चाहिये ।

[प्रस्थान]

## दृश्य ४

[युद्धभूमि का अन्तस्थल]

[युद्धनाद। दोनो ओर के लडते हुए योद्धाओ का प्रवेश। फिर ब्रूटस, तरुण केटो, लूसिलियस तथा अन्यो का प्रवेश]

ब्रूटस : स्वदेशवासियो ! साहस रखो। गर्व से सिर उठाओ।

केटो : कौन ऐसा नीच है जो ऐसा नही करता ! मेरे साथ क चलेगा ? मैं अपना नाम युद्धभूमि मे घोषित करूँगा। सुनो ! मार्क्स केटो का पुत्र हूँ। मैं अत्याचारियो का शत्रु हूँ, मैं अ देश का हितचिंतक हूँ। सुनो ! मैं मार्क्स केटो का पुत्र हूँ।

[शत्रु पर आक्रमण करता है।]

ब्रूटस : और मैं ब्रूटस हूँ। मार्क्स ब्रूटस। मैं ब्रूटस ! स्वदेश-मित्र मुझे, ब्रूटस को, पहचानो !

[शत्रु पर आक्रमण करते हुए प्रस्थान। केटो घिर जाता है। गिरता है।

सिलियस : ओ तरुण और वीर केटो ! तुम युद्धभूमि मे गिर हो ! तुम भी टिटीनियस की भाँति वीरता से मरे हो और इ पिता केटो के सच्चे आदरणीय और योग्य पुत्र हो !

क सैनिक : या तो आयुध डाल दो या मार दूँगा।

ूसिलियस : मै यह ही समर्पण करता हूँ। मैं तुम्हे मुझे शीघ्र डालने के लिये यह धन देता हूँ। (देता है।) मैं ब्रूटस हूँ और मार कर गौरव के पात्र बनो।

क सैनिक : नही-नही। यह एक वीर बदी है।

सरा सैनिक : मारो मत। हटो-हटो ! जा कर एन्टोनी को सू दो कि ब्रूटस पकड़ा गया।

एक सैनिक मै जाता हूँ। लो सेनापति ही आ गये।

[एन्टोनी का प्रवेश]

ब्रूटस पकडा गया। मेरे स्वामी, ब्रूटस पकडा गया।

**ऐन्टोनी :** कहाँ है वह।

**लूसिलियस** ब्रूटस सुरक्षित है ऐन्टोनी! मैं तुझे विश्वास दिलाता हूँ कि ऐसा कोई शत्रु नही जो महान ब्रूटस को जीवित पकड सके। इस महान अपमान से स्वय देवता उसकी रक्षा करते हैं। जब भी तुम उसे जीवित या मृत पाओगे वह वैसा ही मिलेगा जैसा कि ब्रूटस को होना चाहिये।

**ऐन्टोनी** नही मित्रो! यह ब्रूटस नही है, किंतु मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि इसे पकड लेना भी कम मूल्य नही रखता। इसे सुरक्षित रखो। इससे भद्र और दयापूर्ण व्यवहार करना। ऐसे मनुष्यो का शत्रु की अपेक्षा मित्र होना मैं अधिक पसद करता। आगे बढो और जा कर देखो कि ब्रूटस जीवित है या मर गया है। ऑक्टेवियस के शिविर मे मुझे सूचना दो कि क्या परिस्थिति है।

[प्रस्थान]

## दृश्य ५

[युद्धभूमि का एक अन्य भाग]

[ब्रूटस, डार्डेनियस, क्लीटस, स्ट्रैटो और वोलम्नियस का प्रवेश]

**ब्रूटस :** आओ मेरे थोडे-से बचे हुए मित्रो! इस चट्टान पर आराम करो।

**क्लीटस** स्टैटीलियस ने प्रकाश विक्षेप किया था परतु वह लौट कर नही आया स्वामी! या तो वह पकडा गया, या मारा गया।

**ब्रूटस :** बैठ जाओ क्लीटस। मारना तो सहज है। एक रिवाज़ बन गया है। सुनो क्लीटस।

[कान में कुछ कहता है।]

क्लीटस : कौन मै ! स्वामी ! नही ससार में किसी मोल पर भी नही कर सकता मै ऐसा।

ब्रूटस : तो चुप रहो। बोलो मत।

क्लीटस : इससे तो मैं अपने को ही मार डालूंगा !

ब्रूटस : सुनो ! डार्डेनियस !

[कान में कहता है।]

डार्डेनियस : क्या मैं ऐसा काम करूंगा ?

क्लीटस : क्यो डार्डेनियस !

डार्डेनियस : हाँ क्लीटस।

क्लीटस · ब्रूटस ने ऐसी क्या कटु बात तुझसे कही ?

डेनियस : उसनेकहा कि उसे मै मार डालूँ। देखो। वह कुछ सोच रहा है।

क्लीटस : आह ! वह गौरवान्वित पात्र कितनी वेदना से भर गया है कि आंखों से पानी उमड कर निकल रहा है।

ब्रूटस : मेरे अच्छे वोलम्नियस ! यहाँ आ मेरी बात सुन !

वोलम्नियस : आज्ञा मेरे स्वामी !

ब्रूटस बात यह है वोलम्नियस, कि सीज़र का प्रेत मुझे रात मे दो बार दिख चुका है। एक बार सर्दिस मे, और एक बार कल फिलिपी की युद्धभूमि मे। मुझे लगता है मेरा समय आ गया है।

वोलम्नियस : नही स्वामी ! मुझे तो नही लगता।

ब्रूटस : नहीं वोलम्नियस ! मुझे निश्चय है कि मेरा अंत निकट आ गया है। तू तो देख ही रहा है कि क्या परिस्थिति है। हमारे शत्रुओं ने हमे पूर्ण रूप से हरा दिया है।

[युद्धनाद, मद्धिम]

अब हम गड्ढे के किनारे है। उसमे स्वय ही कूद पड़ना हमारे लिये श्रेयस्कर है न कि हम इसकी प्रतीक्षा मे बैठे रहे कि शत्रु आये और हमे उसमे धक्का दे। भोले वोलम्नियस! तुझे याद है। हम तुम साथ-साथ पाठशाला मे पढने जाया करते थे। उसी पुरातन स्नेह का स्मरण करके, मैं प्रार्थना करता हूँ, तू मेरी तलवार की मूँठ पकड कर रुका रह। मैं दौड कर इसकी धार पर उतरना चाहता हूँ।

**वोलम्नियस :** मेरे स्वामी! यह तो कोई मित्र का कर्त्तव्य नही है।

[ युद्धनाद कम होता है।]

**क्लीटस :** भागिये स्वामी! भागिये! यहाँ ठहरना उचित नही।

**ब्रूटस** तुम सबको विदा। तुमको, सबको। तुम्हे भी वोलम्नियस! स्ट्रैटो! तू अभी तक सोता ही रहा। तुझे भी बिदा! देश-बधुओ! मेरे हृदय मे इसकी बडी प्रसन्नता है कि मेरे सारे जीवन में कोई भी मुझे ऐसा साथी नही मिला, जिसने मुझे धोखा दिया हो। ऑक्टेवियस और मार्क ऐन्टोनी को इस कुटिल विजय से जो गौरव मिलेगा, उससे कही अधिक मुझे अपनी पराजय से मिल रहा है। अब तुम सबको विदा! ब्रूटस ने अपने अतिम शब्द कह दिये है। अधकार मेरी पलको पर झूल रहा है, मेरे अस्थिपिंजर ने जिस विश्राम-वेला को लाने के लिये इतना श्रम किया है, अब वह अनत विश्राम के उसी क्षण के निकट आ गया है।

[युद्धनाद। नेपथ्य में भागो! भागो! भागो!]

**क्लीटस :** भागिये, स्वामी! भागिये!

**ब्रूटस .** तू चल। मैं आता हूँ।

[क्लीटस, डार्डेनियस, और वोलम्नियस का प्रस्थान]

स्ट्रैटो, मै तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू अपने स्वामी का साथ न छोड़ना। तू सदैव ही मानवोचित वीरता से सपन्न रहा है। तूने सदैव जीवन में सम्मान ही प्राप्त किया है। ले मेरी तलवार पकड ले कि मै इस पर झपट पड़ूं। अपना मुंह उधर कर ले। स्ट्रैटो! कर सकेगा ऐसा?

**स्ट्रैटो :** पहले मुझे अपना हाथ पकड़ाओ। यह हमारी विदा है।

**ब्रूटस :** विदा मेरे अच्छे स्ट्रैटो।

[उसकी तलवार से कटता है।]

सीजर! अब शात हो जा। जितनी इच्छा से मै अपने को मार रहा हूँ, तुझे मारने की मुझे उससे आधी भी इच्छा न थी।

[मरता है।]

[युद्धनाद। पीछे लौटना। ऑक्टेवियस, ऐन्टोनी, मेसाला, लूसिलियस और उनकी सेना का प्रस्थान]

**ऑक्टेवियस :** वह कौन आदमी है?

**मेसाला :** मेरे स्वामी का आदमी है स्ट्रैटो! तेरा स्वामी कहाँ है?

**स्ट्रैटो :** वह उस बधन से मुक्त हो गया है मेसाला, जिसमे तुम बँधे हुए हो।

विजेता केवल उसे जला सकते हैं, क्योकि ब्रूटस ने अपने आपको मिटा दिया। उसकी मृत्यु का गौरव किसी और को नही मिल सकता।

**लूसिलियस :** किंतु ब्रूटस का शव मिलना चाहिये। ऐसा करके तुमने अच्छा ही किया ब्रूटस! मैं तुम्हारा अभिवादन करता हूँ कि तुमने अपने लूसिलियस के शब्दो को सत्य प्रमाणित कर दिया।

**ऑक्टेवियस :** जो ब्रूटस के सेवक थे मैं उन सबको अपनी सेवा में ले

सकता हूँ। (स्ट्रैटो से) क्या तू अपना शेष जीवन मेरी सेवा मे व्यतीत करेगा !

**स्ट्रैटो :** हाँ, यदि मेसाला चाहेगे कि मै आपके यहाँ सेवा करूँ।

**ऑक्टेवियस :** अच्छे मेसाला ! यही करो।

**मेसाला .** स्ट्रैटो ! मेरे स्वामी का निधन किस प्रकार हुआ ?

**स्ट्रैटो** मैंने तलवार पकड़ी और वे इस पर उतर गये।

**मेसाला** ऑक्टेवियस ! तो तुम इसे अपनी सेवा मे ले जाओ। इसी ने अत तक मेरे स्वामी की सेवा की है।

**ऐन्टोनी** उन सबमे यही सबसे वीर और गौरवमय रोम-निवासी था। इसके अतिरिक्त सारे षड्यत्रकारी महान सीज़र के प्रति ईर्ष्या रखते थे, एक यही था जो ईमानदारी से यह मानता था कि इसी मे सार्वजनिक लाभ था। इसी से यह उनसे मिला था। इसका जीवन सादा था और उसमे प्रकृति ने इस प्रकार तत्वो का सम्मिलन किया था कि वह सारे ससार से कह सकती है कि यह एक मनुष्य था !

**ऑक्टेवियस** इसके गुणो का ध्यान रखते हुए इसकी दाह-क्रिया का सस्कार सम्मान सहित करना चाहिये। एक वीर सैनिक की भाँति आज इसका शरीर मेरे ही शिविर मे रहेगा, और उसका सम्मान होगा। समस्त सेना को आज्ञा दो कि अब विश्राम किया जाये। चलो, तब तक हम विजय-श्री से प्राप्त गौरव को परस्पर वितरित करे और आनंदोत्सव मनायें।

[प्रस्थान]